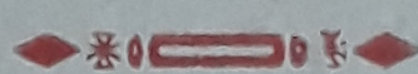
दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

['श्रीस्वाध्याय'के सातवेंवर्षकी चमत्कार-पूर्ण भविष्य-वाणियां]

इसमें पढ़िये



सं० २०१३ वि० सन् १९५६ ई० तक संसारमें घटित होनेवाली घटनाओंका दिग्दर्शन, आने वाला-
क्रांति-काल, विश्व युद्ध अवश्यम्भावी, हमारे भविष्यकी एक झलक, स्वतन्त्र-भारतकी जन्म-कुण्डली
और उसका विस्तृत भविष्य, श्री नेहरुजीकी जन्म-कुण्डलीका विचार, श्री महात्मा गांधीजीकी
जन्म-कुण्डली और महाप्रयाणसे पूर्व मारकेशकी सूचना, सं० २००५ का सविस्तर
राजनैतिक सामाजिक और व्यापारिक भविष्य, यूरोप अमेरिका और रूसका
भविष्य, ग्रहणका वैज्ञानिक विवेचन—सूर्य चन्द्रमा राहु और ग्रहण क्या
वस्तु है ? इनसे हमारा क्या सम्बन्ध है ? ग्रहण वेधमें भोजनादिका
निषेध और दान पुण्यका विशेष महात्म्य क्यों माना गया ?
कुरुक्षेत्रमें सूर्य-ग्रहणका विशेष महात्म्य क्यों ? इत्यादि
प्रश्नोंका युक्ति-युक्त शास्त्रीय वैज्ञानिक उत्तर—
सिंहके शनिका संसारपर प्रभाव ! अशान्ति,
श्रेणिसंघर्ष, अनाचार और उत्पातोंकी
सम्भावना !! श्रीराजाजी, काश्मीर-
कमीशन और निजाम तथा
जिन्नाकी जन्म-कुण्डलियों
पर शास्त्रीय विचार
आदि आदि।



मूल्य २) रु०　　　सम्पादक—　　　रजिस्ट्री से २।-)

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

देवज्ञ की दृष्टि में संसारचक्र—

हमारे भविष्य की एक झलक

सावधान ! अभी कठिन समय आगे भी आनेवाला है

सं० २००८ से २०१ वि० तक सारे देश में अराजकता !

सं०२०१५ वि० से पूर्ण सुख शान्ति का साम्राज्य !

स्वतन्त्र भारत का भविष्य, श्री नेहरूजी की कुण्डली पर विचार

[लेखक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कों और एक वर्ष पहले अपने 'श्रीविश्व विजय-पञ्चाङ्ग' तथा दैनिक 'नवभारत' 'वीर-अर्जुन' आदि पत्र पत्रिकाओं में वर्तमान वर्ष का जो भीषण भविष्यफल हम प्रकाशित कर चुके थे उसकी सत्यता ने ज्योतिर्विज्ञान को पण्डितों का ढकोसला बता कर मज़ाक उड़ानेवाले लखनउवे 'नेशनल-हेरल्ड' के सम्पादक मि० चेलापतिराव जैसे पाश्चात्य शिक्षा विभूषित पण्डितम्मन्य लोगों की आँखें भी भलीभाँति खोल दी हैं। ता० १३ अप्रैल १९४७ के 'नवभारत' में सं० २००४ के विस्तृत भविष्यफल में 'साम्प्रदायिक वैमनस्य' उपशीर्षक के नीचे स्पष्ट लिखा था कि:—

'इस वर्ष में विशेष कर भारतीय जनता का मन और आत्मा अत्यन्त अशान्त सशंक और किंकर्तव्यमूढ जैसी स्थिति में रहेगा। अनार्य पुरुषों-म्लेच्छ यवनादि की मानसिक स्थिति बहुत विकृत होकर भयंकर कुकृत्यों और षड्यन्त्रों की ओर प्रेरित होगी। आर्य अनार्य जनता या कांग्रेस और लीग में स्थायी समझौता न हो सकेगा। (पंजाब का नरमेध और दिल्ली में हुए सत्ता उलटने के षड्यंत्र क्या इसका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं हैं?) ज्येष्ठ आषाढ़ में मंगल शनि की परस्पर नीच राशि में स्थिति और अधिक श्रावण में पञ्चग्रह-योग तथा कार्तिक में शनि-मंगल का युद्ध होगा, ये सब भयानक योग आनेवाली भीषण आपत्तियों की पूर्वसूचना हैं। शनि मंगल रक्तपात मारधाड़ युद्ध उत्पात षड्यंत्र दुर्भिक्षादि दुर्घटनाओं के लिए प्रधान ग्रह माने जाते हैं, अतः ज्येष्ठ से आगे भयंकर रक्तपात, विस्फोट, अग्निकाण्ड, आंधी तूफ़ान, रोग, अपमृत्यु, दुर्भिक्षादि उत्पातों का उपक्रम आरम्भ होगा। १६ अगस्त को पंचग्रह योग और १२ नवम्बर को शनि-मंगल का युद्ध है, अतः वहां से स्थिति अधिक गम्भीर होगी। .... आर्य अनार्य जनता में यत्र-तत्र भयंकर संघर्ष हो जाना निश्चित सा प्रतीत होता है। १५ अगस्त से भयानक संक्रान्तिकाल ही समझना चाहिए।"

इसके अतिरिक्त दिल्ली के सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय दैनिक 'वीर अर्जुन' और 'नवभारत' के ता० ३ जून १९४७ के अंक में चन्द्रग्रहण की सूचना पर 'भारत में भयानक स्थिति' शीर्षकसे हमारी एक भविष्यवाणी प्रकाशित हुई थी। इसमें स्पष्ट लिखा था कि:—

कुण्डली में सब से अधिक महत्त्व-पूर्ण क्रान्ति-कारक योग पराक्रम स्थान कर्क राशि में बन रहा है। कर्क राशिका शनि संसार में अनेक प्रकार के उत्पात, राजनैतिक क्रांति और नये नये उलट फेर करता है। भारत की राशि मकर का यह अधिपति है, अतः भारत पर इसका प्रभाव विशेष रूप से होना स्वाभाविक ही है। आज से ठीक ६० वर्ष पूर्व सं० १९१४ सन १८५७ ई० म जब शनि कर्क में था उस समय भारतमें इसने अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध जो सनिक विद्रोह कराया था वह आज भा सन ५७ के गदर के नाम से संसार की एक प्रमुख ऐतिहासिक घटना है। किन्तु उस समय भारत के राज्येश पंचमेश शुक्रने शनिका साथ नहीं दिया (मिथुन में था) और शत्रुग्रह नीच के मंगल ने (कर्क में) ही पूर्ण सहयोग किया, इस कारण वहाँ भारत स्वतन्त्र न हो सका और वह क्रांति विफल सिद्ध हुई। अब ९० वर्ष के बाद भारत के भाग्य ने फिर पलटा खाया है। इस वर्ष सं० २००४ का सम्राट् और प्रधान मंत्री सूर्य है। इसका शनि के साथ योग इसी वर्तमान श्रावण मास में ही हुआ है। केवल सूर्य का ही नहीं, भारत के पञ्चमेश भाग्येश राज्येश बुध शुक्रने भी इस मासमें शनि से यो। किया और १५ अगस्त की सायंकाल को चन्द्रमा ने भी उक्त चार ग्रहों के साथ कर्क में प्रवेश कर पूर्ण पञ्च-ग्रही योग बनाया। यहाँ एक विशेष बात यह भी ध्यान रखने योग्य है कि सैंकड़ों वर्षों के बाद यह पञ्चग्रह योग महाग्रह यम (प्लुटो) के साथ हो रहा है। इस प्रकार ता० १४ अगस्त को सायंकाल ५ बजे चन्द्रमा के कर्क में जाने पर यम सहित षड्ग्रही योग बना। इस योग के बनते ही ७ घण्टे बाद सैंकड़ों वर्षों से पारतन्त्र्याश में बंधा हुआ भारत स्वतन्त्र हुआ है। सौर जगत् के आकाशस्थ ग्रहपिण्डों का प्रभाव इस भूमण्डल के प्राणिमात्र पर कैसे पड़ता है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उक्त चमत्कार-पूर्ण ऐतिहासिक घटना है, अस्तु।

आरम्भिक तीन वर्ष कठिनाई के

लग्न स्थिर है और चलित में सू० बु० गु० शु० श० केन्द्र में गये हैं; अतः यह तो निश्चित है कि यह स्वतन्त्रता दीर्घजीवी (चिर-स्थायी) होगी और आगे उत्तरोत्तर भारत का गौरव संसार में बहुत बढ़ेगा। शनि की महादशा में ही भारतीय स्वतन्त्र उपनिवेश का जन्म हुआ है और अभी ढाई वर्ष तक शनिकी ही अन्तर्दशा चलेगी। शनि इस समय अस्त है और कर्क सिंह राशियाँ इसके शत्रु की हैं, अतः ये आरम्भिक तीन वर्ष भारत के लिए विशेष शुभाशाप्रद नहीं कहे जा सकते। सरकार एवं जनता के सामने अनेक विषम समस्याएँ उत्पन्न होकर कठिन अग्नि-परीक्षा का समय उपस्थित होगा। कांग्रेस से कुछ प्रभावशाली नेताओं का तीव्र मतभेद रहेगा। विशेष कर षड्ग्रही योगवाले इसी अगस्त मास में और आगे नवम्बर में जहां शनि मंगल की युति होगी वहाँ से संसार में किसी प्रकार की विशेष अप्रिय घटना घटेगी। भारत में भी रक्त-पात मार-धाड़ चोरी डाके या दुर्भिक्ष एवं जल-प्लावन से जन-धन का विनाश होगा। पूर्व दक्षिण और उत्तरीय भारत में साम्प्रदायिक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक वातावरण अशान्त रहेगा। इसी अवधि में खानों में विस्फोट अग्निकाण्ड और रेल, मोटर तथा जहाजों में दुर्घटनाएँ अधिक होंगी। परन्तु राज्य की ओर स इन सब आपत्तियों का साहस पूर्वक मुकाबला किया जावेगा। निकट भविष्य में अभी किसी विदेशी आक्रमण का भारत को डर नहीं है। भारत पूर्ण-रूपेण स्वतन्त्र सुखी एवं समृद्ध सं० २०१५ सन १९५८ के बाद हो सकेगा। इन आरम्भिक ३ वर्षों में पाकिस्तान का सम्बन्ध आन्तरिक रूप में मैत्री पूर्ण न रह कर संघर्षमय बना रहेगा। कुछ देशी राज्य भी प्रजासे संघर्ष मोल लेने का विफल प्रयास करेंगे।

कुण्डली के १२ भावों का विस्तृत फल

(१) लग्न में राहु और लग्नेश शुक्र तीसरे स्थान में अस्त है, अतः आरम्भ में भारतीय सर्वसाधारण जनता की स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। राहु शुक्र के कारण शासन-तन्त्र के

गुरु सप्तम में गया है, अतः विदेशों से भारत का सम्बन्ध सहानुभूति-पूर्ण रहेगा । वाणिज्य व्यवसाय में उन्नति होगी । मंगल के कारण दक्षिण अफ्रीका की भारतीय समस्या शीघ्र नहीं सुलझेगी ।

(८) अष्टमेश छठे और अष्टम स्थान मंगल से दृष्ट है, अतः अभी भारत में रोग दुर्भिक्ष उपद्रवादि क द्वारा मृत्यु संख्या में कमी न होगी । विदेशों से आर्थिक सम्बन्ध भी आरम्भ में साधारण ही रहेगा ।

(९) भाग्येश शनि पराक्रम में और नवम भाव छः ग्रहों से दृष्ट है, अतः एक बार धार्मिक सामाजिक क्रांति भारत में विशेष रूप से होगी । तदनन्तर भारत पूर्ण स्वतन्त्र और समृद्ध होगा । धार्मिक आर्य-प्रकृति के लोगों पर आरम्भ में अनेक आपत्तियां आवेंगी । धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन अधिक प्रबल होंगे ।

(१०) दशमेश शनि पराक्रम में है और दशम-भाव पर गुरु की दृष्टि है, अतः भार का राज्य-भाव बलवान् है । परन्तु जब तक शनि कर्क और सिह राशि में रहेगा तब तक शासन-तन्त्र के सामने नई नई कठिनाइयां आती रहेंगी, पर बाद में पूर्ण सफलता मिलेगी । भारत की राष्ट्रीय सरकार विदेशों में गौरव-पूर्ण स्थान प्राप्त करेगी ।

(११) लाभेश गुरु छठे है, अतः आरम्भ में भारतीय आय या उत्पादन शक्ति सन्तोष जनक न रहेगी । औद्योगिक मामलों में व्यय अधिक होगा ।

(१२) व्ययेश मंगल धन भाव में है अतः व्यापारिक औद्योगिक एवं सुरक्षा के सम्बन्ध में व्यय अधिक होगा । शनिदृष्टि के कारण पाकिस्तान से आन्तरिक आर्थिक सम्बन्ध सन्तोष जनक न होंगे । कर्क सिह के शनि में अभी सीमा-विवाद बढ़ेंगे। थोड़े समय के लिए चाहे भले ही शान्ति दिखाई दे, पर शनि अनार्य जनता के अन्तःकरण को अभी शुद्ध नहीं होने देगा ।

आने वाला क्रान्तिकाल

यह तो हम पहले ही कह चुके हैं कि 'इन आरम्भिक तीन वर्षों में भारत को नई-नई उलझनों एवं भयंकर आपत्तियों का सामना करना पड़ेगा' । तदनुसार स्वतन्त्रता के साथ ही जिस भयकर अराजकता एवं शस्त्रास्त्रों से सज्जित भीषण षड्यत्रों की बाढ़ आई, उसने राष्ट्रिय सरकार के मार्ग में आरम्भ में ही भयंकर आघात पहुंचाया है। परन्तु राज्य-भाव पर मंगल गुरु की मित्र दृष्टि है और युद्ध में मंगल विजयी हो रहा है, अतः यह हम निश्चय पूर्वक कह सकते हं कि शनि के षड्यंत्रों या अनार्य यवनादि लोगों के अत्याचारों पर आर्य-क्षत्रिय जाति या भारतीय संघ की अन्त में पूर्ण विजय होगी । शनि शनैः शनैः अनार्यों को पतनोन्मुख बनायेगा । १२ नवम्बर को युद्ध में मंगल विजयी हुआ है,-उसी दिन से काश्मीर में भारतीय सेनाने आक्रमण कारी शत्रु (शनि) को बुरी तरह पीछे हटाना प्रारम्भ कर दिया है । वर्तमान ग्रह स्थिति के अनुसार उग्र संघर्ष के बाद अन्त में हैदराबाद को भी भारतीय संघ के सामने झुकना तो पड़ेगा, किन्तु आगे प्रारम्भ होनेवाला सन १९४८ और सं० २००४ वि० भी हमें विशेष शुभाशाप्रद दिखाई नहीं देता । हम तो अपने पूर्व कथनानुसार आनेवाले इन दश वर्षों में सं० २०१४ तक संसार में चारों ओर भय एवं अंधकार को ही विस्तृत हुआ देख रहे हैं। इसमें भी सं० २००८ से सं० २०१२ वि० तक का समय भारत के लिए विशेष अनिष्ट-प्रद प्रतीत हो रहा है ।

भारत के एक सुप्रसिद्ध ज्यौतिषी का मत

भारत और पाकिस्तान के भविष्य के सम्बन्ध में भारत के सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य और भविष्य-वक्ता उज्जयिनीस्थ श्रद्धेय भाई श्री सूर्यनारायण जी व्यास महोदय का मत भी हमने 'श्रीस्वाध्याय' के लिए प्राप्त किया है ।

और गम्भीर घोषणायें कर सकेंगे, तथा सबल हाथों से काम ले सकेंगे। परन्तु चार मास बाद जब पुनः शनि कर्क राशि पर आयेगा और उसके साथ मंगल तथा दूसरे ग्रह उसी राशि पर आयेंगे तब एक बार उन्हें व्यापक षड्यंत्रों का शिकार बनना पड़े तो आश्चर्य नहीं, यह १९४८ में ही होगा। किन्तु उस षड्यंत्र से भी वे निकल जायेंगे और आगे उनको सिंह के शनि मंगल आदि योगों में जो १९४८ के उत्तरार्ध से लेकर १९४९ तक कई कठिन ग्रह-योगों का अवसर ला रहे हैं, व्यापक अराजकता, विदेशी संघर्ष, आन्तरिक एवं बाह्य विद्रोहों का सामना करना पड़ेगा, यह कठिन कसौटी है। १९४८ और १९४९ बीत जाने पर ही शान्ति की सांस ली जा सकेगी। यद्यपि भारत की स्वतन्त्रता को कुचलने के लिए राज्यों और बाहर की शक्तियों के साथ साम्प्रदायिक कुचक्रियों का सहयोग व्यापक विद्रोह तथा निरन्तर संघर्ष का अवसर उपस्थित करेगा, पर भारत पर अब तीसरी ताकत बैठ नहीं सकेगी। हाँ, पाकिस्तान तो स्वप्न की तरह समाप्त हो जायेगा, पर वह अपने नंगे और कराल रूप प्रकट करने के बाद ही। उसी को पीछे लेकर देश में दूसरी ताकतें प्रवेश करने का साहस करेंगी, परन्तु उन्हें यह सौदा सस्ता नहीं पड़ेगा। एशिया की कुछ शक्तियाँ भारत के लिए भी सबल सहायक सिद्ध होंगी। हाँ, आनेवाले दो वर्षों में हमारी अग्नि-परीक्षा अवश्य है। १७ नवम्बर से आनेवाले समय में तो मैं देश के शासक वर्ग से कहूँगा कि पं० नेहरू जी के साहसिक कार्यों पर सावधानी पूर्वक नियंत्रण रखना चाहिए। उन्हें खतरे से गुजरना होगा, उनके प्राणों के साथ खतरा बन जाने की आशंका है। देश की इस महान् विभूति को रक्षित करना आवश्यक है। बापू तो मार्च ४८ तक इन खतरों से खेल ही रहे हैं, उसके बाद भी वे अपनों की सहायता के लिए बाजी लगाये रहेंगे। पर उनकी प्रकृति खून के दबाव की खराबी के ख्याल से मार्च ४८ तक चिन्ता से खाली नहीं है।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

काश्मीरकी समस्या अधिक गम्भीर बनेगी !

अनेक अवाञ्छनीय घटनाओंका उपक्रम आरम्भ होगा !!

संयुक्तराष्ट्रसंघ विश्व-शान्तिमें असफल सिद्ध होगा !!!

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य सम्पादक 'श्रीमार्तण्ड']

—❀—

क्रिया पुरुष-परतन्त्र हुआ करती है, किन्तु ज्ञानके विषयमें ऐसी बात नहीं, वह तो वस्तुपरतन्त्र ही रहेगा। वस्तुको वास्तविक दृष्टिसे जानने वाला पुरुष मनमानी नहीं कर सकता। तभी ज्ञान शब्द सार्थक होता है। हाँ, वस्तु इच्छा परतन्त्र है। इच्छा ज्ञान विषय नहीं। यावत्पर्यन्त क्रिया और ज्ञान दोनोंकी समाप्ति नहीं होती तावत्पर्यन्त इच्छा का वास्तविक साक्षात्कार नहीं होता। इसी कारण क्रिया-साम्राज्यके अन्तर्गत जो भी कुछ होगा वह सब ज्ञानकी दृष्टिमें एक तिनकेकी भी योग्यता नहीं रखता। इसी लिए तो भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि—

"ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन !"

[हे अर्जुन ! ज्ञानरूप अग्नि सभी कर्मों को जला कर भस्म कर देता है।]

और—"सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि।"

[सभी पापोंसे ज्ञानरूप नौकाका आश्रय लेकर पार हो सकोगे] किन्तु, इच्छाकी बात सर्वथा भिन्न है। उसके सम्यक् आविर्भूत हुए बिना स्वतन्त्रताकी आशा रखना आकाश कुसुमसे अधिक योग्यता नहीं रखता। दैवज्ञ तो दैवज्ञ ही ठहरा न, स्वतन्त्र तो नहीं। काल स्वतन्त्र है, इसी कारण प्राचीन त्रिकालदर्शी महर्षि कालकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं—

अनादिरेष भगवान् कालोऽनन्तोऽजरोऽमरः।
सर्वगत्वात्स्वतन्त्रत्वात्सर्वात्मत्वान्महेश्वरः॥

[यह भगवान् काल अनादि है और अनन्त भी है, इसको कभी बुढ़ापा और मृत्यु स्पर्श नहीं कर सकते और यह सभी ईश्वरोंका ईश्वर है। सर्वशक्तिमान् यह सर्वत्र अबाध गतिसे विचरण करता रहता है, कारण यह पूर्ण स्वतन्त्र है, इसी लिए सभीका यह आत्मरूप है।]

ज्ञान-साम्राज्य इच्छाके परतन्त्र ही रहता है। दैवज्ञ कितना भी दैवको जाने किन्तु, उसे उलटपुलट नहीं कर सकता। उलटपुलट करनेकी सामर्थ्य कालमें ही रह सकती है। क्योंकि वही सम्पूर्ण चराचर जगत्की कलन करनेकी शक्तिसे सम्पन्न है। कालका कारण स्वयं प्रकाशमान स्वातन्त्र्यशक्तिमान् ही हो सकता है। इसी बातको लेकर प्राचीन विद्वानोंने अपना अनुभव स्पष्टरूपमें लोगोंके सम्मुख रखते हुए कहा है कि—

'राजा कालस्य कारणम्'

दैवज्ञकी दृष्टि संसार पर विचरण करती हुई यदि संसारके सञ्चालक-पद पर अधिष्ठित राजशक्ति-सम्पन्न पुरुषोंको बिना देखे भविष्यवाणी करेगी तो वह ठीक ठीक निर्णय नहीं कर सकेगी। जहाँ दैवज्ञ की दृष्टिको खगोलके उन तेजोमय गोलकोंको—जो कि काल शक्तिके ही विशेष विशेष कार्य करने वाले अवयव मात्र हैं—देखना पड़ता है वहाँ भूगोलके—जिसके सम्बन्धमें उसे भविष्य वाणी करनी है—स्वातन्त्र्यशक्तिमान शासकोंको बिना देखे काम कैसे चल सकता है? कारण इस भूगोलमें वे स्वतन्त्रशासक काल-शक्तिके विशेष अवयव हैं।

स्फोट हड़तालें गुप्तषड्यंत्र और युद्ध प्रायः इन्हीं ग्रहोंके प्रभावसे संसारमें होते रहते हैं। कार्तिक कृष्णा ३० को इसी कर्क राशिमें शनिमंगलका युद्ध हुआ था, उसका काश्मीर पर जो भयानक प्रभाव हुआ वह पाठकोंको विदित ही है। परन्तु उस समय शनि मंगल वक्री नहीं थे, तथा कर्कराशि पर गुरुकी दृष्टि भी थी उसने भारतीय सेनाके द्वारा काश्मीरको बचा लिया और हैदराबादको भी भारतीय संघमें मिला-सा लिया, क्योंकि हैदराबाद दक्षिण भी कर्क राशिके प्रभावमें है। परन्तु माघ शु० १ ता० ११ फरवरीको गुरु धनुःराशिमें प्रवेश करके कर्कराशिसे अपना दृष्टि सम्बन्ध हटा लेगा अतः ११ फरवरीसे आगे काश्मीर और हैदराबादकी समस्या उत्तरोत्तर अधिक गम्भीर बनती जायेगी। विवेक न्याय और बौद्धिक विचारधाराका अधिपति गुरु है। यह गत कई वर्षों से बड़ी बेढब गतिसे अतिचारी और वक्री हो कर एक वर्षमें तीन-तीन राशियों का संक्रमण करता जा रहा है। इसीने विश्वके बड़े-बड़े शासनसूत्र-सञ्चालकोंकी बुद्धिको अतिचारी एवं वक्री (विपरीत) बना कर 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' के अनुसार संसारको महा-विनाशकी ओर प्रेरित किया। भारतीय विभाजन-योजनाको स्वीकार करानेका बुद्धि भ्रम भी नेताओंको गुरुके कारण ही हुआ था। वहाँ गुरु वक्री था और अब यहाँ अतिचारी है, अतः भय है कि दुर्दैव वशात् हमारे नेता अनार्य लोगोंके मायाजालमें फंस कर उदारताके मोहमें शीघ्रतामें कहीं काश्मीरके विभाजनको भी स्वीकार न कर लें। यदि ऐसा हुआ तो यह दूसरी महान भूल होगी, जिसका दुष्परिणाम भारतके लिए बड़ा भयानक और घातक सिद्ध होगा। आशा है कि काश्मीरकी समस्याके निर्णयमें नेतागण दूरदर्शितापूर्ण सदसद्विवेकबुद्धिसे काम लेंगे।

हैदराबाद की समस्या

हैदराबादके शासक दम्भ दर्प एवं धूर्त्तता-पूर्ण द्विविध कार्य-वाहियां और षड्यंत्र करनेमें तत्पर रहेंगे। यथापूर्व-स्थिति-का करार (समझौता) केवल निज शक्तिसञ्चयका व्याजमात्र है। वहाँ दिये गये तात्कालिक सुधार जन-आन्दोलनको निर्बल करनेके लिए ही हैं। अतः निजामकी प्रत्येक अवाञ्छनीय गतिविधि पर सतर्कतासे ध्यान रखना भारतके लिए हितकर होगा।

आने वाले अनिष्ट योग

माघ शु० १ को गुरु धनुः राशिमें जा रहा है। इसका फल देशभङ्ग, दुर्भिक्ष, किसी ख्याति-प्राप्त व्यक्तिकी मृत्यु और अनार्य म्लेच्छ लोगोंका विनाश लिखा है। यथा—

देशभङ्गश्च दुर्भिक्षं क्वचिन्मारक सम्भवः।
सञ्जाते शीतकालेऽथ ग्रीष्मे म्लेच्छजन क्षयः॥

उधर इसी अवधिमें शनि मंगल तो वक्री हैं ही, साथ ही बुध हर्शल नेपच्यून भी वक्री हो रहे हैं। इसका फल संहिताग्रन्थोंमें राजविग्रह, युद्ध, दुर्भिक्ष, रोग, उत्पातादिसे भयंकर अनिष्टप्रद बतलाया है। यथा—

यत्र मासे ग्रहाः सर्वे वक्रत्वं यान्ति दैवतः।
तन्मासेऽतिमहर्घं स्याद् धान्यं वा राजविग्रहः॥
शनि वक्रे महामारी रौरवं च भयं पथि।
धनधान्यं च वस्त्रं च रुण्डमुण्डा च मेदिनी॥
'भौम वक्रे भूप युद्धम्'

माघ शुक्लसे आगे जुलाई १९४८ तकका समय विशेष अशान्तिदायक प्रतीत हो रहा है। इस अवधिमें कई अवांछनीय अप्रिय घटनाएं घटित होंगी। उत्तर-भारत, काश्मीर, और दक्षिणमें जनधनकी हानि अधिक होगी। कुछ-एक देशी राज्योंमें भी संघर्ष बढेगा। भारत और पाकिस्तानकी कटुता तीव्र रूप धारण करेगी। श्रमिकवर्ग पूँजीपति एवं कर्मचारी तथा अधिकारी वर्गमें असन्तोष बढ़कर कई मिलों, बड़े-बड़े कार-खानों और रेलवे आदि यातायात साधनोंमें हड़ताल की स्थिति उत्पन्न होगी।

स्फोट हड़तालें गुप्तषड्यंत्र और युद्ध प्रायः इन्हीं ग्रहोंके प्रभावसे संसारमें होते रहते हैं। कार्तिक कृष्णा ३० को इसी कर्क राशिमें शनिमंगलका युद्ध हुआ था, उसका काश्मीर पर जो भयानक प्रभाव हुआ वह पाठकोंको विदित ही है। परन्तु उस समय शनि मंगल वक्री नहीं थे, तथा कर्कराशि पर गुरुकी दृष्टि भी थी उसने भारतीय सेनाके द्वारा काश्मीरको बचा लिया और हैदराबादको भी भारतीय संघमें मिला-सा लिया, क्योंकि हैदराबाद दक्षिण भी कर्क राशिके प्रभावमें है। परन्तु माघ शु० १ ता० ११ फरवरीको गुरु धनुराशिमें प्रवेश करके कर्कराशिसे अपना दृष्टि सम्बन्ध हटा लेगा अतः ११ फरवरीसे आगे काश्मीर और हैदराबादकी समस्या उत्तरोत्तर अधिक गम्भीर बनती जायेगी। विवेक न्याय और बौद्धिक विचारधाराका अधिपति गुरु है। यह गत कई वर्षोंसे बड़ी बेढब गतिसे अतिचारी और वक्री हो कर एक वर्षमें तीन-तीन राशियों का संक्रमण करता जा रहा है। इसीने विश्वके बड़े-बड़े शासनसूत्र-सञ्चालकोंकी बुद्धिको अतिचारी एवं वक्री (विपरीत) बना कर 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' के अनुसार संसारको महा-विनाशकी ओर प्रेरित किया। भारतीय विभाजन-योजनाको स्वीकार करानेका बुद्धि भ्रम भी नेताओंको गुरुके कारण ही हुआ था। वहाँ गुरु वक्री था और अब यहाँ अतिचारी है, अतः भय है कि दुर्दैव वशात् हमारे नेता अनार्य लोगोंके मायाजालमें फंस कर उदारताके मोहमें शीघ्रतामें कहीं काश्मीरके विभाजनको भी स्वीकार न कर लें। यदि ऐसा हुआ तो यह दूसरी महान् भूल होगी, जिसका दुष्परिणाम भारतके लिए बड़ा भयानक और घातक सिद्ध होगा। आशा है कि काश्मीरकी समस्याके निर्णयमें नेतागण दूरदर्शितापूर्ण सदसद्विवेकबुद्धिसे काम लेंगे।

हैदराबाद की समस्या

हैदराबादके शासक दम्भ दर्प एवं धूर्त्तता-पूर्ण द्विविधकार्य-वाहियां और षड्यंत्र करनेमें तत्पर रहेंगे। यथापूर्व-स्थिति-का करार (समझौता) केवल निज शक्तिसञ्चयका व्याजमात्र है। वहाँ दिये गये तात्कालिक सुधार जन-आन्दोलनको निर्बल करनेके लिए ही हैं। अतः निजामकी प्रत्येक अवाञ्छनीय गतिविधि पर सतर्कतासे ध्यान रखना भारतके लिए हितकर होगा।

आने वाले अनिष्ट योग

माघ शु० १ को गुरु धनुः राशिमें जा रहा है। इसका फल देशभङ्ग, दुर्भिक्ष, किसी ख्याति-प्राप्त व्यक्तिकी मृत्यु और अनार्य म्लेच्छ लोगोंका विनाश लिखा है। यथा—

देशभङ्गश्च दुर्भिक्षं क्वचिन्मारक सम्भवः।
सञ्जाते शीतकालेऽथ ग्रीष्मे म्लेच्छजन क्षयः॥

उधर इसी अवधिमें शनि मंगल तो वक्री हैं ही, साथ ही बुध हर्शल नेपच्यून भी वक्री हो रहे हैं। इसका फल संहिताग्रन्थोंमें राजविग्रह, युद्ध, दुर्भिक्ष, रोग, उत्पातादिसे भयंकर अनिष्टप्रद बतलाया है। यथा—

यत्र मासे ग्रहाः सर्वे वक्रत्वं यान्ति दैवतः।
तन्मासेऽतिमहर्घं स्याद् धान्यं वा राजविग्रहः॥
शनि वक्रे महामारी रौरवं च भयं पथि।
धनधान्यं च वस्त्रं च रुण्डमुण्डा च मेदिनी॥
'भौम वक्रे भूप युद्धम्'

माघ शुक्लसे आगे जुलाई १९४८ तकका समय विशेष अशान्तिदायक प्रतीत हो रहा है। इस अवधिमें कई अवांछनीय अप्रिय घटनाएं घटित होंगी। उत्तर-भारत, काश्मीर, और दक्षिणमें जनधनकी हानि अधिक होगी। कुछ-एक देशी राज्योंमें भी संघर्ष बढ़ेगा। भारत और पाकिस्तानकी कटुता तीव्र रूप धारण करेगी। श्रमिकवर्ग पूँजीपति एवं कर्मचारी तथा अधिकारी वर्गमें असन्तोष बढ़कर कई मिलों, बड़े-बड़े कारखानों और रेलवे आदि यातायात साधनोंमें हड़ेताल की स्थिति उत्पन्न होगी।

सप्तमेश (मारकस्थानाधिपति) हो कर लग्नमें गुरुसे छठे पड़ा है, अतः यह अन्तर महात्माजीके लिए चिन्ता, मानसिक अशांति, आप्तजनोंसे आन्तरिक मतभेदादि अशुभ फल कारक है।

अनशनका परिणाम

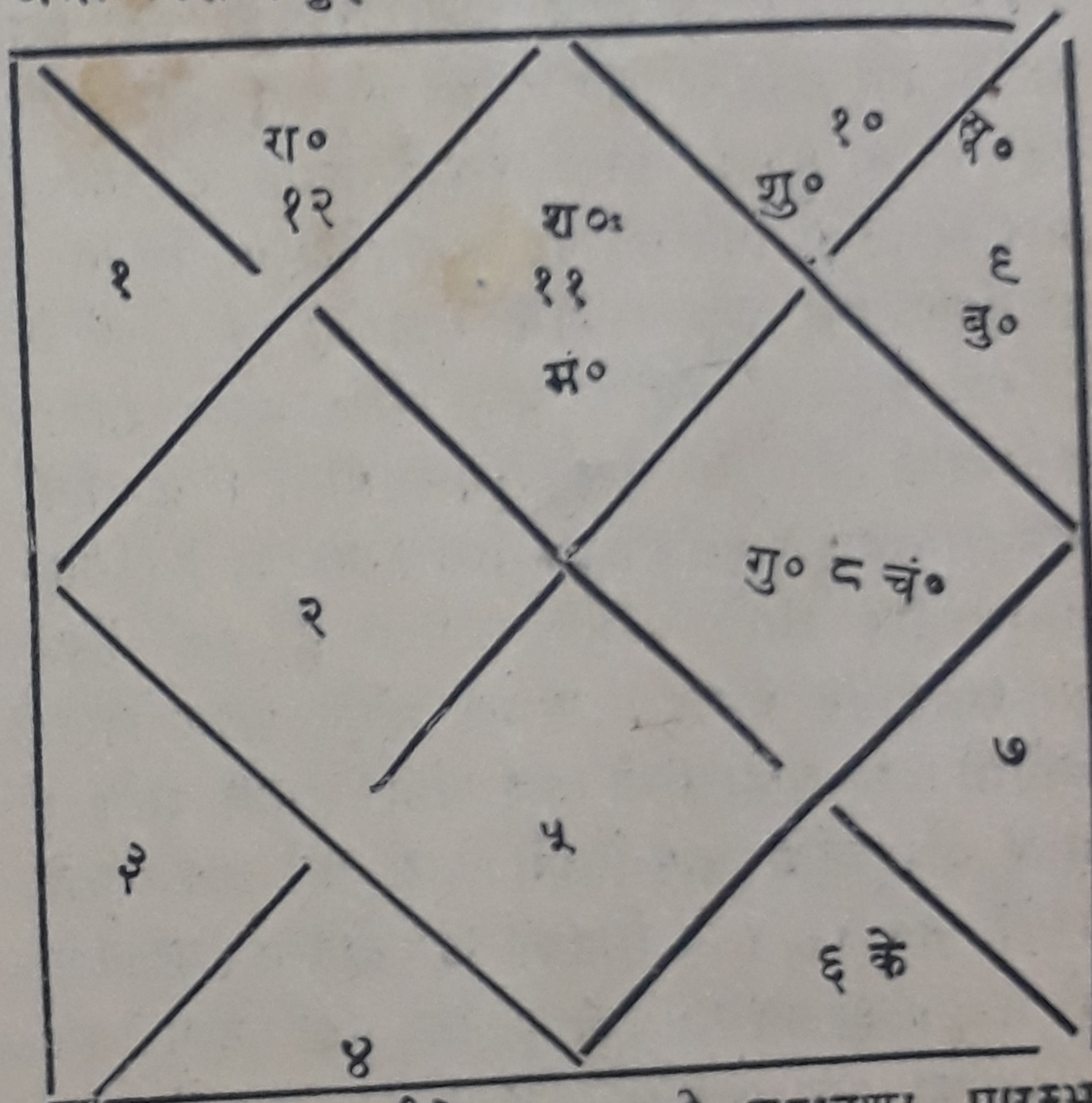
आज ता० १३ जनवरी मंगलवारको मध्याह्न ११। बजे मीनलग्नमें श्रीगांधीजीने अनशन प्रारम्भ किया है। यहां लग्नेश गुरु लग्नको पूर्ण रूपसे देख रहा है, चन्द्र बुध शुक्र भी बलवान् होकर एकादश (लाभ) में पड़े हैं अतः यह हम निश्चित-रूपेण कह सकते हैं कि इस अनशनसे महात्माजी के शरीरको किसी प्रकारकी क्षति नहीं होगी और शीघ्र ही (लगभग एक सप्ताह के अन्दर ही) यह व्रत समाप्त हो जायेगा। महात्माजीकी जन्म-कुण्डली और आजके व्रतारम्भ समयकी कुण्डलीका विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हृदय परिवर्तनके द्वारा गांधीजी हिन्दू मुसलमानोंमें जो स्थायी शान्ति और एकता चाहते हैं, वह अभी पूर्णरूपेण सफल नहीं हो सकेगी और उनका 'करो या मरो' का सिद्धान्त भी अधूरा ही रहेगा।

तुला लग्नकी विशेषता

श्री महात्मा गांधीजीका जन्म लग्न तुला है। यह लग्न प्रायः विशेष शुभ माना गया है। तुला लग्नमें कारक ग्रह बलवान् होने पर निश्चित रूपमें वह प्राणी महापुरुष, राष्ट्रनिर्माता, एवं विश्वविख्यात कीर्त्ति तो अवश्य हो जाता है, परन्तु हमारा अनुभव है कि तुलालग्न वाले महापुरुषोंका जीवन संघर्षमय ही रहता है और वे प्रायः अपने लक्ष्यमें पूर्णरूपेण सफल नहीं होते। दीर्घायुः होने पर भी उनके जीवनके अन्तिमक्षण महान् उद्विग्नतामें व्यतीत होते हैं। अनेकों तुला लग्नकी कुण्डलियाँ प्रायः हमारे देखनेमें ऐसी ही आई हैं। स्व० महारानी लक्ष्मीबाई झांसी, स्व० महाराणा प्रताप, भू०पू० जर्मनकैसर, हरहिटलर, जार्जपष्ठ, मि० चर्चिल आदिका जन्म लग्न तुला ही था। अतः हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि महात्माजीके द्वारा भारतको जितना आवश्यक लाभ पहुंचना था वह राज्येश हो कर लाभस्थ चन्द्रमाके अन्तर तक पहुंच चुका। अब उनका तथाकथित अहिंसावाद संसारकी तो कौन कहे भारतमें भी पूर्णरूपेण सफल सिद्ध नहीं होगा।

मि० जिन्नाह का मारकेश

मि० जिन्नाहको गत ता० २४ दिसम्बरसे ७३ वां वर्ष प्रारम्भ हुआ है। इनकी जो जन्मकुण्डली हमें अभी उपलब्ध हुई वह निम्न है—



गत ७२ वें वर्षसे चन्द्रमाकी महादशा प्रारम्भ हो चुकी है। चन्द्रमा रोगेश एवं नीचका होकर मारकेश गुरुके साथ पड़ा है। और वर्तमान ७३ वां वर्ष शनि राहु मंगलकी क्रूरकर्तरीमें है, अतः इसी वर्षमें मंगल शनिके कारण रक्तविकार या विषाक्त घातक विस्फोटक व्रणादि भयंकर रोगसे प्राणान्त होना सम्भव है। यदि कदाचित् इस वर्षमें बच गये तो आगामी राहुके अन्तरमें तो मि० जिन्नाहकी मृत्यु निश्चित है।

उत्तरार्धमें थोड़ा थोड़ा बाजार ऊंचा जायगा। सोना चांदीका बाजार भी ऊंचा जायगा। यदि २६ जनवरी तक रुईका प्रत्याशित भाव ऊंचा जाये तो रुई बेचना लाभदायक होगा।

फरवरी—

ता० १० को गुरुके स्वक्षेत्रमें (धनुः राशिमें) जानेसे सब बाजारोंमें तेजी आवेगी, पर उसका यह प्रभाव ता० ६ को गुरुका यूरेनससे प्रतियोग होने और २८ को शनिका राहुसे केन्द्रयोग होने से तेजी का प्रभाव नष्ट हो जाता है। प्रारम्भके कुछ दिनोंमें रुईमें बहुत मन्दी आवेगी, बादमें कुछ ऊंचा जावेगा और मासके अन्त तक मुलायम रहेगा।

शेयर मार्केट प्रथम सप्ताहमें एक संकीर्ण सीमामें रहेगा। दूसरेमें बहुत गिरेगा। तीसरेमें कुछ ऊंचा उठेगा और चौथे सप्ताहमें यह तेजी कायम रखना कठिन होगा। केवल सोना चान्दीका मूल्य ता० ६।८।१०।१२।२२।२६।२६ को छोड़कर कुछ ऊंचा रहेगा। इस लिए व्यापारियोंका आदर्श वाक्य 'नीचेमें खरीदो ऊंचेमें बेचो', होना चाहिए।

मार्च—

इस्पात लोहा अलसी तीसी तेल कालीमिर्चका स्वामी मंगल वक्री होकर मित्र घरमें निर्बली है। अतः ता० २ को उपर्युक्त चीजों और सोना चान्दी तथा रुईमें मन्दी आवेगी। इसी दिन शुक्र राहुसे योग करता है यह कोटनफीगर्सके लिए बुरा है। ता० १। २। ५। ७। १०। ११। १५। १९ और २० या इनके आस-पास रुईमें आकस्मिक उछाला आनेको छोड़ कर सारे महीनेमें रुईके भावमें उतार रहेगा। शनि २३ मार्चको मकरके नवमांशमें है और गुरु वृषभके नवमांशमें त्रिकोण योग करनेसे जो निराशा जनक स्थिति है वह सुधर जायेगी। शेयर मार्केटमें मासके आरम्भमें अच्छा काम काज होगा। परन्तु ता० ७ और विशेषतः १३ के बाद सटोरियोंको वशेष सावधानीसे काम करना चाहिए, क्योंकि सूर्य नेपच्यूनके प्रतियोगमें मीनमें प्रवेश करेगा। यह योग मन्दी कारक है। सोना चान्दी ऊंचे भाव पर स्थिर रहेगा। ता० १। ४। ५। ७। १३। १८। २२। २५ को बाजारमें प्रतिक्रिया की सम्भावना है।

अप्रैल—

गत मासके गिरते भाव शुक्रके २९ मार्चको स्वक्षेत्री होनेसे तथा ५ मार्चको सूर्य शनिका और ८को मंगलसे त्रिकोण होनेसे भाव रुक जायेंगे। सूर्य १३ अप्रेलको मेष राशिमें जा रहा है, इस पर गुरु शनिकी दृष्टि है अतः भाव ऊपर नीचे होकर अन्तमें ऊंचे ही रहेंगे। सूर्य सोनेका स्वामी है और मेष इस्पात लोहा तेल और मुद्राकी अधिष्ठातृ राशि है, अतः इन पर विशेष प्रभाव पड़ेगा। इस मास के आरम्भिक दिनोंमें सट्टेके व्यापारमें गिरावट आवेगी पर शीघ्र ही उत्साह पैदा होगा और मूल्य बढ़ेंगे। रुई और शेयर बाजार भी इसीके साथ चलेगा। ता० १५ तक रुई और शेयरोंमें तेजी रहेगी पर बेचनेके दबावसे १८ तक गिरावट आयेगी। १९ से फिर तेजी। सोना चान्दी साधारणतः सारे मासमें ऊंचा रहेगा, इसकी मन्दीके महत्त्वपूर्ण दिन ता० १।७।१६।१७।१९।२४ और २९ हैं। (क्रमशः)

वर्धापन

श्रीस्वाध्यायके सुपरिचित विद्वान् लेखक, हमारे सहृदय सहयोगी बम्बई निवासी श्रीमान् पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञ महोदयकी अ० सौ० धर्मपत्नी श्रीमती विजयलक्ष्मी देवीके गर्भसे पौष शु० ५ गुरुवार ता० १ जनवरी १९४८ को प्रथम पुत्ररत्नका जन्म हुआ है। इस शुभावसर पर हम श्रीस्वाध्याय-परिवारकी ओरसे श्री पं० बिहारीलालजीको हार्दिक बधाई देते हुए भगवान्से प्रार्थी हैं कि नवजात-शिशुको चिरजीवी एवं यशस्वी बनावे।

—सम्पादक

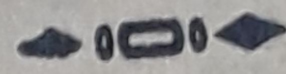
दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र—

सं० २००५ की ग्रहपारिषद्का विचार

नये वर्षमें आने वाले अनिष्ट योगोंका दिग्दर्शन

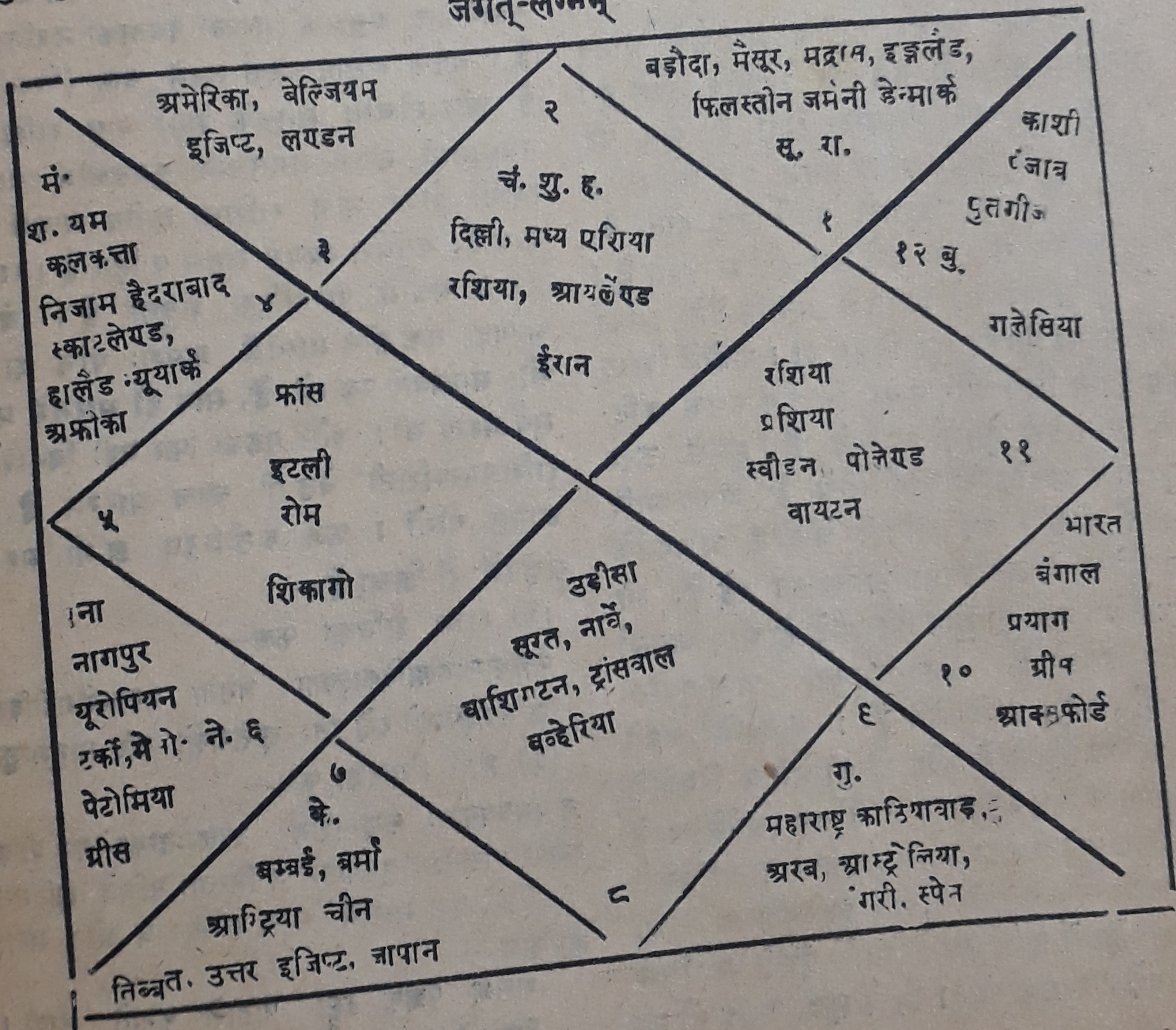
संसारकी सामाजिक राजनैतिक आर्थिकादि परिस्थितियोंका विश्लेषण

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग']



चैत्र शु०४ मंगलवार ता० १३ अप्रैल १९४८ ई० को प्रातः काल इष्ट घट्यादि ७।३८ पर वृषभलग्नमें सूर्य मेष राशिमें प्रवेश करेंगे। इसी समयसे नवीन सौरवर्ष सं० २००५ प्रारम्भ होगा। उक्त समयकी लग्न कुण्डली परसे संसारके शुभाशुभ भविष्यका निर्णय किया जाता है, नये वर्षकी जन्मकुण्डली यह है—

जगत्-लग्नम्—



यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पञ्च सन्ततम् ।
दुर्भिक्ष छत्रभङ्गः स्यात्तदास्ते च महद्भयम् ॥
यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्चवासराः ।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥

(४) तीन मासमें यदि क्रमशः पहले मासमें पांच शनि, दूसरे मासमें पांच रवि और तीसरे मासमें पांच मंगलवार पड़ जावें तो उसका फल भड्डुलीने यों लिखा है—

पांच शनैश्चर पांच रवि पांच हि भौम पड़न्त ।
राज प्रजाकी क्या कहैं शेषनाग कम्पन्त ॥

(५) अस्तोदय सूर्यग्रहणका फल—

"ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ"

(६) एक वर्षमें गुरुके तीन राशियोंको स्पर्श करने और गुरुके अतिचारमें शनिवक्रका फल—

अब्दमध्ये यदा जवः क्रमाद्राशित्रयं स्पृशेत् ।
तदा सुभट कोटिभिः प्रेतपूर्णा वसुन्धरा ॥
अतिचारगते जीवे वक्रीभूते शनैश्चरे ।
हा ! हा !! भूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले ॥

सारांश—

उपर्युक्त सभी योगों, वर्षलग्न जगल्लग्न कुण्डलियोंकी ग्रहस्थिति और कूर्मचक्रका सम्यक् विचार करनेसे ज्ञात होता है कि यह नया वर्ष अपने साथ अनेक अप्रत्याशित अवाञ्छनीय घटनाओंको लेकर आ रहा है। विश्वके रंग-मंच पर अनेक नवीन दृश्य दिखाई देंगे। कष्टपीड़ित संसारके लिए इस वर्षमें शांति और सुरक्षाकी कोई आशा नहीं है। संसारका राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध रहेगा। दुर्भिक्ष रोग भूकम्प गृहयुद्ध जलप्रलय अग्निकाण्ड तूफान आदि आधिदैविक आधिभौतिक उत्पातोंमे कई प्रान्त क्षतिग्रस्त होंगे। विश्वकी महाशक्तियोंके सामने नई-नई विषम समस्याएं उत्पन्न होंगी। श्रावणमास (जुलाई) तकका समय संसारके लिए विशेष कष्टप्रद है। अन्तर्राष्ट्रिय क्षितिज अविश्वास और संदेहसे घिरा रहेगा, तीसरे विश्वयुद्धकी काली घटाएं आकाश में मंडराने लगेंगी।

वर्षका राजा शनि है, यद्यपि राजाका शुभाशुभ फल प्रायः समस्त संसारमें समान रूपेण होता है, तथापि काश्मीर, काम्बोज और कलिंग देशमें कुछ विशेष प्रभाव माना गया है। शनि पश्चिम दिशाका अधिपति है और दक्षिण पश्चिममें इस वर्ष शनिकी दृष्टि भी रहेगी, अतः यूरोप अमेरिका आदि पश्चिमी देशोंमें शनिका अनिष्ट फल अधिक होगा। प्राचीन परिभाषामें पाताल या नागलोक अमेरिकाको कहा गया है, अतः 'पाताले कम्पते फणी' और 'शेषनाग कम्पन्त' यागके आधार पर हम कह सकते हैं कि इस वर्ष अमेरिकामें आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात, भूकम्प, जलप्लावन, विस्फोट, अग्निकाण्ड, रोग, युद्धादि द्वारा जन-धनका विनाश अधिक होगा। अथवा अमेरिकाकी ओरसे कोई ऐसा पग उठाया जायेगा, जिससे संसारकी शान्ति भंग होती दिखाई देगी। वैशाख (अप्रैल) माससे काश्मीर हैदराबाद और फिलस्तीनकी समस्या अधिक गम्भीर बनेगी, वहां भयानक क्रांति होगी। फिलस्तीनमें घोर रक्तपात और अराजकता होगी। श्रावणमें शनि सिंह राशिमें जा रहा है, यह संसारको दो भागोंमें विभक्त करने वाला तथा कुटिलता, षड्यंत्र, असत्य, अत्याचार, अशान्ति और संघर्षको प्रश्रय देनेवाला सिद्ध होगा। आगे इसी वर्षके अन्तमें जब गुरु नीच राशि (मकर) में जायेगा वहांसे भयंकर विश्व-संकटकी सम्भावना है। प्रधानामात्यों द्वारा शासित राज्य अथवा शासन संस्थाओं और कृषि-प्रधान देशोंके लिए सिंहका शनि और मकर का गुरु 'खतरेकी घण्टी' समझना चाहिए। शनिके कारण संसारमें साम्यवादका प्रभाव बढेगा। फ्रांस इटली टर्की यूनान मंचूरिया मध्ययूरोप और मध्यपूर्व अरब आदि सभी यवन राष्ट्रोंमें रूसका वर्चस्व तेजीसे बढता दिखाई देगा। इंग्लैण्डकी वर्तमान मजदूर सरकारके समाजवादी ढांचेको सम्राट शनि देव पूंजीवादी अमेरिकासे दूर और साम्यवादी रूसके समीप ले जानेका प्रयत्न करेंगे।

हो जाना सम्भव है, यदि ऐसा न हुआ तो यह समस्या और भी लम्बी खिचकर विषम बनेगी। तात्पर्य यह है कि यह वर्ष काश्मीरी जनताके लिए सुख शान्ति कारक नहीं है। इस वर्षमें विभाजित पंजाबका पुनः कुछ विभाजन हो जाना भी सम्भव है। किन्तु वह विभाजन गतवर्ष जैसा भयानक जन-धन विनाशक न होगा। केन्द्रीय सरकार, पंजाब, बंगाल और मद्रासके मन्त्रिमण्डलोंमें कुछ उलट फेर होंगे।

हैदराबाद (निजाम) की कर्कराशि है। कर्कका शनि मंगल वहां भयंकर रक्तपात जन-धन-विनाश और क्रांतिकारक है। कर्क राशिके अन्तमें जाता हुआ शनि हैदराबादके अनार्य शासन (निजामके व्यक्ति तन्त्र) का भी अन्त कर जायेगा। श्रावण तक हैदराबादमें घोर अशान्ति रहेगी। वर्षके पूर्वार्धमें वहां भयंकर रक्तपात और नये नये षड्यन्त्र होंगे। बैशाख से श्रावण तकका समय भारतकी राजनीति और शासन-व्यवस्थामें महत्वपूर्ण क्रांतिकारक ऐतिहासिक सिद्ध होगा।

भारतीय कांग्रेस—

यह वर्ष कांग्रेसके लिए अधिकार प्राप्ति और प्रतिष्ठाके लिए जितना उज्ज्वल है उतना ही इस संस्थाकी आन्तरिक परिस्थितियोंके लिए कठिनाइयोंसे भरा हुआ भी है। विरोधीतत्त्व पनपेंगे। कुछ स्वार्थ-लिप्सु लोग अधिकार प्राप्तिके लिए अनुचित उपायों का अवलम्बन करके जनताको उभारनेका अवाञ्छनीय प्रयत्न करेंगे। शनिका सम्बन्ध मजदूर तथा दलितवर्ग से है, अतः इनका उत्कर्ष होगा और इन्हींके द्वारा उत्पात भी खड़े होंगे। सामाजिक अनुशासन भंग होनेके कारण शासन व्यवस्थामें बहुत कठिनाइयां होंगी कांग्रेसकी साढ़ेसाती प्रारम्भ हो रही है, यह अधिकांश कांग्रेस जनोंमें दुर्बलता, पदलोलुपता, स्वार्थपरता, द्वेष और चरित्रहीनताको प्रश्रय देनेवाली है अतः कांग्रेसके अधिकारियों और शासकोंको 'आत्म-निरीक्षण' पूर्वक इस ओरसे सदा सतर्क रहना

चाहिए। सिंहके शनिमें ही आन्तरिक अनैक्य और बाह्य भय भी उपस्थित होंगे, परन्तु ये सब घटनाएं सामयिक उचित कार्यवाही और रक्षा योजनाको अभेद्य बनाकर रोकी जा सकती हैं।

वर्षलग्न और जगल्लग्न—

वर्षलग्न कन्यासे लग्नेश राज्येश बुध सप्तमभाव में सूर्य चन्द्रके साथ है। गुरु शुक्र स्वक्षेत्री होकर क्रमशः सुख और भाग्य भावमें गये हैं। वराहमिहिर के मतानुसार भारतकी राशि कन्या लग्नमें है और पाश्चात्य मतानुसार मकर पञ्चममें। जगल्लग्न कुण्डलीमें प्रजासत्तात्मक चन्द्रमा उच्चका बली होकर स्वक्षेत्र शुक्रके साथ लग्नमें पड़ा है। भारतकी उपर्युक्त दोनों राशियां पंचम नवम (त्रिकोण) स्थानमें आई हैं। भारतके लिए यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योग बन रहा है। भारतका राजनैतिक महत्व संसारमें बहुत बढ़ेगा। बृटिश सत्ताकारक शनि निर्बल है और इंगलैण्डकी राशि मेष वर्ष लग्नसे अष्टम और जगत्-लग्नसे व्ययमें पड़ी है अतः बृटिश सत्ता भारतसे पूर्ण रूपेण समाप्त हो जायगी। गुरु शुक्र चंद्र बुधके कारण भारत कला कौशल, नवीन आविष्कार, उद्योग धन्धे और उत्पादनमें पर्याप्त प्रगति करेगा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्रमें स्त्रियोंका प्रभाव बढ़ेगा। जगल्लग्न में सेनापति मंगल सप्तमेश व्ययेश होकर राज्येश शनिके साथ पराक्रममें है अतः सेना संगठन और सुरक्षाके कार्यमें भारतको विशेष व्यय सहन करना पड़ेगा। पंचम भाव भौमसे दृष्ट हैं अतः शिक्षा संस्थाओंमें भी सैनिक शिक्षा अनिवार्य होगी, परन्तु मंगल नीचका है और मंदगति शनिके साथ, इस कारण एक-दम विशेष उन्नति न करके शनैः-शनैः सेनामें प्रगति करवाता है। शुक्र रोगेश होकर लग्नमें है और गुरु अष्टममें है अतः इस वर्ष भारतमें रक्त विकार, हृद्रोग, गलरोग, शिरोरोग, विषूचिकादि संक्रामक रोग अधिक फैलेंगे। महामारी दुर्भिक्ष और साम्प्रदायिक वैमनस्यसे भी जन धनकी हानि होगी। चतुर्थेश सूर्य राहुसे पीड़ित व्ययमें है एतदर्थ

हो जाना सम्भव है, यदि ऐसा न हुआ तो यह समस्या और भी लम्बी खिचकर विषम बनेगी। तात्पर्य यह है कि यह वर्ष काश्मीरी जनताके लिए सुख शान्ति कारक नहीं है। इस वर्षमें विभाजित पंजाबका पुनः कुछ विभाजन हो जाना भी सम्भव है। किन्तु वह विभाजन गतवर्ष जैसा भयानक जन-धन विनाशक न होगा। केन्द्रीय सरकार, पंजाब, बंगाल और मद्रासके मन्त्रिमण्डलोंमें कुछ उलट फेर होंगे।

हैदराबाद (निजाम) की कर्कराशि है। कर्कका शनि मंगल वहां भयंकर रक्तपात जन-धन-विनाश और क्रांतिकारक है। कर्क राशिके अन्तमें जाता हुआ शनि हैदराबादके अनार्य शासन (निजामके व्यक्ति तन्त्र) का भी अन्त कर जायेगा। श्रावण तक हैदराबादमें घोर अशान्ति रहेगी। वर्षके पूर्वार्धमें वहां भयंकर रक्तपात और नये नये षड्यन्त्र होंगे। बैशाख से श्रावण तकका समय भारतकी राजनीति और शासन-व्यवस्थामें महत्वपूर्ण क्रांतिकारक ऐतिहासिक सिद्ध होगा।

भारतीय कांग्रेस—

यह वर्ष कांग्रेसके लिए अधिकार प्राप्ति और प्रतिष्ठाके लिए जितना उज्ज्वल है उतना ही इस संस्थाकी आन्तरिक परिस्थितियोंके लिए कठिनाइयोंसे भरा हुआ भी है। विरोधीतत्त्व पनपेंगे। कुछ स्वार्थ-लिप्सु लोग अधिकार प्राप्तिके लिए अनुचित उपायों का अवलम्बन करके जनताको उभारनेका अवाञ्छनीय प्रयत्न करेंगे। शनिका सम्बन्ध मजदूर तथा दलितवर्ग से है, अतः इनका उत्कर्ष होगा और इन्हींके द्वारा उपात भी खड़े होंगे। सामाजिक अनुशासन भंग होनेके कारण शासन व्यवस्थामें बहुत कठिनाइयां होंगी कांग्रेसको साढ़ेसाती प्रारम्भ हो रही है, यह अधिकांश कांग्रेस जनोंमें दुर्बलता, पदलोलुपता, स्वार्थपरता, द्वेष और चरित्रहीनताको प्रश्रय देनेवाली है अतः कांग्रेसके उच्चाधिकारियों और शासकोंको 'आत्म-निरीक्षण' पूर्वक इस ओरसे सदा सतर्क रहना चाहिए। सिंहके शनिमें ही आन्तरिक अनैक्य और बाह्य भय भी उपस्थित होंगे, परन्तु ये सब घटनाएं सामयिक उचित कार्यवाही और रक्षा योजनाको अभेद्य बनाकर रोकी जा सकती हैं।

वर्षलग्न और जगल्लग्न—

वर्षलग्न कन्यासे लग्नेश राज्येश बुध सप्तमभाव में सूर्य चन्द्रके साथ है। गुरु शुक्र स्वक्षेत्री होकर क्रमशः सुख और भाग्य भावमें गये हैं। वराहमिहिर के मतानुसार भारतकी राशि कन्या लग्नमें है और पाश्चात्य मतानुसार मकर पञ्चममें। जगल्लग्न कुण्डलीमें प्रजासत्तात्मक चन्द्रमा उच्चका बली होकर स्वक्षेत्र शुक्रके साथ लग्नमें पड़ा है। भारतकी उपर्युक्त दोनों राशियां पंचम नवम (त्रिकोण) स्थानमें आई हैं। भारतके लिए यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योग बन रहा है। भारतका राजनैतिक महत्व संसारमें बहुत बढ़ेगा। बृटिश सत्ताकारक शनि निर्बल है और इंगलैण्डकी राशि मेष वर्ष लग्नसे अष्टम और जगत्-लग्नसे व्ययमें पड़ी है अतः बृटिश सत्ता भारतसे पूर्ण रूपेण समाप्त हो जायगी। गुरु शुक्र चंद्र बुधके कारण भारत कला कौशल, नवीन आविष्कार, उद्योग धन्धे और उत्पादनमें पर्याप्त प्रगति करेगा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्रमें स्त्रियोंका प्रभाव बढ़ेगा। जगल्लग्न में सेनापति मंगल सप्तमेश व्ययेश होकर राज्येश शनिके साथ पराक्रममें है अतः सेना संगठन और सुरक्षाके कार्यमें भारतको विशेष व्यय सहन करना पड़ेगा। पंचम भाव भौमसे दृष्ट हैं अतः शिक्षा संस्थाओंमें भी सैनिक शिक्षा अनिवार्य होगी, परन्तु मंगल नीचका है और मंदगति शनिके साथ, इस कारण एक-दम विशेष उन्नति न करके शनैः-शनैः सेनामें प्रगति करवाता है। शुक्र रोगेश होकर लग्नमें है और गुरु अष्टममें है अतः इस वर्ष भारतमें रक्त विकार, हृद्रोग, गलरोग, शिरारोग, विषूचिकादि संक्रामक रोग अधिक फैलेंगे। महामारी दुर्भिक्ष और साम्प्रदायिक वैमनस्यसे भी जन धनकी हानि होगी। चतुर्थेश सूर्य राहुसे पीड़ित व्ययमें है एतदर्थ

छोटे बड़े राजा, माण्डलीक सामन्त जागीरदारोंके लिए शनि चिन्ताका कारण है। शनि संसारसे व्यक्ति-तन्त्रको समाप्त करके प्रजातन्त्र साम्यवाद और मजदूर एवं दलित वर्गके महत्वको बढ़ाने वाला है। सिंहका शनि संसारके साथ ही भारतके केन्द्रीय और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें भी कुछ उलट फेर करवायेगा। लाभेश गुरु अष्टममें और लाभमें नीचका बुध है अतः वर्षारम्भमें राष्ट्रकी आय उत्पादन और विदेशी वस्तुओंका आयात पर्याप्त मात्रामें न होनेसे प्रजाको कष्ट रहेगा। उत्तरार्धमें स्थिति सुधरेगी। बारहवें भावका सम्बन्ध विशेषतः व्यय बाधाएं उत्पात लड़ाई झगड़े तथा गुप्त शत्रुओंसे है, व्यय स्थानमें सूर्य राहुसे पीड़ित है और व्ययेश मंगल शनिसे पीड़ित, अतः म्लेच्छप्राय अनार्य प्रकृतिके गुप्त शत्रुओं और सम्प्रदायवादी लोगों से भारतको भय होगा। लड़ाई झगड़े उत्पन्न करानेके लिए उनकी ओरसे राष्ट्रिय प्रगतिमें बाधा डालनेके भयंकर गुप्त षड्यन्त्र रचे जावेंगे, किन्तु व्ययभाव गुरुसे दृष्ट है एतदर्थ गुरुकी आयनीति-निपुणताके कारण अन्तमें ऐसे सब दुष्प्रयत्न नष्ट होकर भारतका अपने उद्देश्यमें सफलता मिलेगी।

व्यापार

व्यापाराधिपति बुध नं चस्थ है, अतः कण्ट्रोल हटनेसे भी वस्तुओंकी दुर्लभता एवं महर्घताका अन्त नहीं होगा। शनिकी गतिविधि व्यापारियों एवं व्यव-साइयोंके लिए चिन्ता कारक है। फेमिडम और निहित स्वार्थ वर्ग (पूंजिपतियों) में समझौता होगा। घनी व्यापारके नाम पर लूट मचायेंगे। निर्धन और मध्यम श्रेणीके लोग अभूतपूर्व कठिनाइयोंमें कराहते रहेंगे। इस वर्षमें रुई सोना चांदी शेयर सरसों अलसी तोरिया आदिके भावोंमें अकल्पित उलट फेर होंगे। वर्षमें कई बार मन्दीके योग भी बनेंगे। तिलहन नमक शोरा वलिविंग लोह इस्पातके भावमें तेजी रहेगी। मेषमें राहु और सूर्यग्रहण दुर्भिक्षका द्योतक है, अतः वर्षारम्भमें ही वैशाख तक गेहूँ चावल चना गुड़ खरीदने वाले व्यापारियोंको आगामी पौषसे पूर्व ही पर्याप्त लाभ अवश्य रहेगा। अवर्षण अतिवर्षण और शीतसे भी कई प्रांतोंमें फसलको भारी हानि होगी। भाद्रपदमें रुईमें मंदी आकर आश्विन में ६०) के लगभग तेजीका योग है। विशेष सूक्ष्म-निर्णय समय पर पत्र-व्यवहारसे ज्ञात करें, ज्येष्ठसे आगे और विशेष कर शनिके सिंहमें जाने पर अन्न तथा वस्त्रोंकी फिर तंगी रहने लगेगी। रुई आदि मूल वस्तुओंके भाव मंदीका अन्त करके तेजीकी ओर बढ़ेंगे। यहां सुव्यवस्थाके लिए करेन्सीका इन्फ्लेशन बढ़ाये जाने या विदेशी हुण्डियामणका रूपान्तर करनेके योग भी बन रहे हैं। मिलोंमें वस्त्रोत्पादन बढ़ाया जायेगा। लोह कागज आदिके नये कारखाने खुलेंगे, विलास वस्तुओंकी कमी और मोटामाल अधिक सुलभ होगा।

वायु मंडल वर्षा आदि

वायुतत्त्वाधिपति शनि वर्षराज और अग्नितत्त्वाधिपति भौम प्रधानमंत्री बनकर दोनों ही अशुभ योग कर रहे हैं, अतः इस वर्ष संसारका वायुमण्डल दूषित रहेगा, ऋतु-वैपरीत्य (असामयिक सरदी गर्मी और वर्षा) होगा। अग्निप्रकोप और आधिभौतिक उत्पात भी संसारमें अधिक होंगे। वैशाखसे श्रावण तक भयंकर आंधी तूफान गरमी अग्निकाण्ड और भूकम्पसे संसारमें बहुत हानि होगी। अरब, कच्छ मरुभूमि मारवाड़ और राजस्थानके प्रदेशोंमें कई बार भयंकर अन्धकारके तूफान आयेंगे। पूर्व उत्तर और मध्यभारतमें भी वायुवेगसे कई वृक्ष धराशायी होंगे। विषूचिका अतिसार रक्तपित्त, और महामारी शीतलादि संक्रामक रोगभी फैलेंगे। आषाढ़ श्रावणमें काली घटाएं वायुवेगसे कई बार छिन्न-भिन्न होंगी। मंगलके कारण वर्षा ऋतुमें खण्ड वृष्टि होंगी पूर्वोत्तरीय पर्वतीय प्रदेशों और कुछ प्रान्तोंमें अतिवृष्टिसे हानि होगी, तो कई प्रान्त समय पर वर्षा न होनेसे कष्ट पायेंगे। भाद्रपद आश्विनमें आंधीके साथ भारी वर्षा होगी। वर्षान्त

कारण कुछ समयके लिए विश्राम करना पड़ेगा। श्रावण तक निर्बलता, ज्वरांश, उदरविकार श्वास, या रक्तचापकी शिकायत न्यूनाधिक मात्रामें रहना सम्भव है।

श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजी—

इस वर्ष आपके द्वारा कांग्रेसके कार्यक्रम और सिद्धान्तोंमें महत्वपूर्ण सुधार होंगे। गुरु शनि आप को उत्तरदायित्व पूर्ण महान् कार्योंमें संलग्न रखकर यश प्रतिष्ठा और सम्मानको विशेष रूपसे बढ़ाने वाले हैं, भारतीय शासनमें भी अपको सर्वोच्च सम्मान प्राप्त होनेका योग है। परन्तु यही गुरु शनि आपके स्वास्थ्यके लिए हितावह नहीं है। वर्षके उत्तरार्धमें आपको वायुविकार, श्वास, ज्वर अथवा उदर या हृद्रोग से व्यथा होगी।

श्री गो० गणेशदत्त जी महाराज—

इस वर्षमें गुरुका गोचर भ्रमण आपके जन्मलग्न से पंचम और राशिसे ११ वें स्वक्षेत्रमें रहेगा, यह आपकी लोकोत्तर प्रतिष्ठा एवं सम्मान वृद्धिमें विशेष सहायक है। पंचमस्थ गुरुके कारण महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य आपके द्वारा सम्पन्न होंगे। जगल्लग्न आपके राज्य स्थानमें है, एतदर्थ राज्यके उच्चाधिकारियों पर भी अपका पर्याप्त प्रभाव रहेगा। गोचरसे शनि आपका लग्नमें और राशिसे सप्तम आ रहा है, शनि श्रमप्रधान ग्रह है, यह देश और धर्मके लिए आपसे खूब परिश्रमके कार्य करवायेगा। अब सिंहका शनि आपको एकान्त उत्तरकाशीमें बिठाकर निरा निष्काम-योगी न बनाते हुए अधिक परिश्रम पूर्वक कर्मक्षेत्रमें उतार कर भारतका सच्चा कर्मयोगी महात्मा बनायेगा। इस वर्षके उत्तरार्धमें वायु और उदर विकारसे भी आपके स्वास्थ्यमें कुछ निर्बलताका योग है।

पाकिस्तान

'सिंहका शनि और धनुः मकरका गुरु प्रायः सभी अनार्य यवन देशों और विशेष कर पाकिस्तानके लिए अनेक प्रकारसे अनिष्टकारक है' यह हम गताङ्कमें ही लिख चुके हैं। इस वर्ष पाकिस्तानमें दुर्भिक्ष रोग महामारी और पारस्परिक मतभेदसे भयङ्कर विनाश होगा। सरकारकी स्थिति अत्यन्त गम्भीर होगी। मुसलमानोंकी नवीन पार्टियां राष्ट्रिय रूपमें संगठित होकर सरकारको उलटनेकी क्रांतिकारक चेष्टा करेंगी। बेकारी और भुखमरीका प्रकोप भयंकर होगा, भारतकी बस्तीके रूपमें पहुँचे हुए भारतीय मुसलमानोंकी सुव्यवस्था न होने से सरकार और जनताको अभूतपूर्व संकटका सामना करना पड़ेगा। उद्दण्ड मूर्ख असभ्य आततायी और लुटेरे लोगोंका सरकार पर आतङ्क छाया रहेगा, प्रत्येक शान्तिप्रिय सभ्य सम्पन्न मुसलमान या हिन्दू अपना अस्तित्व खतरेमें समझेगा। मि० जिन्नाकी स्थिति बहुत शोचनीय होगी, किसी भयङ्कर रोग या देशकी विषम स्थितिसे वे आत्मघाती मृत्युके मुखमें फंस जाएं तो कोई आश्चर्य नहीं। कदाचित् यदि इस वर्षमें इस विषम स्थितिको उन्होंने पार कर लिया तो आगामी वर्ष मारकस्थान स्थित राहुके अन्तरमें मृत्यु निश्चित है। वर्तमान सरकारके अधिकांश शासक पतनोन्मुख होते दिखाई देंगे। सीमान्त का संघर्ष बढ़ेगा, मंगल शनि अनार्य जनताके हृदय और मस्तिष्क विकृत बना कर भयङ्कर अत्याचारकी ओर प्रेरित करेंगे। सशस्त्र सैन्य-संगठनके द्वारा आर्यों पर आक्रमणके गुप्त षड्यन्त्र भी रचे जाएंगे, किन्तु इससे अनार्य जनताका ही अधिक विनाश होगा। अरब ईरान टर्की आदि यवन साम्राज्योंमें भी जन-धनका भीषण विनाश होगा।

संयुक्तराष्ट्र-संघ

हम गताङ्कमें ही लिख चुके हैं कि "संयुक्तराष्ट्र संघकी सुरक्षा-परिषद निर्बल राष्ट्रोंकी रक्षा एवं विश्व-शान्तिमें सफल सिद्ध न होकर 'मत्स्य न्याय' की ही पुष्टि करेगी। तदनुसार हमारा दृढ मत तो अब भी यही है कि संयुक्तराष्ट्र-संघ अन्तर्राष्ट्रिय राजनितिज्ञोंके दाव-पेच दलबन्दी और वाक्-युद्धका अखाड़ा मात्र सिद्ध होगा। लीगआफनेशन्स जिस

हो रही है। दक्षिण अफ्रिकामें भारतीय समस्या नहीं सुलझेगी। वहां भारतीयोंसे विभेदात्मक व्यवहार बना रहनेसे तीव्र अशान्ति फैलेगी। ब्रह्मदेश (बर्मा) को भी भारतकी ही भांति विकट आन्तरिक समस्याओं और राजनैतिक दलोंके विरोधका सामना करना पड़ेगा। मलाया हिन्द एशिया आदि द्वीप समूहोंमें अशांति अराजकता और उपद्रव न्यूनाधिक रूपमें यत्र तत्र व्याप्त रहेंगे।

अमेरिका

अमेरिका अपने आर्थिक बलसे संसार पर प्रभुत्व जमानेका प्रयत्न करेगा, परन्तु अपने इस उद्देश्यमें वह पूर्ण रूपेण सफल न हो सकेगा। धनुः राशिका गुरु अमेरिकाको अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनोंमें अपनी बात मनवाने और निर्बल राष्ट्रोंको अपनी ओर आकर्षित करनेमें सहायक है। इसी अवधिमें इधर आषाढ़ तक और उधर आश्विनसे आगे वर्षके उत्तरार्धमें अमेरिका द्वारा रूसको कड़ी चेतावनी दी जावेगी। सम्भवतः पहले आरम्भमें गुरुके कारण सशस्त्र युद्ध न होकर आदर्शों एवं विचारोंकी लड़ाई तीव्र रूप धारण करती हुई दोनों ओरसे भयङ्कर अभियोगोंके द्वारा भावी विश्व-युद्धकी भूमिका निर्माण कर दे। कांग्रेस और ट्रूमेन में परराष्ट्र नीतिके सम्बन्धमें मतभेद उत्पन्न होंगे। अमेरिका और यूरोपकी अधिकांश जनता युद्धको रोकनेकी भरसक चेष्टा करेगी। सिंहके शनि और मकरके गुरुमें अमेरिकामें भयङ्कर उत्पात होंगे। श्रमिक वर्गमें असन्तोष, हड़ताल, अग्नि कांड, भूकम्प और अपराधोंकी वृद्धि होगी। प्रशान्तके तट पर भारी आंधियाँ आयेंगी। दक्षिण अमेरिकामें आन्तरिक विद्रोह अधिक होंगे। सिंहका शनि और मकरका गुरु पूंजीवादी अमेरिकाकी डालर सम्पत्तिके महत्वको मटियामेट करने वाले हैं।

हो रही है। दक्षिण अफ्रिकामें भारतीय समस्या नहीं सुलझेगी। वहां भारतीयोंसे विभेदात्मक व्यवहार बना रहनेसे तीव्र अशान्ति फैलेगी। ब्रह्मदेश (बर्मा) को भी भारतकी ही भांति विकट आन्तरिक समस्याओं और राजनैतिक दलोंके विरोधका सामना करना पड़ेगा। मलाया हिन्द एशिया आदि द्वीप समूहोंमें अशांति अराजकता और उपद्रव न्यूनाधिक रूपमें यत्र तत्र व्याप्त रहेंगे।

अमेरिका

अमेरिका अपने आर्थिक बलसे संसार पर प्रभुत्व जमानेका प्रयत्न करेगा, परन्तु अपने इस उद्देश्यमें वह पूर्ण रूपेण सफल न हो सकेगा। धनुः राशिका गुरु अमेरिकाको अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनोंमें अपनी बात मनवाने और निर्बल राष्ट्रोंको अपनी ओर आकर्षित करनेमें सहायक है। इसी अवधिमें इधर आषाढ़ तक और उधर आश्विनसे आगे वर्षके उत्तरार्धमें अमेरिका द्वारा रूसको कड़ी चेतावनी दी जावेगी। सम्भवतः पहले आरम्भमें गुरुके कारण सशस्त्र युद्ध न होकर आदर्शों एवं विचारोंकी लड़ाई तीव्र रूप धारण करती हुई दोनों ओरसे भयङ्कर अभियोगोंके द्वारा भावी विश्व-युद्धकी भूमिका निर्माण कर दे। कांग्रेस और ट्रूमेन में परराष्ट्र नीतिके सम्बन्धमें मतभेद उत्पन्न होंगे। अमेरिका और यूरोपकी अधिकांश जनता युद्धको रोकनेकी भरसक चेष्टा करेगी। सिंहके शनि और मकरके गुरुमें अमेरिकामें भयङ्कर उत्पात होंगे। श्रमिक वर्गमें असन्तोष, हड़ताल, अग्नि कांड, भूकम्प और अपराधोंकी वृद्धि होगी। प्रशान्तके तट पर भारी आंधियाँ आयेंगी। दक्षिण अमेरिकामें आन्तरिक विद्रोह अधिक होंगे। सिंहका शनि और मकरका गुरु पूंजीवादी अमेरिकाकी डालर सम्पत्तिके महत्वको मटियामेट करने वाले हैं।

हो रही है। दक्षिण अफ्रिकामें भारतीय समस्या नहीं सुलझेगी। वहां भारतीयोंसे विभेदात्मक व्यवहार बना रहनेसे तीव्र अशान्ति फैलेगी। ब्रह्मदेश (बर्मा) को भी भारतकी ही भांति विकट आन्तरिक समस्याओं और राजनैतिक दलोंके विरोधका सामना करना पड़ेगा। मलाया हिन्द एशिया आदि द्वीप समूहोंमें अशांति अराजकता और उपद्रव न्यूनाधिक रूपमें यत्र तत्र व्याप्त रहेंगे।

अमेरिका

अमेरिका अपने आर्थिक बलसे संसार पर प्रभुत्व जमानेका प्रयत्न करेगा, परन्तु अपने इस उद्देश्यमें वह पूर्ण रूपेण सफल न हो सकेगा। धनुः राशिका गुरु अमेरिकाको अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनोंमें अपनी बात मनवाने और निर्बल राष्ट्रोंको अपनी ओर आकर्षित करनेमें सहायक है। इसी अवधिमें इधर आषाढ़ तक और उधर आश्विनसे आगे वर्षके उत्तरार्धमें अमेरिका द्वारा रूसको कड़ी चेतावनी दी जावेगी। सम्भवतः पहले आरम्भमें गुरुके कारण सशस्त्र युद्ध न होकर आदर्शों एवं विचारोंकी लड़ाई तीव्र रूप धारण करती हुई दोनों ओरसे भयङ्कर अभियोगोंके द्वारा भावी विश्व-युद्धकी भूमिका निर्माण कर दे। कांग्रेस और ट्रूमेन में परराष्ट्र नीतिके सम्बन्धमें मतभेद उत्पन्न होंगे। अमेरिका और यूरोपकी अधिकांश जनता युद्धको रोकनेकी भरसक चेष्टा करेगी। सिंहके शनि और मकरके गुरुमें अमेरिकामें भयङ्कर उत्पात होंगे। श्रमिक वर्गमें असन्तोष, हड़ताल, अग्नि कांड, भूकम्प और अपराधोंकी वृद्धि होगी। प्रशान्तके तट पर भारी आंधियाँ आयेंगी। दक्षिण अमेरिकामें आन्तरिक विद्रोह अधिक होंगे। सिंहका शनि और मकरका गुरु पूंजीवादी अमेरिकाकी डालर सम्पत्तिके महत्वको मटियामेट करने वाले हैं।

यह समझना है कि सूर्यकी स्थिरता वास्तविक स्थिरता नहीं है, किन्तु आपेक्षिक (Comparative) है। हमारे सौर जगत्के अन्तर्गत जो ग्रह उपग्रह हैं उनकी अपेक्षा तो सूर्य अचल है, किन्तु अन्यान्य सौरसमुदायकी अपेक्षा — जो हमको नक्षत्रोंके रूपमें दिखाई देते हैं — वह अचल नहीं है। इस दृश्य संसारमें किसी वस्तुको भी वास्तविक स्थिरता नहीं है। इसी सर्वव्यापी अनवच्छिन्न नियमके वशीभूत हमारे सूर्यदेव भी अपने परिवार वा ग्रहमालाको साथ लिये हुए अतीव सूक्ष्मगतिसे किसी अव्यक्त महासूर्यकी परिक्रमा कर रहे हैं। वह अनेक सूर्योंका भी सूर्य विराटसूर्य कौन है जो इस सम्पूर्ण सौर जगत्को अपने चारों ओर अहर्निश निरन्तर घुमा रहा है। उसका आयतन उसका तेज और उसकी अनन्तशक्तिका पता लगाना मनुष्यकी सामर्थ्यसे सर्वथा बाहर है। मानवी बुद्धि उसके महत्वके आगे पराजित हो जाती है। आचार्य केतकरने ज्योतिर्गणितमें ठीक ही लिखा है—

क्वानन्तकोट्यो ग्रहमालिकानां
क्वचैकमालागणितं मदीयम्।
पिता यथा तुष्यति बाललीलां
दृष्ट्वा तथा तुष्यतु विश्वनाथः॥

सूर्यग्रहण

चन्द्रग्रहण तो जब चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करता है तब लगता है। उस समय भूपृष्ठके किसी भी स्थानसे निरीक्षण किया जाय तो स्पर्शमोक्षादि काल अथवा ग्रासमानमें भेद दिखाई नहीं देता, किन्तु सूर्यग्रहणमें यह बात नहीं है। सूर्यको जो ग्रहण लगता है उसमें भूछाया कारण नहीं। सूर्य स्वयं प्रकाशमान् पिण्ड है, वह छाया वा अन्धकारमें छिप नहीं सकता। अमावस्याको जब सूर्य चन्द्रमा और पृथ्वी तीनों एक सूत्रमें होते हैं (चन्द्रमा, पृथ्वी और सूर्यके बीचमें होता है) उस समय चन्द्रमाका अपारदर्शक और निस्तेज बिम्ब घनपटलके सदृश सूर्यकी किरणोंका अवरोध करता है, जिससे भूपृष्ठपर चन्द्रमाकी छाया पड़ती है, भूपृष्ठके जितने भाग पर यह छाया पड़ती है उसमें जो स्थान आ जाते हैं वहींसे सूर्यग्रहण दिखाई देता है और जो स्थान उस छायासे बाहर रह जाते हैं वहांसे ग्रहण दिखाई नहीं देता। सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है।—

छादको भास्करस्येन्दुरधःस्थो घनवद्भवेत्।
भूच्छायां प्राङ्मुखश्चन्द्रो विशत्यस्य भवेदसौ॥

[सूर्यमण्डलके नीचे अवस्थित हुआ चन्द्रमा बादलकी भांति सूर्य बिम्बको आच्छादित करता है, जिससे सूर्यग्रहण दिखाई देता है। और पश्चिमसे पूर्वको गमन करता हुआ चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करता है जिससे चन्द्रग्रहण दिखाई देता है।]

सिद्धान्तशिरोमणिमें श्रीभास्कराचार्यने भी लिखा है—

पश्चाद्भागाज्जलदवदधः संस्थितोऽभ्येत्य चन्द्रो-
भानोर्बिम्बं स्फुरदसितया छादयत्यात्ममूर्त्या॥ इत्यादि

क्रान्तिवृत्त और चन्द्रकक्षावृत्तकी भिन्नभिन्न परिस्थिति के अनुसार चन्द्र और सूर्यके बिम्बोंमें भी कुछ न्यूनाधिक्यता होती रहती है। नीच स्थानसे बिम्ब बड़ा दीखता है और उच्च स्थानसे छोटा; अतएव चन्द्र सूर्यग्रहणोंकी उपर्युक्त मर्यादामें भी कुछ अन्तर होता रहता है। युतिकालमें यदि चन्द्रशर, चन्द्र और सूर्यबिम्बके मानैक्यखण्डसे न्यून हो किन्तु उनके मानान्तरखण्डसे अधिक हो तो उस समय सूर्यका खण्डग्रास ग्रहण होता है। यदि चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्बके बराबर अथवा उससे कुछ अधिक हो और चन्द्रशर मानान्तरखण्डके बराबर वा उससे कुछ न्यून हो तो उस युतिकालमें सूर्यका पूर्णग्रास (खग्रास) ग्रहण होता है। चन्द्रबिम्बकी त्रिज्याका महत्तम मान १००६ विकला और सूर्यबिम्ब त्रिज्याका लघुतम मान ९४६ विकला है। इनका अन्तर ६० विकला सिद्ध हुआ, अतएव सूर्य ग्रहणके पूर्णग्रास (खग्रास) की परमावधि दश पल सिद्ध होती है। युतिकालमें सूर्य बिम्बसे जब चन्द्रबिम्ब छोटा हो और चन्द्रशरका मान मानान्तरखण्डके बराबर या कुछ न्यून हो तो उस समय चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्बको पूर्णतः आच्छादित नहीं कर सकता। ऐसी स्थितिमें सूर्यबिम्बका प्रकाशमान् कुछ अंश कृष्णवर्ण वाले चन्द्रबिम्ब के चारों ओर (वृत्ताकार रूपमें) दिखाई देता है। इस दृग्विषयको सूर्यका कङ्कणग्रहण कहते हैं। यह स्थिति १५ पलसे अधिक नहीं रह सकती। ऐसा कङ्कण सूर्यग्रहण विक्रम संवत १९९० भाद्रपद कृष्ण ३० ता० २१ अगस्त १९३३ ई० को भारतमें हुआ था।

यह समझना है कि सूर्यकी स्थिरता वास्तविक स्थिरता नहीं है, किन्तु आपेक्षिक (Comparative) है। हमारे सौर जगत्के अन्तर्गत जो ग्रह उपग्रह हैं उनकी अपेक्षा तो सूर्य अचल है, किन्तु अन्यान्य सौरसमुदायकी अपेक्षा — जो हमको नक्षत्रोंके रूपमें दिखाई देते हैं — वह अचल नहीं है। इस दृश्य संसारमें किसी वस्तुको भी वास्तविक स्थिरता नहीं है। इसी सर्वव्यापी अनवच्छिन्न नियमके वशीभूत हमारे सूर्यदेव भी अपने परिवार वा ग्रहमालाको साथ लिये हुए अतीव सूक्ष्मगतिसे किसी अव्यक्त महासूर्यकी परिक्रमा कर रहे हैं। वह अनेक सूर्योंका भी सूर्य विराटसूर्य कौन है जोइस सम्पूर्ण सौर जगत्को अपने चारों ओर अहर्निश निरन्तर घुमा रहा है। उसका आयतन उसका तेज और उसकी अनन्तशक्तिका पता लगाना मनुष्यकी सामर्थ्यसे सर्वथा बाहर है। मानवी बुद्धि उसके महत्वके आगे पराजित हो जाती है। आचार्य केतकरने ज्योतिर्गणितमें ठीक ही लिखा है—

क्वानन्तकोट्यो ग्रहमालिकानां
कवचैकमालागणितं मदीयम्।
पिता यथा तुष्यति बाललीलां
दृष्ट्वा तथा तुष्यतु विश्वनाथः॥

सूर्यग्रहण

चन्द्रग्रहण तो जब चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करता है तब लगता है। उस समय भूपृष्ठके किसी भी स्थानसे निरीक्षण किया जाय तो स्पर्शमोक्षादि काल अथवा ग्रासमानमें भेद दिखाई नहीं देता, किन्तु सूर्यग्रहणमें यह बात नहीं है। सूर्यको जो ग्रहण लगता है उसमें भूछाया कारण नहीं। सूर्य स्वयं प्रकाशमान् पिण्ड है, वह छाया वा अन्धकारमें छिप नहीं सकता। अमावस्याको जब सूर्य चन्द्रमा और पृथ्वी तीनों एक सूत्रमें होते हैं (चन्द्रमा, पृथ्वी और सूर्यके बीचमें होता है) उस समय चन्द्रमाका अपारदर्शक और निस्तेज बिम्ब घनपटलके सदृश सूर्यकी किरणोंका अवरोध करता है, जिससे भूपृष्ठपर चन्द्रमाकी छाया पड़ती है, भूपृष्ठके जितने भाग पर यह छाया पड़ती है उसमें जो स्थान आ जाते हैं वहींसे सूर्यग्रहण दिखाई देता है और जो स्थान उस छायासे बाहर रह जाते हैं वहांसे ग्रहण दिखाई नहीं देता। सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है।—

छादको भास्करस्येन्दुरधस्थो घनवद्भवेत्।
भूच्छायां प्राङ्मुखश्चन्द्रो विशत्यस्य भवेदसौ॥

[सूर्यमण्डलके नीचे भ्रमण करता हुआ चन्द्रमा बादलकी भांति सूर्य बिम्बको आच्छादित करता है, जिससे सूर्यग्रहण दिखाई देता है। और पश्चिमसे पूर्वको गमन करता हुआ चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करता है जिससे चन्द्रग्रहण दिखाई देता है।]

सिद्धान्तशिरोमणिमें श्रीभास्कराचार्यने भी लिखा है—

पश्चाद्भागाज्जलदवदधः संस्थितोऽभ्येत्य चन्द्रो-
भानोर्बिम्बं स्फुरदसितया छादयत्यात्ममूर्त्या॥ इत्यादि

क्रान्तिवृत्त और चन्द्रकक्षावृत्तकी भिन्नभिन्न परिस्थिति के अनुसार चन्द्र और सूर्यके बिम्बोंमें भी कुछ न्यूनाधिक्यता होती रहती है। नीच स्थानसे बिम्ब बड़ा दीखता है और उच्च स्थानसे छोटा; अतएव चन्द्र सूर्यग्रहणोंकी उपर्युक्त मर्यादामें भी कुछ अन्तर होता रहता है। युतिकालमें यदि चन्द्रशर, चन्द्र और सूर्यबिम्बके मानैक्यखण्डसे न्यून हो किन्तु उनके मानान्तरखण्डसे अधिक हो तो उस समय सूर्यका खण्डग्रास ग्रहण होता है। यदि चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्बके बराबर अथवा उससे कुछ अधिक हो और चन्द्रशर मानान्तरखण्डके बराबर वा उससे कुछ न्यून हो तो उस युतिकालमें सूर्यका पूर्णग्रास (खग्रास) ग्रहण होता है। चन्द्रबिम्बकी त्रिज्याका महत्तम मान १००६ विकला और सूर्यबिम्ब त्रिज्याका लघुतम मान ९४६ विकला है। इनका अन्तर ६० विकला सिद्ध हुआ, अतएव सूर्य ग्रहणके पूर्णग्रास (खग्रास) की परमावधि दश पल सिद्ध होती है। युतिकालमें सूर्य बिम्बसे जब चन्द्रबिम्ब छोटा हो और चन्द्रशरका मान मानान्तरखण्डके बराबर या कुछ न्यून हो तो उस समय चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्बको पूर्णतः आच्छादित नहीं कर सकता। ऐसी स्थितिमें सूर्यबिम्बका प्रकाशमान् कुछ अंश कृष्णवर्ण वाले चन्द्रबिम्ब के चारों ओर (वृत्ताकार रूपमें) दिखाई देता है। इस दृग्विषयको सूर्यका कङ्कणग्रहण कहते हैं। यह स्थिति १५ पलसे अधिक नहीं रह सकती। ऐसा कङ्कण सूर्यग्रहण विक्रम संवत १९९० भाद्रपद कृष्ण ३० ता० २१ अगस्त १९३३ ई० को भारतमें हुआ था।

यह समझना है कि सूर्यकी स्थिरता वास्तविक स्थिरता नहीं है, किन्तु आपेक्षिक (Comparative) है। हमारे सौर जगत्‌के अन्तर्गत जो ग्रह उपग्रह हैं उनकी अपेक्षा तो सूर्य अचल है, किन्तु अन्यान्य सौरसमुदायकी अपेक्षा — जो हमको नक्षत्रोंके रूपमें दिखाई देते हैं —वह अचल नहीं है। इस दृश्य संसारमें किसी वस्तुको भी वास्तविक स्थिरता नहीं है। इसी सर्वव्यापी अनवच्छिन्न नियमके वशीभूत हमारे सूर्यदेव भी अपने परिवार वा ग्रहमालाको साथ लिये हुए अतीव सूक्ष्मगतिसे किसी अव्यक्त महासूर्यकी परिक्रमा कर रहे हैं। वह अनेक सूर्योंका भी सूर्य विराटसूर्य कौन है जो इस सम्पूर्ण सौर जगत्‌को अपने चारों ओर अहर्निश निरन्तर घुमा रहा है। उसका आयतन उसका तेज और उसकी अनन्तशक्तिका पता लगाना मनुष्यकी सामर्थ्यसे सर्वथा बाहर है। मानवी बुद्धि उसके महत्वके आगे पराजित हो जाती है। आचार्य केतकरने ज्योतिर्गणितमें ठीक ही लिखा है—

क्वानन्तकोट्यो ग्रहमालिकानां
क्वचैकमालागणितं मदीयम्।
पिता यथा तुष्यति बाललीलां
दृष्ट्वा तथा तुष्यतु विश्वनाथः॥

सूर्यग्रहण

चन्द्रग्रहण तो जब चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करता है तब लगता है। उस समय भूपृष्ठके किसी भी स्थानसे निरीक्षण किया जाय तो स्पर्शमोक्षादि काल अथवा ग्रासमानमें भेद दिखाई नहीं देता, किन्तु सूर्यग्रहणमें यह बात नहीं है। सूर्यको जो ग्रहण लगता है उसमें भूछाया कारण नहीं। सूर्य स्वयं प्रकाशमान् पिण्ड है, वह छाया वा अन्धकारमें छिप नहीं सकता। अमावस्याको जब सूर्य चन्द्रमा और पृथ्वी तीनों एक सूत्रमें होते हैं (चन्द्रमा, पृथ्वी और सूर्यके बीचमें होता है) उस समय चन्द्रमाका अपारदर्शक और निस्तेज बिम्ब घनपटलके सदृश सूर्यकी किरणोंका अवरोध करता है, जिससे भूपृष्ठपर चन्द्रमाकी छाया पड़ती है, भूपृष्ठके जितने भाग पर यह छाया पड़ती है उसमें जो स्थान आ जाते हैं वहींसे सूर्यग्रहण दिखाई देता है और जो स्थान उस छायासे बाहर रह जाते हैं वहांसे ग्रहण दिखाई नहीं देता। सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है।—

छादको भास्करस्येन्दुरधःस्थो घनवद्भवेत्।
भूच्छायां प्राङ्मुखश्चन्द्रो विशत्यस्य भवेदसौ॥

[सूर्यमण्डलके नीचे भ्रमण करता हुआ चन्द्रमा बादलकी भांति सूर्य बिम्बको आच्छादित करता है, जिससे सूर्यग्रहण दिखाई देता है। और पश्चिमसे पूर्वको गमन करता हुआ चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करता है जिससे चन्द्रग्रहण दिखाई देता है।]

सिद्धान्तशिरोमणिमें श्रीभास्कराचार्यने भी लिखा है—

पश्चाद्भागाज्जलदवदधः संस्थितोऽभ्येत्य चन्द्रो-
भानोर्बिम्बं स्फुरदसितया छादयत्यात्ममूर्त्या॥ इत्यादि

क्रान्तिवृत्त और चन्द्रकक्षावृत्तकी भिन्नभिन्न परिस्थिति के अनुसार चन्द्र और सूर्यके बिम्बोंमें भी कुछ न्यूनाधिक्यता होती रहती है। नीच स्थानसे बिम्ब बड़ा दीखता है और उच्च स्थानसे छोटा; अतएव चन्द्र सूर्यग्रहणोंकी उपर्युक्त मर्यादामें भी कुछ अन्तर होता रहता है। युतिकालमें यदि चन्द्रशर, चन्द्र और सूर्यबिम्बके मानैक्यखण्डसे न्यून हो किन्तु उनके मानान्तरखण्डसे अधिक हो तो उस समय सूर्यका खण्डग्रास ग्रहण होता है। यदि चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्बके बराबर अथवा उससे कुछ अधिक हो और चन्द्रशर मानान्तरखण्डके बराबर वा उससे कुछ न्यून हो तो उस युतिकालमें सूर्यका पूर्णग्रास (खग्रास) ग्रहण होता है। चन्द्रबिम्बकी त्रिज्याका महत्तम मान १००६ विकला और सूर्यबिम्ब त्रिज्याका लघुतम मान ९४६ विकला है। इनका अन्तर ६० विकला सिद्ध हुआ, अतएव सूर्य ग्रहणके पूर्णग्रास (खग्रास) की परमावधि दश पल सिद्ध होती है। युतिकालमें सूर्य बिम्बसे जब चन्द्रबिम्ब छोटा हो और चन्द्रशरका मान मानान्तरखण्डके बराबर या कुछ न्यून हो तो उस समय चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्बको पूर्णतः आच्छादित नहीं कर सकता। ऐसी स्थितिमें सूर्यबिम्बका प्रकाशमान् कुछ अंश कृष्णवर्ण वाले चन्द्रबिम्ब के चारों ओर (वृत्ताकार रूपमें) दिखाई देता है। इस दृग्विषयको सूर्यका कङ्कणग्रहण कहते हैं। यह स्थिति १५ पलसे अधिक नहीं रह सकती। ऐसा कङ्कण सूर्यग्रहण विक्रम संवत १९९० भाद्रपद कृष्ण ३० ता० २१ अगस्त १९३३ ई० को भारतमें हुआ था।

हुआ हो। वैसे ही सूर्यकी रश्मियां चन्द्रमा पर पड़ कर हमारी ओर प्रतिबिम्बित होती हैं। चन्द्रलोक निवासियोंको पृथ्वीसे भी इसी प्रकारका प्रकाश उत्पन्न होता हुआ दिखाई देता है, क्योंकि सूर्यकी किरणें पृथ्वी पर पड़कर चन्द्रमाकी ओर प्रतिबिम्बित होती है। सूर्य ही की कृपासे पृथ्वी और चन्द्रमा दोनोंको प्रकाश प्राप्त होता है। चन्द्रमा यदि अपनी ही ज्योतिसे प्रकाशमान् होता तो शुक्ल पक्षकी द्वितीया तृतीयाको चन्द्रके दीप्तिमान् भागसे भिन्न अवशिष्ट भाग पर कालिमा कभी न देख पड़ती। यह कालिमा आप लोगोंने देखी ही होंगी। इससे भी सिद्ध है कि चन्द्रमा स्वयं प्रकाशमान् नहीं है। यदि यह सूर्यकी भांति स्वयं प्रकाशमान् होता तो इस की आकृतिमें भी कभी घटा बढ़ी नहीं होती, क्योंकि गोल पिण्डका अर्धभाग प्रत्येक परिस्थितिमें सर्वदा अखण्डित दिखाई देता है। इसपर सिद्धान्तशिरोमणिमें श्रीभास्कराचार्य ने यों लिखा है—

तरणिकिरणसङ्गादेष पीयूष पिण्डो—
दिनकरदिशि चन्द्रश्चन्द्रिकाभिश्चकास्ति।
तदितरदिशि बालाकुन्तलश्यामलश्री—
र्घट इव निजमूर्त्तिच्छाययैवातपस्थः॥

[चन्द्रमाका यह अमृतमयपिण्ड सूर्यकी किरणोंके संयोगसे उसीकी ओर प्रकाशित रहता है, किन्तु उसकी दूसरी ओर अर्थात् उस ओर जिधर सूर्यकी किरणें नहीं पड़ती वह बाला स्त्रीके केशपाशकी श्यामल शोभाके सदृश अपनी छायासे धूपमें रक्खे हुए घड़ेकी भांति दिखाई देता है। धूपमें रक्खे हुए गोलाकार घड़ेका सूर्यके सम्मुख वाला आधा भाग अपनी छाया से धुंधला रहता है। इसी प्रकार चन्द्रमाका वह भाग जिस पर सूर्यकी किरणें पड़ती है दीप्तिमान् और दूसरा भाग जिस पर सूर्यकी किरणें नहीं पड़ती कालिमा लिए हुए रहता है।]

अमावस्याको चन्द्रमा, पृथ्वी और सूर्यके बीचोबीच आ जाता है, अतएव उस समय चन्द्रमाका सूर्यकी ओर वाला आधा भाग जो हमको दिखाई नहीं पड़ता प्रकाशित होता है और हमारी ओरका आधा भाग अपनी ही छाया में डूबा रहता है। एतदर्थ अमावस्याको चन्द्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता। उस दिन वह सूर्यके साथ ही उदित होता है और उसीके साथ बहुत थोड़े अन्तरसे अस्त भी हो जाता है। फिर शुक्लपक्षके आरम्भमें ज्यों ज्यों चन्द्रमा सूर्यसे दूर होता है त्यों त्यों उसकी शुक्लता बढ़ती है। सूर्यकी ओर वाले भागका वह अंश जो हमें दिखाई देता है चमकीला होता है। उन दिनों चन्द्रमाका उदय और अस्त नित्य सूर्यसे कुछ-कुछ पीछे होता है। शुक्लपक्षकी द्वितीयाको चन्द्रमाकी सूक्ष्म आकृति अत्यन्त मनोहर एवं दर्शनीय होती है। हमारे शास्त्रोंमें चन्द्रमाकी इस सूक्ष्म आकृतिको नवीनचन्द्र या बालचन्द्र आदि नामोंसे निर्देशित किया है। अङ्गरेजीमें इसको न्यूमून (New Moon) या क्रिसेण्ट मून (Crescent Moon) कहते हैं। शुक्लपक्षमें चन्द्रमाकी शुक्लता क्रमशः बढ़ती है।

बढ़ते बढ़ते एक सप्ताह के बाद (अष्टमीको) चन्द्रमाका आधा भाग दीप्तिमान् हो जाता है और पुनः एक सप्ताह व्यतीत होने पर चन्द्रमा जब सूर्यसे १८० अंश दूर होता है, उस समय चन्द्रमाका बिम्ब पूर्ण होजाता है। उस दिन सूर्य पृथ्वी और चन्द्रमा तीनों एक ही सीधमें रहते हैं और पृथ्वी सूर्य तथा चन्द्रमाके ठीक मध्यमें आ जाती है। इसी योगका नाम पूर्णिमा या पर्वान्तकाल है। इसको अंग्रेजीमें (Supirior Conjunction) कहते हैं। इस समय चन्द्रमाकी कला पूर्ण होतीं है। इस दिन सूर्यास्तके साथ ही चन्द्रमाका उदय पूर्वक्षितिजमें होता है। इस स्थितिमें चन्द्रमाका आधा भाग जो सूर्यकी ओर रहता है और जिस पर हमारी दृष्टि भी पहुंचती है प्रकाशित दिखाई देता है, तथा दूसरी ओरका आधा भाग जिस पर हमारी दृष्टि नहीं पहुंचती अन्धकारमय होता है।

चन्द्र-ग्रहण

उपर्युक्त चन्द्रमाके परिचयसे पाठकोंको यह तो ज्ञात हो ही गया है कि पूर्णिमान्तकालमें सूर्यसे चन्द्रमा १८० अंश या पूरी ६ राशिके अन्तर पर रहता है। उस समय जब सूर्य चन्द्रमाके ठीक बीचमें पृथ्वी आ जाती तब एक प्रकाशमान् वस्तुके सामने जिस समय कोई दूसरी वस्तु आवेगी तो उस वस्तुकी छाया या

सिंहिकातनयो राहुरपिबच्चामृतं पुरा ।
शिरश्छिन्नोऽपि न प्राणैस्त्यक्तोऽसौ ग्रहतां गतः ।
अमृतास्वादविशेषाच्छिन्नमपि शिरः किलासुरस्येदम् ।
प्राणैरपरित्यक्तं ग्रहतां वदन्त्येके ॥
इन्द्वर्कमण्डलाकृतिरसितत्वात्किल न दृश्यते गगने
अन्यत्र पर्वकालाद्वरप्रदानात्कमलयोनेः ॥
अन्धकारमयो राहुर्मेघखण्ड इवोत्थितः ।
आच्छादयति सोमार्कौ पर्वकाले ह्युपस्थिते ॥
योऽप्यावसुरो राहुस्तस्य वरो ब्रह्मणाऽयमाज्ञप्तः ।
आप्यायनमुपरागे दत्तहुतांशेन ते भविता ॥
तस्मिन्काले सान्निध्यमस्य तेनोपचर्यते राहुः ।
याम्योत्तरा शशिगतिर्गणितेऽप्युपचर्यते तेन ॥

कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि जो राहु नामक ग्रह है वह पहले एक असुर था, उसने छलसे अमृत पान किया। इस कारण भगवान् विष्णुने उसका शिर काट दिया। परन्तु अमृतपानके प्रभावसे उसका कटा हुआ शिर प्राणहीन न होकर वही राहु नामक ग्रह माना जाने लगा। राहुका अन्धकारमय कृष्णमण्डल है, इस लिए ब्रह्माजीके वरदानसे ग्रहणकालके बिना वह आकाशमें दिखाई नहीं देता। केवल ग्रहणकालमें ही राहुका दर्शन होता है। यह जो राहु नामक असुर है, इसको ब्रह्माजीने यह वर दिया है कि ग्रहणके समय जो दान हवनदि करेंगे उसके अंशसे तेरी भी तृप्ति होगी। इसलिए ग्रहणके समय राहुका (चन्द्रपातका) सान्निध्य होता है। इससे लोकमें कहनेकी यह रीति पड़ गई है कि राहु ग्रास (ग्रहण) किया करता है। गणितमें जो शरके कारण चन्द्रमाकी उत्तर दक्षिण गति होती है—वह शर पातसे सम्बन्ध रखता है। भौमादि ग्रहोंके भी पात हैं, परन्तु यहां चन्द्रमाके पात को ही राहु कहा जाता है। पुराणोंमें राहुकी माता सिंहिकाका दूसरा नाम छाया है, इसीसे राहुको 'छायापुत्र' 'छायामार्तण्ड-सम्भूत' भी कहा जाता है।

श्री भास्कराचार्य ने सिद्धान्तशिरोमणिमें इसका स्पष्टीकरण बड़ी सुन्दर युक्तिसे निम्न श्लोकमें किया है।

राहुः कुभामण्डलगः शशाङ्कं
शशाङ्कगश्छादयतीनबिम्बम् ।
तमो मयः शम्भुवरप्रदानात्
सर्वागमानामविरुद्धमेतत् ॥

अर्थात् भूच्छाया मण्डलमें गया हुआ राहु चन्द्रमाको आच्छादन करता है और चन्द्रमण्डलस्थ राहु सूर्यको ढक देता है।

समुद्र मथन तथा १४ रत्नोंका विचार करने पर राहु केतुके सम्बन्धमें जो कल्पना फुरती है वह हम यहां देते हैं—

"देव तथा दैत्योंने समुद्रको मथा; उसमेंसे अमृतका घड़ा निकला, उसको भगवान् विष्णु अपने हाथमें लेकर सब देवतओंको अमृत बांट रहे हैं" इस आख्यायिकामें जो विष्णु हैं वे वास्तवमें परमतत्त्व-स्वरूप भगवान् सूर्य हैं। तथा अमृतघट यह कुम्भ राशि है [प्राचीनकालमें नक्षत्रगणना धनिष्ठासे आरम्भ होती थी, जैसे आजकल अश्विन्यादि नक्षत्रगणना है। इसी लिए लिखा गया है—

"नक्षत्रचक्रे प्रथमं धनिष्ठेत्युदीरितं श्रीलगधेन तस्मात्"

इत्यादि विषय कठिन है अतः सर्वसाधारणको इसकी उपपत्ति सहज समझमें नहीं आसकेगी। इस कारण हम इसका यहां अधिक विस्तार न करके केवल इतना ही लिखेंगे कि इस धनिष्ठा नक्षत्रसे ही कुम्भराशि आरम्भ होती है] अब इस दृष्टिसे आलोचना करने पर सब देवता (ग्रह) या विष्णु [सूर्य] ये सारे कुम्भराशिमें एकत्रित थे उस समय सूर्य-चन्द्रकी कक्षाएं भिन्न-भिन्न न होकर एक ही थी, ऐसे समय यह घटना हुई प्रतीत होती है। इसके अनन्तर सूर्यकक्षासे [क्रांतिवृत्तसे] चन्द्रकक्षाके पृथक् होने पर क्रांतिवृत्तने चन्द्रकक्षाके जिस स्थानको काटा या क्रास किया [इसीको विष्णु द्वारा राहुका शिर काटा जाना कहते हैं] उसी स्थान या प्रथम सम्पातका नाम राहु और दूसरेका केतु पड़ गया होगा। तदनन्तर चन्द्रमाका विक्षेपमान बढ़ता गया हो, ऐसा होना कोई असम्भव बात नहीं कारण ग्रहोंकी कक्षाएं विक्षेपमानसे न्यूनाधिक हुआ करती हैं। यह भारतीय ज्योतिश्शास्त्रके इतिहासमें स्व० शंकर बालकृष्ण दीक्षितजीने भी शनिके रोहिणी शकट भेद-सम्बन्धमें लिखा है।

खण्डग्रास-सूर्यग्रहण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

सं० २००५ वैशाख कृष्ण-अमावस रविवार ता० ९ मई १९४८ ई० को भारतमें खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा। यह ग्रहण अरब और फिलस्तीनके अतिरिक्त सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप, उत्तरी प्रशान्त महासागर और उत्तरीय अमेरिकाके कुछ भागोंमें दिखाई देगा। जापानमें उत्तर अक्षांश ४०।५१ और पूर्व रेखांश १३२।४७ पर जाने वाली रेखास्थित प्रदेशोंमें कुछ क्षणके लिए यह ग्रहण खग्रास दिखाई देगा, तथा मलाया स्याम और कोरियाके कुछ भागोंमें कङ्कणाकृति दिखाई देगा। भारतके मानचित्र में रेखांश ६५ और अक्षांश ३६ से नीचे दक्षिण पूर्वकी ओर अक्षांश ५ रेखांश ९० पर जाने वाली रेखासे पश्चिमकी ओर उज्जैन, इन्दोर, उदयपुर मेवाड़, रतलाम, अहमदाबाद, बड़ौदा, जोधपुर, समस्त सिन्ध, बम्बई और मद्रासप्रान्त, महाराष्ट्र, निजाम स्टेट और पश्चिमी मध्यप्रान्त विदर्भमें यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा, अर्थात् ग्रहण लगा हुआ सूर्य उदय होगा। उक्त ग्रस्तोदय रेखासे पूर्वकी ओर काश्मीर, पूर्वी पश्चिमी पंजाब, दिल्ली, अजमेर, जयपुर युक्तप्रान्त, बङ्गाल, बिहार, आसाम, उड़ीशा, पूर्वी राजपूताना और पूर्वी मध्यप्रान्तमें सूर्योदयके अनन्तर ग्रहण स्पर्श होगा। कुरुक्षेत्र और दिल्लीमें ग्रहण मध्यकाल के समय ६-५१ पर सूर्यबिम्बका दक्षिणकी ओर आधेसे कुछ ही न्यूनभाग काला (कटा) हुआ दिखाई देगा। बम्बईमें आधेसे अधिक और मद्रासमें सूर्य-बिम्बका पौना भाग ग्रसित हुआ स्पष्ट दिखाई देगा।

भारतके कुछ प्रधान नगरोंमें इस ग्रहणका स्पर्श मोक्ष काल स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार निम्न है—

	स्टेण्डर्ड टाइम	
	स्पर्श	मोक्ष
नगर	घं०-मि०	घं०-मि०
कुरुक्षेत्र	६-०	७-४३
दिल्ली	५-५७	७-४१
सोलन शिमला	६-०	७-४५
पटियाला	६-३	७-४८
अमृतसर	६-२	७-४१
जयपुर	५-५६	७-३८
बड़ौदा	×	७-३२
लखनऊ	५-५४	७-४४
कलकत्ता	५-४३	७-४४
बम्बई	×	७-२६
पूना	×	७-२६
काशी	५-४८	७-४५
नागपुर	५-४३	७-४७
मद्रास	×	७-३७
हैदराबाद दक्षिण	×	७-३०
उज्जैन	×	७-३४
ग्वालियर	५-५५	७-४०
आगरा	५-५४	७-३६

प्रहर पहले) भोजनका निषेध है।

ग्रहणके समय घृत दुग्ध अन्न फलादि पदार्थोंमें कुशा रक्खी जातीं है। इसका कारण यह है कि कुशामें एक ऐसी अद्भुत विद्युच्छक्ति है कि उस पर अन्तरिक्ष सम्बन्धी कोई अनिष्ट प्रभाव नहीं पड़ सकता। इसी लिए सब पदार्थों में पहलेसे ही कुशा रख दी जाती है, ताकि ग्रहणके कारण उन पदार्थोंमें कोई विकृति न आने पावे। कुशामें कई अद्भुत गुण हैं, इसके आसन पर बैठे हुए साधक पर बिजलीका कोई प्रभाव नहीं होता, ज्ञानशक्ति बढ़ती है इसी कारण हमारे तत्त्वदर्शी महर्षियोंने कुशाके आसनको विशेष महत्व दिया और सन्ध्या तर्पण हवनादि प्रत्येक कार्यमें कुशाका उपयोग किया है।

—

पयोगी वस्तुएं सुलभ न होंगी।

भविष्यका दुर्भिक्ष उत्पादन या निष्पत्तिकी न्यूनतासे उतना भयानक नहीं होगा जितना कि अव्यवस्था, साम्प्रदायिक एवं राजनैतिक मतभेद, यातायात साधनोंकी कमी, व्यापारियोंकी अनुचित मुनाफाखोरी और अधिकारी वर्ग की धांधलीसे दुर्भिक्ष जैसी विकट स्थिति उत्पन्न कर दी जावेगी। ग्रहण मध्यकालके समय वृषभ लग्न है। लग्नेश शुक्रका अष्टमेश गुरुसे प्रतियोग हो रहा है। तृतीयेश चतुर्थेश चन्द्र सूर्य व्ययमें राहुसे युक्त और शनिसे दृष्ट है, इन योगोंसे ज्ञात होता है कि संसारमें रोग, पारस्परिक युद्ध, दुर्भिक्ष, उत्पात आदिसे जनधनका बहुत विनाश होगा। गुरु किसी न्यायप्रिय भारतीय महापुरुषको घोर आपत्तिमें फंसाने वाला है। तीन प्रमुख राज पुरुषों पर संक्रामक आपत्ति आयेगी, किसी एक विशिष्ट पुरुषकी मृत्यु हो जाना भी सम्भव है। सर्व साधारण जनताकी स्थिति अच्छी न रहेगी। अधिकारारूढ पक्षके सामने विषमसमस्या उत्पन्न होंगी। सामाजिक आर्थिक समस्या बिगड़ेगी। वर्षा वायु और अग्नि-प्रकोपसे कई प्रान्त क्षतिग्रस्त होंगे। रक्तप्रकोप विषूचिका नेत्रविकार और महामारी आदि संक्रामक रोग फैलेंगे।, सरकार पूंजीपति और मजदूरों का वैमनस्य बढ़ेगा। यातायातमें कठिनाई और कई स्थालोंमें दुर्घटनाएं भी होंगी। बंगाल दक्षिण भारत निजामराज्य मध्यदेश और पाकिस्तातन अत्यधिक जीवन हानि होगी। साम्प्रदायिक वैमनस्यके कारण दूसरे प्रान्तोंसे अन्न सुलभ न हो सकेगा। बेकारी बढ़ेगी। सिन्ध, सीमाप्रान्त, पंजाब, काश्मीर, हैदराबाद और बिलोचिस्तान में रक्तपात होते रहेंगे। दिल्ली मद्रास और बंगालमें भी साम्प्रदायिक मतभेदसे अशान्ति रहेगी। वृषभराशिमें ग्रहण होनेके कारण दिल्लीकी केन्द्रीय सरकारके सामने आगमी ६ मास अग्निपरीक्षाके होंगे, अतः उसे बहुत सतर्क रहना चाहिए। शनि दृष्टि और सूर्य चन्द्र राहुके १२वें होनेसे यह ग्रहण अत्यन्त भयानक संहारकारक बन रहा था परन्तु, गुरुदेवकी मित्र दृष्टिने इसके अशुभफलको अधिकांशमें न्यून कर दिया है, अतः अभी निकट भविष्यमें तीसरा विश्वयुद्ध प्रारम्भ नहीं होगा। वाग्युद्ध, छीनाझपटी और छोटी मोटी टक्कर चाहे भले ही हो जावे। गुरु अभी संसारको महाविनाशकी ओर जानेसे बचानेमें सहायक है। यथा—

जीवो यदा पश्यति सूर्यमिन्दु—
ग्रस्तं तथा सर्व खगेक्षणाद्यत्।
फलत्वनिष्टं गदितं निहन्यात—
सर्वत्र लोकेष्वपि सौख्यकृत्स्यात॥

पयोगी वस्तुएं सुलभ न होंगी।

भविष्यका दुर्भिक्ष उत्पादन या निष्पत्तिकी न्यूनतासे उतना भयानक नहीं होगा जितना कि अव्यवस्था, साम्प्रदायिक एवं राजनैतिक मतभेद, यातायात साधनोंकी कमी, व्यापारियोंकी अनुचित मुनाफाखोरी और अधिकारी वर्ग की धांधलीसे दुर्भिक्ष जैसी विकट स्थिति उत्पन्न कर दी जावेगी। ग्रहण मध्यकालके समय वृषभ लग्न है। लग्नेश शुक्रका अष्टमेश गुरुसे प्रतियोग हो रहा है। तृतीयेश चतुर्थेश चन्द्र सूर्य व्ययमें राहुसे युक्त और शनिसे दृष्ट है, इन योगोंसे ज्ञात होता है कि संसारमें रोग, पारस्परिक युद्ध, दुर्भिक्ष, उत्पात आदिसे जनधनका बहुत विनाश होगा। गुरु किसी न्यायप्रिय भारतीय महापुरुषको घोर आपत्तिमें फंसाने वाला है। तीन प्रमुख राज पुरुषों पर संक्रामक आपत्ति आयेगी, किसी एक विशिष्ट पुरुषकी मृत्यु हो जाना भी सम्भव है। सर्व साधारण जनताकी स्थिति अच्छी न रहेगी। अधिकारारूढ पक्षके सामने विषमसमस्या उत्पन्न होंगी। सामाजिक आर्थिक समस्या बिगड़ेगी। वर्षा वायु और अग्नि-प्रकोपसे कई प्रान्त क्षतिग्रस्त होंगे। रक्तप्रकोप विषूचिका नेत्रविकार और महामारी आदि संक्रामक रोग फैलेंगे।, सरकार पूंजीपति और मजदूरों का वैममस्य बढ़ेगा। यातायातमें कठिनाई और कई स्थालोंमें दुर्घटनाएं भी होंगी। बंगाल दक्षिण भारत निजामराज्य मध्यदेश और पाकिस्तातन अत्यधिक जीवन हानि होगी। साम्प्रदायिक वैमनस्यके कारण दूसरे प्रान्तोंसे अन्न सुलभ न हो सकेगा। बेकारी बढ़ेगी। सिन्ध, सीमाप्रान्त, पंजाब, काश्मीर, हैदराबाद और बिलोचिस्तान में रक्तपात होते रहेंगे। दिल्ली मद्रास और बंगालमें भी साम्प्रदायिक मतभेदसे अशान्ति रहेगी। वृषभराशिमें ग्रहण होनेके कारण दिल्लीकी केन्द्रीय सरकारके सामने आगमी ६ मास अग्निपरीक्षाके होंगे, अतः उसे बहुत सतर्क रहना चाहिए। शनि दृष्टि और सूर्य चन्द्र राहुके १२वें होनेसे यह ग्रहण अत्यन्त भयानक संहारकारक बन रहा था परन्तु, गुरुदेवकी मित्र दृष्टिने इसके अशुभफलको अधिकांशमें न्यून कर दिया है, अतः अभी निकट भविष्यमें तीसरा विश्वयुद्ध प्रारम्भ नहीं होगा। वाग्युद्ध, छीनाझपटी और छोटी मोटी टक्कर चाहे भले ही हो जावे। गुरु अभी संसारको महाविनाशकी ओर जानेसे बचानेमें सहायक है। यथा—

जीवो यदा पश्यति सूर्यमिन्दु—
ग्रस्तं तथा सर्व खगेक्षणाद्यत्।
फलत्वनिष्टं गदितं निहन्यात—
सर्वत्र लोकेष्वपि सौख्यकृत्स्यात॥

५००) कालीमिर्च १५०) २००) रुई रेटमें १००) ७५) चांदीके मूल्यमें २०) ३०) सोनाके भावमें ८) १०) अलसी हेसियन ३) ४) अरन्डी मूंगफली १५) २०) टकेका चक्कर खा जाये। इस चक्करका घुमाव हमें मंदीकी ओर मालूम देता है। चान्स परीक्षित और पक्का है।

आवश्यक सूचना—जो ग्रह सन १९४५ ईस्वीके मई और अगस्तमें जुटे थे और महायुद्धकी समाप्ति तथा जापानकी सन्धि हुई थी, एवं वस्तुओंके भावमें जबर मंदी आई थी, वही संयोग यहां पुनः जुटे हैं। अतएव धनके इच्छुक व्यापारियोंको ऐसे चान्सका उपयोग अक्लमंदीसे करना चाहिये। जिस २ वस्तुका जो जो वायदा ड्यूडेट है इसका ध्यान रखते माल बेचना मंजूर करें, अथवा मंदी लगाएं। गली लगाना न चूकें।

——

'श्रीविश्व-विजय-पञ्चांग'

इस वर्ष सं० २००५ का 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' न छप सकनेकी विवशताका कारण हम गताङ्कमें बता चुके हैं। फिर भी भारतके कोने-कोनेसे नित्य पञ्चाङ्गकी मांग निरन्तर आ रही है, उन हजारों ग्राहकोंको अलग-अलग उत्तर देना कठिन है। यद्यपि कार्ड छपवा कर हमने यथासम्भव सभी ग्राहकों एवं पुस्तक—विक्रेताओंको उत्तर देनेकी व्यवस्था की हैं, तथापि यदि कार्यालयकी ओरसे किसी ग्राहकको उत्तर न मिला हो तो उन सब ग्राहकोंको इस विज्ञप्तिके द्वारा हम सूचित करते हैं कि सं० २००५ के हमारे पंचांगकी वे इस वर्ष प्रतीक्षा न करें। आगामी सं० २००६ का 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' शीघ्र ही प्रकाशित होकर सब ग्राहकोंके पास यथासमय पहुंचेगा।

पञ्चाङ्गकी भविष्यवाणी

सं० २००५ के पंचांगमें प्रकाशित होने वाली विस्तृत भविष्यवाणी (ग्रहपरिषद्‌का विचार) इस अङ्कमें पूर्ण-रूपमें दी गयी है। आगामी अङ्कमें पचांगका प्रत्येक मासका पाक्षिकफल [तेजीमन्दी विचार] और राशिफल भी दिया जायेगा, अतः पंचांगप्रेमी ग्राहकोंका चाहिए कि ४) भेज कर शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक बन जावें। सं० २००५ की 'ग्रहपरिषद्‌का विचार और ग्रहण-विवरण' अलग भी छपा है, जो सज्जन केवल यह भविष्यफल मात्र ही लेना चाहें वे ।।।) बारह आने मनीआर्डर से नीचेके पते पर भेजकर कार्यालयसे मंगवा सकते हैं।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्याय-सदन, सोलन (शिमला)

भूल-सुधार

पृष्ठ ३ पर शोक सम्वादके शीर्षककी दूसरी पंक्तिमें 'सलन' के स्थानमें 'सोलन' और सबसे अन्तकी पंक्तिमें 'बचस्व' के स्थानमें 'वर्चस्व' पढ़ें। पृष्ठ ५ पर कविताके तीसरे पद्यमें 'जाज्वल्यमान' के स्थानमें 'जाज्ज्वलयमान' समझें। इसी प्रकार पृष्ठ ३० पर 'सुपारी' लेखकी सम्पादकीय समरीमें वर्षके नीचे अंक ९ के स्थानमें ७ छप गया है, वहां सब वर्ष (सन्) १९१३ से १९३७-३८ ही समझें।

इस अङ्कके अधिकांश सभी पृष्ठ प्रायः मेरी अनुपस्थितिमें छपे, अतः प्रूफसंशोधक महाशयकी कृपासे ऐसी कुछ अक्षम्य अशुद्धियां रह गई और घिसा हुआ पुराना टाइप लग जानेसे कई अक्षर मात्राएं भी ठीक छपी नहीं इसका मुझे खेद है। विज्ञ पाठक सुधार कर पढ़नेकी कृपा करें।

विनीत— हरदेव शर्मा त्रिवेदी (सम्पादक)

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र—

सिंहके शनिका संसार पर प्रभाव !

अशान्ति, श्रेणि-संघर्ष, अनाचार और उत्पातोंकी सम्भावना !!

श्री राजाजी, काश्मीर कमीशन और निजामकी कुण्डलियों पर शास्त्रीय विचार

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य, सम्पादक—'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग']

गताङ्कमें हम वर्तमान सं० २००५ का भविष्य-फल विस्तृत रूपमें प्रकाशित कर चुके हैं। दैवज्ञकी दृष्टिमें आई हुई संसारचक्रकी सभी शुभाशुभ घटनाएँ कालचक्रानुसार घटित होती हुई भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके महत्वको स्थापित करती जा रही हैं। पाठकोंको स्मरण होगा कि—गतवर्ष १५ अगस्तके दैनिक पत्रोंमें और 'श्रीस्वाध्याय' के नववर्षाङ्क में "सावधान ! अभी कठिन समय आगे भी आने वाला है।" शीर्षकसे हम स्वतन्त्रताके ये आरम्भिक तीन वर्ष विशेष संकटके सविस्तर रूपमें बतला चुके हैं। आजसे आठ मास पूर्व भारतके बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ हैदराबादकी समस्या को बिल्कुल नगण्यसी मान कर केवल तीन घण्टे या तीन दिनमें निजाम पर काबू पानेका भारतीय जनताको विश्वास दिला रहे थे, उसी समय हमने इस धारणाके सर्वथा विपरीत अपने ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर पौष (दिसम्बर)के आरम्भ में ही 'श्रीस्वाध्याय'के हेमन्ताङ्कमें इसी स्तम्भमें "हैदराबाद और काश्मीरकी समस्या अधिक गम्भीर बनेगी" उप-शीर्षकके नीचे यह स्पष्ट चेतावनी दी थी कि—

"ता० ११ फरवरीको गुरु धनुः राशिमें प्रवेश करके कर्क राशिसे अपना दृष्टिसम्बन्ध हटा लेगा, अतः ११ फरवरीसे आगे काश्मीर और हैदराबादकी समस्या उत्तरोत्तर अधिक गम्भीर बनती जायेगी। ……हैदराबादके शासक दम्भ दर्प एवं धूर्त्ततापूर्ण द्वविधकार्यवाहियों और षड्यन्त्र करनेमें तत्पर रहेंगे। यथापूर्व स्थितिका करार (समझौता) केवल निजशक्ति सञ्चयका व्याज मात्र है। वहां दिये गये तात्कालिक सुधार जन आन्दोलनको निर्बल करनेके लिए ही हैं। अतः निजामकी प्रत्येक अवाञ्छनीय गतिविधि पर सतर्कतासे ध्यान रखना भारतके लिए हितकर होगा।"

तदनुसार ११ फरवरीके बाद सुरक्षा परिषद्में काश्मीर की समस्या जिस विषम झमेलेमें पड़ी वह सर्वविदित ही है। और तीन घण्टेमें निजाम पर काबू पानेवाले उन्हीं नेताओंके लिए हैदराबादकी विषम-समस्या अब शिरो-व्यथाका कारण बन गई है। यदि अब भी हमारी सरकारने २५ जुलाई से पहले पहले कर्कके शनिमें ही हैदराबादके विरुद्ध कड़ीसे कड़ी कार्यवाही प्रारम्भ नहीं की तो आगे यह समस्या भारतके लिए विभीषिका बन जायेगी। कासिम रिजवीकी बारबार की गई दर्पोक्तियोंको केवल दर्पोक्ति मानकर हमें उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

काश्मीर कमीशनके यहां आजाने पर भी अभी हमें काश्मीरकी समस्या सुखदरूपमें सुलझती प्रतीत नहीं होती। इसी जुलाई मासमें शनि सिंह राशिमें प्रवेश कर रहा है। अतः इन आगामी ढाई वर्षोंमें यह सिंहका शनि संसारमें भयंकर उथल पुथल मचायेगा।

सिंहके शनिका संसार पर प्रभाव

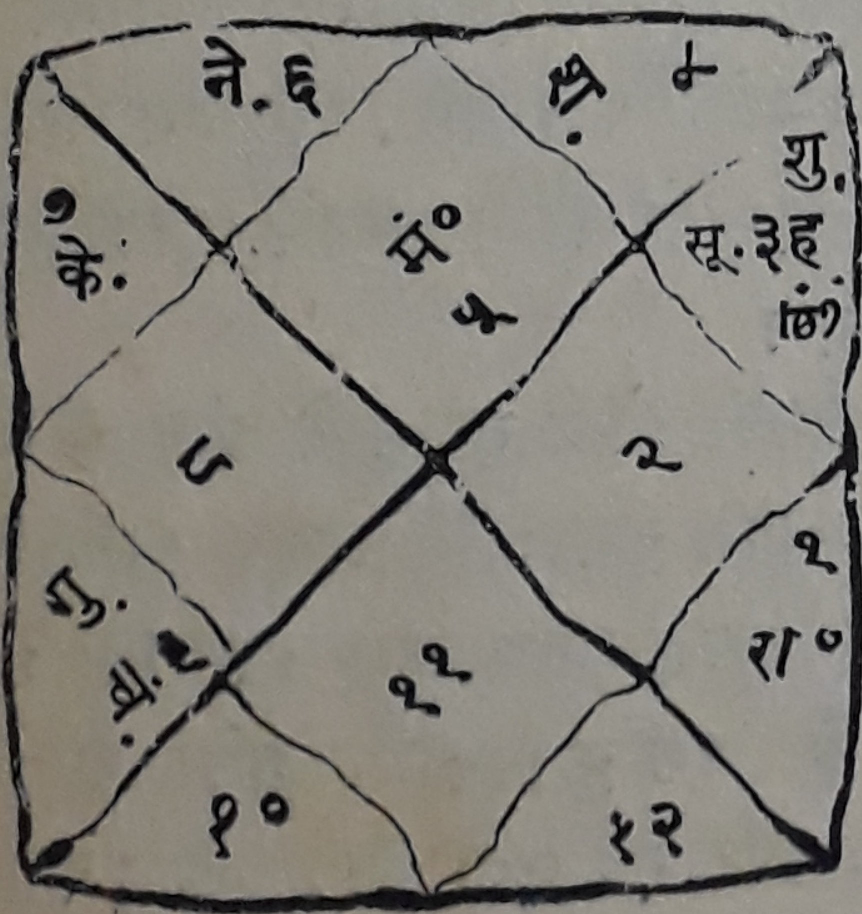
संवत् २००५ वि० श्रावण कृष्ण ४ रविवार तदनुसार ता० २५ जुलाई १९४८ ई० को शनि कर्क राशिको छोड़ कर सिंहमें प्रवेश करेगा। सिंह शासक राज्यवाद प्रधान राशि है। जब शनि कर्क सिंहमें आकर पाप ग्रहों से सम्बन्ध बनाता है तब संसारमें भयंकर अत्याचार, रक्त-पात, युद्ध, दुर्भिक्ष, रोगादि द्वारा प्रजाको संत्रस्त करके

सिंहका शनि समस्त संसारके लिए ही न्यूनाधिक रूपमें अशान्ति कारक रहेगा ही, तथापि ६८ से ७२ रेखांशके बीचमें स्थित भूभाग पर युद्धोत्पातादि द्वारा जन-धनका अधिक विनाश करेगा। उत्तर भारतमें ३२ अक्षांश व्यास नदी तक अनिष्टकी सम्भावना है। इसका विशेष विवेचन आगामी अङ्कमें करेंगे।

सं० २०१३ तक शान्ति नहीं

विगत ४०० वर्षोंके इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह निश्चित रूपमें प्रकट होता है कि शताब्दी परिवर्तनके संक्रमणकालमें आरम्भके दो दशक संसार और विशेषकर भारतके लिए कष्टप्रद ही रहे हैं। सत्रहवीं शताब्दीके द्वितीय दशकमें सं० १६१२ वि० सन १५५५ ई० में हुमायूंने सिकन्दर शूरको सरहिन्दके पास पराजित किया। सं० १६१३ वि० सन् १५५६ ई०में पानीपतके दूसरे युद्धमें पंजाबका आक्रमण हुआ। अठारहवीं शताब्दीके दूसरे दशकमें सं० १७१४ सन १६५७ ई० में दिल्लीके राजसिंहासनके लिए शाहजहांके पुत्रोंमें युद्ध हुआ। उन्नीसवीं शताब्दीके दूसरे दशकमें सं० १८१३ वि० सन १७५६ ई० में अहमदशाह अब्दालीने भारत पर आक्रमण करके दिल्ली लूटी। बीसवीं शताब्दीके दूसरे दशकमें सं० १९१४ वि० सन् १८५७ ई० में भारतमें सैनिकविद्रोह या ५७ का गदर हुआ। अब वर्तमान २१ वीं शताब्दीके आरम्भिक प्रथम दशकमें ही भारतमें जो वीभत्सकाण्ड हुए उन सबका हम कटु अनुभव कर चुके हैं। उक्त ऐतिहासिक घटनाओं और ग्रहस्थितिको देखते हुए अभी सं० २०१३ सन् १९५६ तक हमें संसारमें शान्ति दिखाई नहीं देती।

श्री राजाजीका पदारूढ लग्न



ज्येष्ठ शु० १५ सोमवार ता० २१ जून १९४८ ई० को प्रातः १०। बजे सिंहलग्नमें श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य महोदयने प्रथमबार भारतीय गवर्नर जनरलका पदग्रहण किया। उस समयकी कुण्डली ऊपर दी गई है।

लग्नेश सूर्य लाभमें बुध शुक्रसे युत और गुरु चन्द्रसे दृष्ट है। सुखेश भाग्येश भौम लग्नमें और पञ्चममें गुरु चान्द्रीयोग बहुत उत्तम बना है। उक्त ग्रहस्थितिके आधारपर हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि राजाजी अपनी दूरदर्शिता एवं बुद्धिमत्तापूर्ण आर्यनीतिसे यशस्वी होंगे और इनका कार्यकाल सफलता पूर्वक भारतके लिए हितावह सिद्ध होगा। अष्टमेश गुरु पञ्चम भावमें वक्री है, व्ययेश चन्द्रमा भी साथ है और अस्तङ्गत राज्येश शुक्र एवं सूर्य बुध हर्शलसे प्रतियोग कर रहा है, अतः आरम्भमें राजाजी को अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। व्ययेश चन्द्रमा अष्टमेश गुरुके साथ पञ्चममें षष्ठेश सप्तमेश शनिसे षडष्टक योग कर रहा है, यह राजाजीको देशकी आन्तरिक एवं बाह्य स्थितिको सुलझानेके मार्गमें वाधक बनेगा। परन्तु गुरु स्वक्षेत्री है अतः अन्तमें ये सभी विघ्न-वाधाओं और शत्रुओं पर विजय पा जायेंगे। शनिके सिंहमें आने पर आगामी श्रावण माससे भारतीय सङ्घ शक्तिशाली बनेगा। कठोर हाथोंसे बलपूर्वक बाह्य एवं आन्तरिक शत्रुओंका सामना करेगा। हैदराबाद और काश्मीरमें निर्णायक स्थिति बनेगी। शनि षष्ठेश सप्तमेश होकर लग्नमें जायगा और भाद्रपदमें सूर्य भी इसके साथ होगा—उस समय भारतीय सरकारको आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओंसे बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। भयानक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो जाने की सम्भावना है। विरोधीतत्व पनप कर श्रेणिसङ्घर्ष या यत्र तत्र अराजकताकी स्थिति उत्पन्न करने की कुचेष्टा करेंगे। आगे मार्गशीर्ष पौषमें संसारमें अराजकता बहुत बढ़ेगी। राज्येश पराक्रमेश शुक्रका अस्त और वक्री होना गवर्नर-जनरल और भारतीय-सङ्घके लिए चिन्तासे खाली नहीं है। विशेष विचार आगामी अङ्कमें देंगे।

निजामका जन्म लग्न

निजाम हैदराबादकी दो जन्मकुण्डलियां पत्रोंमें

जा रहा है। न्यायाधिपति गुरुदेव वक्री हैं, लाभेश चन्द्रमा १२वें और अष्टमेश मंगल लग्नमें, एवं लग्नेश दशमेश बुधका पञ्चमेश षष्ठेश शनिसे द्विर्द्वादश योग भी कुण्डलीमें बन रहा है। इन सब ग्रहयोगोंको देखते हुए ज्योतिर्विज्ञान के आधार पर हमें यह आशंका है कि कमीशनके शक्ति-भर पूर्ण प्रयत्न करने पर भी अन्तमें वास्तविक न्याय सम्मत कोई निर्णय (हल) न निकलनेसे यह कमीशन असफल रहे और भारत तथा काश्मीरका हित साधन भी न हो सके। हां, लग्नेश बुध दशममें स्वतंत्रका है, अतः हो सकता है कि आरम्भमें इस कमीशनके सदुद्योगसे काश्मीरकी समस्या सुलझती प्रतीत हो। परन्तु यह बुध व्ययेश सूर्यके साथ है और स्वयं नपुंसक बालस्वभाव अस्थिरमानस ग्रह है, एतदर्थ परिणाम स्वरूप अन्तमें यह समस्या सुलझनेकी अपेक्षा अधिक उलझ जाती दीख पड़ती है। शनिके सिंहमें जाने पर और आगे मंगल नेपच्यूनकी युति होने पर ता० ४ अगस्तसे आगे इस कमीशनके सामने कई कठिन समस्याएँ उत्पन्न होंगी। इसी अवधिमें अष्टमेश मंगलके कारण किसी सदस्यका स्वास्थ्य बिगड़ने, दुर्घटनाका सामना होने, अथवा पारस्परिक मनोमालिन्य बढनेकी भी सम्भावना है।

इन आगामी २॥ वर्षोंमें (सिंहके शनिमें) हमें काश्मीरकी समस्या पूर्णरूपेण सुलझती प्रतीत नहीं होती। आश्विनसे आगे शनि मंगलका केन्द्रयोग होने पर काश्मीरमें शत्रुकी ओरसे फिर गड़बड़की सम्भावना है। हैदराबादकी भी यही स्थिति है। काश्मीर और हैदराबाद एक ही समस्याके दो पहलू हैं, एकका पतन दूसरेसे सम्बन्धित है। अब सिंहका शनि इनको अपने असली नग्नरूपमें प्रकट करेगा। संघर्षका शक्तिसे मुकाबला करना पड़ेगा। भारत सरकारके लिए यह कठिन अग्नि-परीक्षाका समय होगा। आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओंका प्रतिरोध करते हुए अन्तमें भारतकी विजय निश्चित है।

"दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र"

'श्रीस्वाध्याय' के आरम्भसे ही यह स्तम्भ प्रत्येक अङ्कमें दिया जा रहा है। 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र' शीर्षक निबन्धमें समस्त संसार और विशेष कर भारतकी सभी सामयिक समस्याओंपर ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर अन्वेषणात्मक एवं नवीन मौलिक विचारधारा रहती है। 'संसारचक्र' स्तम्भको पाठकोंने अत्यधिक पसन्द किया है। इसकी यथार्थता या सचाईके सम्बन्धमें हमें यहां कुछ नहीं कहना है। अनेक विद्वान् पाठकोंने इस स्तम्भको 'श्रीस्वाध्याय' का प्राण या आत्मा कहा है। वर्तमान वर्षके 'हेमन्ताङ्क' और गत 'वसन्ताङ्क' के शेष न रहने पर अनेक ग्राहकोंने केवल 'संसारचक्र' स्तम्भका ही दूसरा संस्करण छाप कर भेजनेका विशेष आग्रह किया था।

ग्राहकोंके विशेष आग्रहसे वर्तमान सातवें वर्षके चारों अङ्कोंमें प्रकाशित 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र' निबन्ध ठीक उसी रूपमें ४८ पृष्ठोंमें प्रकाशित हुआ है। आरम्भमें 'हमारे भविष्यकी एक झलक' शीर्षकसे ८ पृष्ठ ज्योंके त्यों दिए गये हैं, इसमें स्वतन्त्रभारत का भविष्य और श्री नेहरूजीकी जन्मकुण्डलीका विचार विस्तृत रूपमें दिया है। आगे के ८ पृष्ठोंमें श्री महात्मा गान्धीजी और जिन्नाकी जन्मकुण्डली पर विस्तृत विचार और काश्मीर तथा अन्य समस्याओं पर विस्तृत विचार हैं। तदनन्तर गत 'वसन्ताङ्क' में प्रकाशित २००५ का सविस्तार भविष्य और ग्रहण विवेचन २४ पृष्ठोंमें दिया है। तथा अन्तमें इस ग्रीष्माङ्कके ८ पृष्ठोंमें 'सिंहके शनिका संसार पर प्रभाव' एवं श्री राजाजी, काश्मीर-कमीशन निजामकी जन्मकुण्डलियों पर विस्तृत विचार प्रकट किये गये हैं। इस प्रकार इस ४८ पृष्ठके अप्राप्य संग्रहका मूल्य २) रु० मात्र है। डाक रजिस्ट्री खर्च ।-) अलग। बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं। २।-) का मनीआर्डर भेजकर शीघ्र मंगवा लें। वी० पी० नहीं भेजी जायगी। 'श्रीस्वाध्याय' के १०० उन नये ग्राहकोंको जो सर्वप्रथम आठवें वर्षका मूल्य ४) रु० कार्यालयमें भेज देंगे, यह २) रु० का ग्रन्थ बिना मूल्य उपहारमें भेंट किया जायगा।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

सं० २००६ वि० का
श्रीविश्वविजय—पञ्चाङ्ग

इस वर्ष जो हजारों ग्राहक पंचांग न मिलनेसे निराश हो गये थे उन्हें अब यह जानकर परम प्रसन्नता होगी कि हमारा सं० २००६ का श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग त्यागमूर्ति श्री १०८ गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराजके संरक्षकत्वमें 'श्रीसनातनधर्मप्रतिनिधिसभा' पंजाब द्वारा प्रकाशित हो रहा है। छपाई प्रारम्भ हो गई है। अनेक विशेषताओंके साथ बहुत सुन्दर रूपमें प्रकाशित होकर शीघ्र ही ग्राहकोंके पास पहुंचेगा। जिन ग्राहकों और पुस्तक विक्रेताओंको जितने पंचांगोंकी आवश्यकता हो शीघ्र ही हमें सूचित कर दें ताकि समय पर उन्हें भेजे जा सकें।

निवेदक—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

अध्यक्ष-श्रीविश्वविजय-पंचांग कार्यालय, सोलन (शिमला)

भावीरुख सं० २००५ वि०

सं० २००५का भविष्यफल जिसमें खासकर रुई सोना चांदी अलसी गेहूँ अरण्डी मूंगफली कपास कालीमिर्च और हैसियनके भावोंमें होनेवाली तेजी मन्दीका आंकड़ेवार ब्योरा आधे-आधे सप्ताहका बड़े विचार पूर्वक दिया गया है और वस्तुको कब खरीदना कब बेचना, व्यापारका जोड़ तोड़ धारावाही कलमसे लिखा गया है। पिछले सभी-भावीरुखों से इस वर्षके भावीरुखमें पाठकोंको अनेक उपयोगी लाभ प्रद विशेषताएं मिलेंगी। अब प्रतियां बहुत थोड़ी शेष हैं अतः शीघ्र मंगवा लें, अन्यथा पीछे पछताना होगा। मूल्य डाक खर्च सहित ५।≡)

पता—पं० बिहारीलाल शर्मा दैवज्ञभूषण
कालबादेवीरोड, राममन्दिर बिल्डिङ्ग बम्बई नं० २

नोटः—यह 'भावीरुख' श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला) से भी प्राप्त हो सकती है।

महामहिम श्रीमद्मृत्वाग्भवाचार्य प्रणीत

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्गप्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है जिसके प्रकाशित होने ही दार्शनिक् जगत्में हलचल-सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या है और हमें क्या करना चाहिये? दर्शन किसे कहते है? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उत्पत्ति क्या है? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भली भांति परीचित हो कर आत्म साक्षात्कार करना चाहते है तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

'श्रीस्वाध्याय' के संस्थापक उक्त आचार्यचरणों द्वारा निर्मित 'श्रीरघुरामस्तोत्र' और 'श्रीसप्तपदीहृदय' राष्ट्रभाषानुवाद सहित तथा आप हीके द्वारा सम्पादित 'श्रीपञ्चरत्नी' ये तीनों अद्भुत पुस्तकें 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहकोंको मार्गव्ययके लिये दो आनेके टिकट प्राप्त होने पर भेजी जाती है। पुराने ग्राहकोंको उक्त पुस्तकें अब नहीं मिलेंगी।

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क

प्रथम वर्षकी फाइल—
१—शरदङ्क १॥) रु० २—हेमन्ताङ्क २॥) रु०
३—वसन्ताङ्क १।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०

द्वितीय वर्षकी फाइल—
१—शरदङ्क ४) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०
३—वसन्ताङ्क १॥) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०) रु०

तृतीय वर्षकी फाइल—
१—नववर्षाङ्क ५॥) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०
३—वसन्ताङ्क १॥।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०) रु०

चतुर्थ वर्षकी फाइल—
१—नववर्षाङ्क अप्राप्य २—हेमन्ताङ्क ३) रु०
३—वसन्ताङ्क ३) रु० ४—ग्रीष्माङ्क ६) रु०
तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मू० ६॥) रु०

पंचम वर्षकी फाइल—
१—नववर्षाङ्क ५) रु० २—हेमन्ताङ्क १) रु०
३—साहित्याङ्क २) रु० ४—ग्रीष्माङ्क अप्राप्य
तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मूल्य ७) रु०

छठे वर्षकी फाइल—
१—नववर्षाङ्क ३) रु० २—हेमन्ताङ्क ४) रु०
३—वसन्ताङ्क १) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १) रु०
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ७) रु०

सातवें वर्षका फाइल—
१—नववर्षाङ्क ३) रु० २—हेमन्ताङ्क ४) रु०
३—वसन्ताङ्क अप्राप्य ग्रीष्माङ्क १) रु०

आप व्यापार कैसे करें?

'श्रीस्वाध्याय' से व्यापारी वर्गका भी विशेष स्नेह है। उन्हींके आग्रहसे हम भारतवर्षके प्रसिद्ध सर्वमान्य ज्योतिषियोंके व्यापार पर प्रकाश डालने वाले अनेक विशेष लेख इसमें निरन्तर प्रकाशित कर रहे हैं। हमारी इस योजनासे भारतके हजारों व्यापारियोंने पर्याप्त लाभ उठाया और उठाते जा रहे हैं।

इस आधुनिक सट्टे के व्यापारका प्राचीन ग्रन्थोंमें कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। विद्वान दैवज्ञ यथाशक्ति इस पर अभी अपना-अपना अनुसन्धान कर रहे हैं। जब तक इस विषय पर सामूहिक रूपेण पूर्ण अनुसन्धान (रिसर्च) न हो जाये तबतक किसी एक ज्योतिषीकी हस्व निश्चित रूपमें शतप्रतिशत सदा ठीक उतरना सर्वथा असम्भव है। एक ज्योतिषीकी रायसे व्यापारियोंको उतना लाभ सम्भव नहीं जितना कि भारतके पांच सात अनुभवी ज्योतिषियों की रायके समन्वय या मिलानसे हो सकता है। यदि कोई व्यापारी ठीक ठीक मिलान करके अपनी लाइन न बना सकें या कोई बात समझमें न आवे तो वे सज्जन 'व्यवस्थापक' श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला) के पते पर उत्तरके लिए टिकट भेज कर ठीक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

महामहिम श्रीमद्गुरुवाराज्याचार्य प्रणीत

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्गप्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल-सी मच गई और सैंकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्ण रूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उत्पत्ति क्या है? आदि आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भली भांति परिचित हो कर आत्म साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

'श्रीस्वाध्याय' के संस्थापक उक्त आचार्यचरणों द्वारा निर्मित 'श्रीरघुरामस्तोत्र' और 'श्रीसप्तपदीहृदय' राष्ट्रभाषानुवाद सहित तथा आप हीके द्वारा सम्पादित 'श्रीपञ्चरत्नी' ये तीनों अद्भुत पुस्तकें 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहकोंको मार्ग व्ययके लिये दो आनेके टिकट प्राप्त होने पर भेजी जाती हैं। पुराने ग्राहकोंको उक्त पुस्तकें अब नहीं मिलेंगी।

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क १।।) रु०　　२—हेमन्ताङ्क २।।) रु०
३—वसन्ताङ्क १।) रु०　　४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क ४) रु०　　२—हेमन्ताङ्क २) रु०
३—वसन्ताङ्क १।।) रु०　　४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०) रु०

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५।।) रु०　　२—हेमन्ताङ्क २) रु०
३—वसन्ताङ्क १।।) रु०　　४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०) रु०

चतुर्थ वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य　　२—हेमन्ताङ्क ३) रु०
३—वसन्ताङ्क ३) रु०　　४—ग्रीष्माङ्क ८) रु०
तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मू० ६।) रु०

पंचम वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५) रु०　　२—हेमन्ताङ्क १) रु०
३—साहित्याङ्क २) रु०　　४—ग्रीष्माङ्क अप्राप्य
तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मूल्य ७) रु०

छठे वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु०　　२—हेमन्ताङ्क ४) रु०
३—वसन्ताङ्क १) रु०　　४—ग्रीष्माङ्क १) रु०
चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ७) रु०

सातवें वर्षका फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु०　　२—हेमन्ताङ्क ४) रु०
३—वसन्ताङ्क अप्राप्य　　ग्रीष्माङ्क १) रु०

आप व्यापार कैसे करें?

'श्रीस्वाध्याय' से व्यापारी वर्गका भी विशेष स्नेह है। उन्हीके आग्रहसे हम भारतवर्षके प्रसिद्ध सर्वमान्य ज्योतिषियोंके व्यापार पर प्रकाश डालने वाले अनेक विशेष लेख इसमें निरन्तर प्रकाशित कर रहे हैं। हमारी इस योजनासे भारतके हजारों व्यापारियोंने पर्याप्त लाभ उठाया और उठाते जा रहे हैं।

इस आधुनिक सट्टेके व्यापारका प्राचीन ग्रन्थोंमें कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। विद्वान दैवज्ञ यथाशक्ति इस पर अभी अपना-अपना अनुसन्धान कर रहे हैं। जब तक इस विषय पर सामूहिक रूपेण पूर्ण अनुसन्धान (रिसर्च) न हो जाये तबतक किसी एक ज्योतिषीकी राय निश्चित रूपमें शतप्रतिशत सदा ठीक उतरना सर्वथा असम्भव है। एक ज्योतिषीकी रायसे व्यापारियोंको उतना लाभ सम्भव नहीं जितना कि भारतके पांच सात अनुभवी ज्योतिषियों की रायके समन्वय या मिलानसे हो सकता है। यदि कोई व्यापारी ठीक ठीक मिलान करके अपनी लाइन न बना सकें या कोई बात समझमें न आवे तो वे सज्जन 'व्यवस्थापक' श्रीस्वाध्याय सदन कोसन (पि० ना०) के पते पर उत्तरके लिए टिकट भेज कर ठीक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

आपके लाभकी बात

'श्रीस्वाध्याय' निरन्तर सात वर्षोंसे आपकी सेवा कर रहा है। आपकी राष्ट्रिय सामाजिक और पारिवारिक समस्याओंके सुझावोंके साथ-साथ आपको व्यावहारिक बल भी दे रहा है।

स्वतन्त्र भारतकी इस विकासोन्मुखी वेलामें इष्ट-मित्रोंके परामर्शसे हम 'श्रीस्वाध्याय' को मासिक करनेका विचार कर रहे हैं। वर्तमान प्रेस-सम्बन्धी असुविधाओं पर विचार करते हुए यह भी निश्चित किया है कि 'श्रीस्वाध्याय' अपने ही प्रेसमें छपाया जाय, जिससे ग्राहकोंको 'श्रीस्वाध्याय' यथासमय प्राप्त हो और हम भी व्यर्थ परिश्रममें अपना समय न लगाकर देशकी समस्याओंके सुझावोंमें लगा सकें

'श्रीस्वाध्याय' जनताका पत्र है, इसलिए हम प्रेस भी जनताका ही चाहते हैं। अतः जो बन्धु हमारे इस कार्यमें सम्मिलित होना चाहें वे हमें सूचित करें।

प्रेस-सम्बन्धी-विचारधारा

(१) 'श्रीस्वाध्याय'के इस प्रेसका नाम 'श्रीमुद्रणालय' (Shree Press) रखा जायगा।

(२) यह प्रेस कमसेकम ५० हजारकी रकमसे प्रारम्भ किया जायगा।

(३) ५० हजार रुपयेके ऐसे अर्थभाग (शेयर) रहेंगे जिन्हें कोई भी व्यक्ति खरीद कर इस प्रेसमें अपना भाग स्थापित कर सकेगा। प्रेस भागों [शेयरों] का मूल्य इस प्रकार होगा—
(क) साधारण अर्थभाग (शेयर) १००) रु० (ख) मध्यम अर्थभाग (शेयर) ५००) रु०
(ग) उत्तम अर्थ-भाग (शेयर) १०००) रु० (घ) विशेष अर्थभाग (शेयर) ५०००) रु०

(४) विशेष अर्थभाग खरीदने वाले कुछ व्यक्तियोंकी एक समिति होगी, जिस पर प्रेसका उत्तरदायित्व रहेगा।

(५) इस प्रेस सम्बन्धी विचारधारा (स्कीम) के अन्तर्गत 'श्रीस्वाध्याय' मासिकपत्र 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' तथा 'श्रीग्रन्थमाला' भी रहेगी।

(६) विशेष अर्थ-भाग खरीदने वालोंको प्रेस २) प्रतिशत वार्षिक ब्याज देगा।

(७) उत्तम अर्थभाग (शेयर) खरीदने वालोंको १) प्रतिशत वार्षिक ब्याज देगा।

(८) साधारण और मध्यम अर्थभाग (शेयर) खरीदने वाले व्यक्ति केवल आयके ही भागी होंगे।

(९) प्रेसके अर्थभाग (शेयर) कभी भी किसीको बेचे जा सकते हैं।

हमें आशा एवं विश्वास है कि यह कार्य शीघ्र ही सम्पन्न होगा। आपका सहयोग प्रार्थनीय है। विशेष जानकारीके लिए लिखिये —

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन [शिमला]

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य—

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा इह-लौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०)से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय'के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ३॥) और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक आश्विनके अङ्कसे (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि किसी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक ... समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो वे किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ... स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ३॥) रु० न लेकर ... समाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका ... ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना शेष अङ्कों ... नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका ... रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० ... मंगानेसे एक रुपयेमें चार आने अधिक ... खर्चके बढ़ जावेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी ... मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत ... का 'शिवाङ्क' और विगत चतुर्थ वर्षका ... तथा वर्तमान वर्षका गताङ्क (वसन्त...) अब कार्यालयमें नहीं है, अतः इन अङ्कोंके लिए कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर ... नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट ... लिखना चाहिए। केवल 'नववर्षाङ्क' (यदि वह विशेषाङ्क होगा तो) उसका मूल्य २) है।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको ... भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या ... लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर ... जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानी ... भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास ... पहुँचे तो १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए ... बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जाय...

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य—

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा इह-लौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०)से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय'के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम

(१) 'श्रीस्वाध्याय आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ३।।) और एक प्रतिका १) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके अङ्कसे (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही ... जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक ... समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो ... में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ... स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ३।।) रु० न लेकर ... समाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका ... ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों ... नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य ... रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० ... मंगानेसे उक्त मूल्यमें चार आने अधिक रजि... खर्चके बढ़ जावेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी फा... मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत पंचम... का 'ग्रीष्माङ्क' और विगत चतुर्थ वर्षका 'नववर्षाङ्क' तथा वर्तमान वर्षका गताङ्क (वसन्ता...) अब कार्यालयमें नहीं है, अतः इन अङ्कोंके लिए कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर ... नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्ष... लिखना चाहिए। केवल 'नववर्षाङ्क' (यदि वह ... विशेषाङ्क होगा तो) उसका मूल्य २) ...

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको ... भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तर... लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर ... जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शु... दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानी... भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास ... पहुँचे तो १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहि... बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जाय...

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

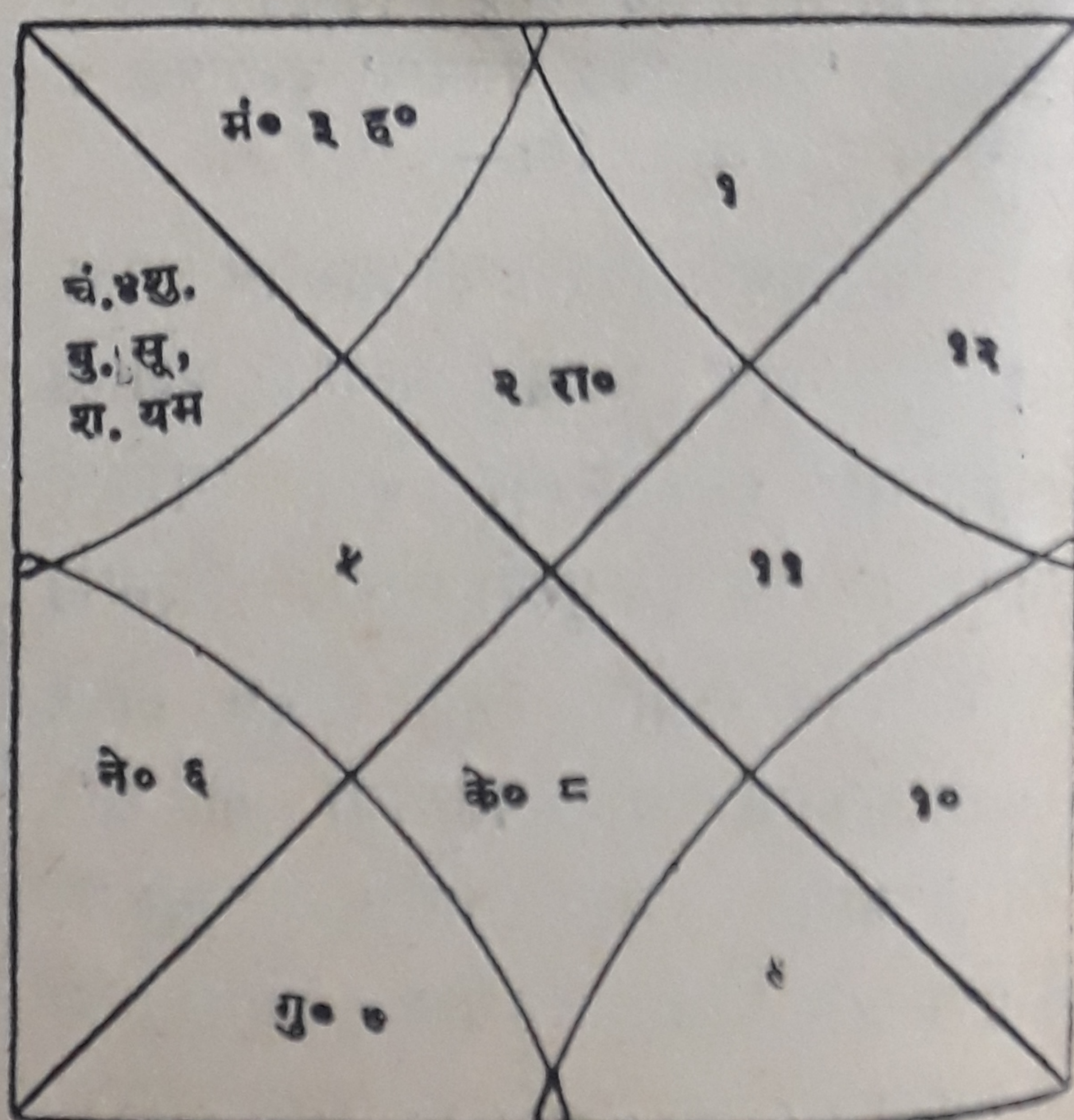
"…………भारतीय जनता के लिए यह ग्रहण अशान्ति का अकाण्ड ताण्डव करानेवाला सिद्ध होगा। राजनैतिक व साम्प्रदायिक समस्या विषम बन कर यत्र-तत्र-सर्वत्र कहीं कम तो **कहीं अधिक रूप में गृह-युद्ध फूट पड़ेगा, इसमें भयंकर अत्याचार; विस्फोट, निर-पराधों और स्त्री तथा बालकों की हत्या एवं जन-धन का संहार होगा।** कृत्रिम एवं प्राकृतिक अग्निकाण्ड अधिक होंगे।…… ………… शासक अधिकारी वर्ग और सेना के सामने बड़ी विषम समस्या उत्पन्न होगी। संसार के राजतंत्रों में पर्याप्त अशान्ति दिखाई देगी। ………… इन ग्रहणों और आगे होनेवाले पंचग्रह-योग, शनि मंगल युद्ध का अनिष्ट परिणाम भारत में सिन्ध, पंजाब, सीमाप्रान्त, काश्मीर, बंगाल आसाम, निजाम-हैदराबाद, गुजरात काठियावाड़ मद्रास, मध्यप्रदेश, ब्रह्मदेश, बम्बई, उड़ीसा, दिल्ली और बिलोचिस्तान में बिशेषरूप से होगा उक्त प्रान्तों में साम्प्रदायिक राजनैतिक आर्थिक तथा सामाजिक समस्या को लेकर अतर्कित उलट फेर और भयंकर क्रांति होगी।" इत्यादि

उक्त अंश इतने स्पष्ट और हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष हैं कि इनके ऊपर भाष्य करके बतलाने की अब आवश्यकता नहीं।

स्वतन्त्र भारत का भविष्य

गताङ्क में हमने लिखा था कि-"सत्ता-ग्रहण करने के लिए १५ अगस्त शुभ नहीं है" इसकी व्यक्तिगत सूचना हमने सम्बन्धित मित्रों एवं नेतृवर्ग तक भी पहुंचाई थी। परिणामस्वरूप १४—१५ अगस्त के सन्धिकाल अर्धरात्र में गुरु-पुष्य योग में सत्ता ग्रहण करने का सुयोग साधा गया। अतः हम तो यही कहेंगे कि इसी गुरुपुष्यामृत योग एवं स्थिर लग्न के साथ लेने की दूरदर्शिता से ही **"आजवृषकर्कट लग्ने रक्षति राहुः समस्तदुरितेभ्यः"** के अनुसार विरोधियों के समस्त सत्ता उलट देने के षड्यंत्र असफल बन कर स्वतंत्रता स्थिर रह सकी है। अधिक श्रावण में इस पञ्चग्रही योग वाले अशुभ दिन के अनिष्ट परिणाम से हम बहुत पहले ही शंकित थे, परन्तु उक्त दिन के मुहूर्त को बदलने में हमारे नेता असमर्थ थे। और उधर भारतीयों के सौभाग्य से सैंकड़ों वर्षों के बाद आए हुए इस स्वतन्त्रता-दिवस के शुभ पर्व-कालका भीषण भविष्य सूचित करके हमने जनता के आनन्दोल्लास में बाधक बनना उचित न समझा। अस्तु, ता० १५ अगस्त के दैनिक 'नवभारत' और 'अर्जुन' के स्वाधीनता-अङ्क में "स्वतन्त्र भारत का भविष्य, स्वराज्य चिर-स्थाई, प्रारम्भ के कुछ वर्ष चिन्तामय, पाकिस्तान से संघर्ष सन् १९५८ के बाद पूर्ण सुख और पूर्ण स्वराज्य" इन शीर्षकों से हमारा एक विस्तृत लेख प्रकाशित हुआ था। प्रेमी पाठकों के लाभार्थ उस लेख का महत्वपूर्ण आवश्यक अंश यहां भी हम दे रहे हैं। उक्त लेख में हमने पाकिस्तान से संघर्ष और गुप्त शत्रुओं के जिस भयंकर षड्यन्त्र की भविष्यवाणी की थी—वह काश्मीर के आक्रमण और दिल्ली के षड्यंत्र ने प्रत्यक्ष सत्य सिद्ध कर दी है।

स्वतन्त्र भारत उपनिवेश का जन्म-लग्न



इस भारतीय उपनिवेश का जन्मलग्न

प्रत्येक विभाग में क्रांतिकारी योजनायें बनेंगी और कई जगह कठोरता से काम लिया जावेगा। कांग्रेसी नेताओं और शासकों की मनोवृत्ति वा नीति में क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा। कई प्रान्तों में विरोधियों की ओर से शासन-शकट के सामने भारी रोड़े अटकाने की कुचेष्टायें की जावेंगी। दिल्ली में जो कुछ हुआ और भारत में सर्वत्र तलाशियों के द्वारा धीरे-धीरे जिन षड्यंत्रों का रहस्योद्घाटन होता जा रहा है, वह इस का प्रत्यक्ष प्रमाण है) किन्तु लग्नेश शुक्र पराक्रम स्थान में सूर्य चन्द्र बुध शनि के साथ पड़ा हुआ अतः आगे राष्ट्रीय सरकार को अधिकांश में सभी वर्ग का सहयोग प्राप्त होगा। अतः आरम्भिक ३ वर्षों की विषम विघ्नबाधाओं को पार करके आगे क्रमशः भारत का भविष्य उज्वल बनेगा।

(२) धनभाव में मंगल हर्शल पड़े हैं, अतः आरम्भ में भारत की आर्थिक स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। सरकार को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। व्ययेश मंगल धन में हर्शल के साथ है, अतः व्यय विशेष होगा और ब्रिटेन पौण्डपावने या स्टर्लिङ्ग के रूप में भारत को पूरा ऋण नहीं चुकायेगा। मंगल हर्शल आगे चलकर आर्थिक गति-रोध उत्पन्न करेंगे। कुछ नये टैक्स भी लगाए जायेंगे। धनस्थान गुरु से दृष्ट है और धनेश पराक्रम में है, अतः भारत भविष्य में अपने उद्योग से आर्थिक स्थिति को सुधार लेगा। गुरु पूंजीवाद को सर्वथा समाप्त होने से बचाये रक्खेगा।

(३) तीसरे स्थान में विशेष क्रांतिकारी योग पड़ा है। ६ ग्रहों की नवम पर पूर्ण दृष्टि है, अतः भारत के उद्योग व्यवसाय यातायात के साधन रेल, तार, डाक, मोटर, विमान, विश्वविद्यालय एवं विदेशी व्यापार में महत्त्वपूर्ण कार्य होंगे। कर्क मकर दोनों जलचर राशियाँ हैं, अतः समुद्री व्यापार में एवं जहाजरानी पर भारत का पूर्ण अधिकार रहेगा। विज्ञान में भारत पर्याप्त उन्नति करेगा। मोटर रेलवे इन्जन और जहाज बनाने के बड़े बड़े कारखाने यहाँ खोले जायेंगे। ३ वर्ष बाद शनि में बुध का अन्तर आने पर भारतीय वैज्ञानिक परमाणु-शक्ति का अनुसन्धान करेंगे और उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिलेगी।

(४) चतुर्थेश सूर्य पराक्रम में है और चलित में सूर्य बुध शुक्र शनि चतुर्थ भाव में गये हैं, अतः खेती बाड़ी तथा भूमि के मामलों में पर्याप्त सुधार होगा। कृषि एवं उपज-वृद्धि के लिये नयी योजनायें बनेंगी, नये बांध नहरें और सड़कों का विस्तार होगा, परन्तु सूर्य शनि योग के कारण आगामी ३ वर्ष तक भारत का कृषि उद्योग पूर्ण रूपेण विकसित व समाधान कारक न हो सकेगा। कहीं अवर्षण, कहीं अतिवर्षण तो कहीं प्रकृति-कोप से फसल में हानि होकर उन्नति में बाधा पड़ती रहेगी। गृह-विभाग यशस्वी होगा। अन्न-संकट अभी दो वर्ष तक नहीं मिटेगा। चोर बाजार रिश्वतखोरी और कण्ठरोध (कण्ट्रोल) का उन्मूलन करने के सफल प्रयत्न होंगे।

(५) पंचमेश बुध पराक्रम में ५ ग्रहों के साथ है, अतः विश्वविद्यालयों की शिक्षा-प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। राष्ट्र भाषा हिन्दी का गौरव बढ़ेगा। सट्टा लाटरी और नाटक सिनेमागृह एवं विलास-सामग्री पर नियंत्रण रखा जावेगा और इन पर नये टैक्स भी लगेंगे।

(६) छठे स्थान में गुरु और षष्ठेश शुक्र पराक्रम में है, अतः भारत की जल स्थल नभ सेना में पर्याप्त सुधार होगा। सैनिक संगठन सुदृढ़ होगा। गुरु गुप्त शत्रु भी उत्पन्न करता है। विदेशी गुप्तचर अधिकतर ब्रिटेन और पाकिस्तान के गुप्तचर भारत को हानि पहुंचाने की ताक में रहेंगे, परन्तु शासक-वर्ग की सतर्कता के कारण वे अपने दुष्प्रयत्न में सफल न हो सकेंगे। गुरु आरम्भ में उत्पात का सूचक भी है। (दिल्ली और काश्मीर में इन गुप्त शत्रुओं द्वारा जो कुछ उत्पात हुआ वह सर्व विदित ही है)।

(७) सप्तमेश धन में है और चलित में

उनका ता० ११ अक्टूबर का पत्र डाक की वर्तमान धांधली के कारण अब एक मास बाद हमें मिला है, श्री व्यास जी का उक्त पत्र पाठकों के लिए रुचिकर एवं महत्त्वपूर्ण होने से हम उसे अविकल रूप में यहाँ दे रहे हैं—

आपने पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके भविष्य पर मेरे विचार जानने चाहे हैं। मैं बहुत समय से गत अगस्त में होनेवाली पञ्चग्रह युति और शनि मंगल के कर्क पर संयोग को बहुत ही चिन्ता और भयका विषय मानता रहा हूँ।

आज तो सारा देश देख रहा है कि १५ अगस्त के आनन्द की मुस्कान अधरों से मिटी भी नहीं थी कि त्रास और विषाद का भीषण वातावरण ही छा गया है। अवश्य ही आपने १५ अगस्त के दिन की कुण्डली पर विस्तृत विचार किया है। दूसरे किसी ज्योतिषी ने इतना विस्तृत सुन्दर विचार किया देखा नहीं है। इस पर मैंने 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक श्री मुकुटबिहारीजी को भी लिखा था कि श्री पं० हरदेव जी मेरे ही परिवार के हैं, इस लिये उनके विचारों में हमारे विचारों के साथ कोई विषमता की आशंका नहीं होती; बात ठीक ही है।

हाँ, तो प्रस्तुत विषयको लीजिये, मैंने 'जयहिन्द' में बतलाया था कि "संघर्ष का आरम्भ साम्प्रदायिकता और देशी राज्योंसे होगा।" अभी देख रहे हैं कि जूनागढ़, हैदराबाद, भोपाल, और त्रावणकोर ये ही आरम्भके कारण बनगये हैं, परन्तु मेरी धारणा यह है कि यह जूनागढ़ और हैदराबाद के काण्ड तो २८ अक्टूबर के बाद ही सुधर जायेंगे, या फिर अविलम्ब सीधा संघर्ष छिड़ जायेगा। आशा तो है कि २८ अक्टूबर के पश्चात् बढ़ना नहीं चाहिए, अन्यथा यह जूनागढ़ के लिए चिन्ता-प्रद ही होगा। किन्तु, आगे सिंह पर शनि के परिवर्तित हो जाने पर अन्तर्राष्ट्रिय घटना-चक्र बड़ी तेजी से पलटने लगेगा। देश के सीमा-प्रान्तों में अन्दर सुलगती रहनेवाली ज्वाला-मुखियां अपना विस्फोट करती दिखाई देंगी। आनेवाले ४-५ मासों में अन्दरूनी तैय्यारियां होंगी। बाहरी वातावरण का लाभ उठाने का यत्न होगा। बाहरी शक्तियों की छोटी मोटी चकमक झड़ जावेगी, उसका भी प्रभाव यहां होगा। विपरीत समुदाय इसमें सम्पर्क साधेगा। इसके अतिरिक्त आन्तरिक कठिनाइयां खाद्य, अर्थ, व्यवसाय और रोगोपद्रवों को बढ़ती रहेगी। मेरी तो यह मान्यता है कि अब भी देशी राज्यों और सम्प्रदायों का संघर्ष व्यापक गम्भीरता लिए बिना न रहेगा। आनेवाले गम्भीर अराजक प्रसंग में संघर्ष का प्रमुख स्थान भारत बनेगा। रूस राह देख रहा है। ईरान, ईराक, अफगान, अरब, ईजिप्ट आदि चतुर्दिक् व्याप्त शासन भारत को आत्मसात करने बढ़ेंगे। उत्तर भारत, पूर्व भारत बंगाल, आसाम, गुजरात और दक्षिण के सागर तट-वर्ती देशों से कभी भी गम्भीरता बढ़ सकती है।

श्री पं० नेहरूजी के ग्रह-योग

इधर पंडित नेहरू जी के ग्रह-योग भी बहुत कठिनाई से निकलने वाले हैं. उनका गुरु पष्ठ चला गया है और मगल में उसी की अन्तदशा गत मई १९४७ से आरम्भ हुई है। उसी समय से उन्हें निरन्तर टकराते रहना पड़ा है। पंडित जी की कुण्डली पर १९३८ में मैंने बहुत विस्तार से पत्रों में चर्चा की थी, तब मैंने लिखा था कि नेहरू जी १९४६ से लेनिन की भांति ऊपर उठेंगे। तब का लिखा पूरा परिचय आश्चर्यजनक सत्य हो गया है। पर अप्रैल १९४८ तक गुरु के कारण उन्हें कभी भी चैन नहीं मिलेगा, और शत्रु तो उन से दाव लगाकर विजय भी नहीं पा सकेंगे, क्योंकि उनका गुरु धनु राशि का ही है और आनेवाला गुरु धनुः पर ही होगा। साथ ही उनकी कुण्डली में शनि सिंह राशि पर है। अतएव सिंह का शनि उनकी शासकीय संघर्ष-शक्ति को बहुत बल प्रदान करेगा। लग्न में कर्क का चलनेवाला शनि उनको कष्ट अशांति और विरोध में उतार सकता है, इस लिये आज उनकी जो मनोदशा है वह स्वाभाविक ही है। बीच में ३-४ मास वे अवश्य संघर्ष

उनका ता०११ अक्टूबर का पत्र डाक की वर्तमान धांधली के कारण अब एक मास बाद हमें मिला है, श्री व्यास जी का उक्त पत्र पाठकों के लिए रुचिकर एवं महत्त्वपूर्ण होने से हम उसे अविकल रूप में यहाँ दे रहे हैं—

आपने पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके भविष्य पर मेरे विचार जानने चाहे हैं। मैं बहुत समय से गत अगस्त में होनेवाली पञ्चग्रह युति और शनि मंगल के कर्क पर संयोग को बहुत ही चिन्ता और भयका विषय मानता रहा हूँ।

आज तो सारा देश देख रहा है कि १५ अगस्त के आनन्द की मुस्कान अधरों से मिटी भी नहीं थी कि त्रास और विषाद का भीषण वातावरण ही छा गया है। अवश्य ही आपने १५ अगस्त के दिन की कुण्डली पर विस्तृत विचार किया है। दूसरे किसी ज्योतिषी ने इतना विस्तृत सुन्दर विचार किया देखा नहीं है। इस पर मैंने 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक श्री मुकुटबिहारीजी को भी लिखा था कि श्री पं० हरदेव जी मेरे ही परिवार के हैं, इस लिये उनके विचारों में हमारे विचारों के साथ कोई विषमता की आशंका नहीं होती; बात ठीक ही है।

हाँ, तो प्रस्तुत विषयको लीजिये, मैंने 'जयहिन्द' में बतलाया था कि "संघर्ष का आरम्भ साम्प्रदायिकता और देशी राज्योंसे होगा।" अभी देख रहे हैं कि जूनागढ़, हैदराबाद, भोपाल, और त्रावणकोर ये ही आरम्भके कारण बनगये हैं, परन्तु मेरी धारणा यह है कि यह जूनागढ़ और हैदराबाद के काण्ड तो २८ अक्टूबर के बाद हो सुधर जायेंगे, या फिर अविलम्ब सीधा संघर्ष छिड़ जायेगा। आशा तो है कि २८ अक्टूबर के पश्चात बढ़ना नहीं चाहिए, अन्यथा यह जूनागढ़ के लिए चिन्ता-प्रद ही होगा। किन्तु, आगे सिंह पर शनि के परिवर्तित हो जाने पर अन्तर्राष्ट्रीय घटना-चक्र बड़ी तेजी से पलटने लगेगा। देश के सीमा-प्रान्तों में अन्दर सुलगती रहनेवाली ज्वाला-मुखियां अपना विस्फोट करती दिखाई देंगी। आनेवाले ४-५ मासों में अन्दरूनी तैय्यारियां होंगी। बाहरी वातावरण का लाभ उठाने का यत्न होगा। बाहरी शक्तियों की छोटी मोटी चकमक झड़ जावेगी, उसका भी प्रभाव यहां होगा। विपरीत समुदाय इसमें सम्पर्क साधेगा। इसके अतिरिक्त आन्तरिक कठिनाइयां खाद्य, अर्थ, व्यवसाय और रोगोपद्रवों की बढ़ती रहेगी। मेरी तो यह मान्यता है कि अब भी देशी राज्यों और सम्प्रदायों का संघर्ष व्यापक गम्भीरता लिए बिना न रहेगा। आनेवाले गम्भीर अराजक प्रसंग में संघर्ष का प्रमुख स्थान भारत बनेगा। रूस राह देख रहा है। ईरान, ईराक, अफगान, अरब, ईजिप्ट आदि चतुर्दिक् व्याप्त शासन भारत को आत्मसात करने बढ़ेंगे। उत्तर भारत, पूर्व भारत बंगाल, आसाम, गुजरात और दक्षिण के सागर तट-वर्ती देशों से कभी भी गम्भीरता बढ़ सकती है।

श्री पं० नेहरूजी के ग्रह-योग

इधर पंडित नेहरू जी के ग्रह-योग भी बहुत कठिनाई से निकलने वाले हैं. उनका गुरु चला गया है और मंगल में उसी की अन्तर्दशा गत मई १९४७ से आरम्भ हुई है। उसी समय से उन्हें निरन्तर टकराते रहना पड़ा है। पंडित जी की कुण्डली पर १९३८ में मैंने बहुत विस्तार से पत्रों में चर्चा की थी, तब मैंने लिखा था कि नेहरू जी १९४६ से लेनिन की भांति ऊपर उठेंगे। तब का लिखा पूरा परिचय आश्चर्यजनक सत्य हो गया है। पर अप्रैल १९४८ तक गुरु के कारण उन्हें कभी भी चैन नहीं मिलेगा, और शत्रु तो उन से दाव लगाकर विजय भी नहीं पा सकेंगे, क्योंकि उनका गुरु धनु राशि का ही है और आनेवाला गुरु धनुः पर हो होगा। साथ ही उनकी कुण्डली में शनि सिंह राशि पर है। अतएव सिंह का शनि उनकी शासकीय संघर्ष-शक्ति को बहुत बल प्रदान करेगा। लग्न में कर्क का चलनेवाला शनि उनको कष्ट में अशांति और विरोध में उतार सकता है, इस लिये आज उनकी जो मनोदशा है वह स्वाभाविक ही है। बीच में ३-४ मास वे अवश्य संघर्ष

त्रैमासिक भविष्यफल

[एक अनुभवी ज्यौतिषी]

कार्तिक शु० १ ता० १३ नवम्बरसे मार्ग० कृष्ण ३० ता० १२ दिसम्बर तक

इस मास में शनि-मंगल-युति (युद्ध) के प्रभाव से संसार में क्रांतिकारी घटनाओं का सूत्रपात होगा। रेलवे आदि यातायात के साधनों में बाधायें और कर्मचारियों में असन्तोष बढ़ेगा। यात्रा और आयात-निर्यात में भारी असुविधा होगी। स्टीमर कम्पनी के शेयरों में तेजी, रुई में ज़बरदस्त घटा-बढ़ी, चांदी में पहले मंदी होकर बाद तेजी तथा सोने में मन्दी का योग है। ता० १६ से २० नवम्बर तक बैंकों और बीमा कम्पनियों के शेयरों में मंदी का योग है। तिल तैल सरसों मूंगफली आदि के भाव में उछाला आवे। मशीनरी का भाव तेज रहे।

मार्ग० शु० १ ता० १३ दिसम्बर से पौष कृ० ३० ता० ११ जनवरी १९४८ तक—

इस मास के आरम्भ में चांदी में मन्दी का योग है। रेलवे स्टीमर बीमा कम्पनियों और तैल कम्पनियों के शेयरों में तेजी की सम्भावना है। इस मास में बाजार भाव में बहुत उथल पुथल होगी। पौष मास में अनेक प्रकार की अप्रिय घटनायें घटेंगी। मध्यप्रान्त दक्षिण भारत और युक्तप्रान्त में षड्यन्त्रों का रहस्योद्घाटन होगा। बाजार भाव में अफवाहों के कारण भारी घबराहट फैलेगी, अतः प्रत्येक व्यापार बहुत सावधानी से करें।

पौष शु० १ ता० १२ जनवरी से माघ कृष्ण ३० ता० १० फरवरी तक—

प्रजा में असन्तोष और किसी अन्तर्राष्ट्रिय-ख्याति-प्राप्त व्यक्ति की मृत्यु होने की सम्भावना दृष्टिगोचर होती है। दक्षिण-भारत गुजरात सिन्ध और बंगाल में अशान्ति, भयंकर शीत, ओले और पर्वतीय प्रदेशों में बर्फ से जनता में बेचैनी रहेगी। राजाओं में असन्तोष, उत्पात। रबर खाण्ड और अन्न के भाव में तेजी। इस मास में सभी क्रूर ग्रह वक्री हैं अतः संसार में दुर्भिक्ष रोग उत्पातादि अशुभ घटनायें अधिक होंगी। भारतीय शासन-सूत्र-सञ्चालकों को बहुत सावधानी से विपक्षियों की गतिविधि का निरीक्षण करते हुए राष्ट्र को आपत्तियों से बचाना चाहिए। ता० ६ फरवरी से मीन का शुक्र चांदी में मन्दी का सूचक है।

क्षमा प्रार्थना

यह अङ्क मेरी अनुपस्थिति में एक अन्य सज्जन के तत्त्वावधान में छपने के कारण शीघ्रता में सुन्दर रूप में न छप सका तथा लेखों का संकलन सम्पादन संशोधन भी इस बार सम्यक् न हो सका। इसका मुझे हार्दिक खेद है। आशा है विद्वान् लेखक एवं सहृदय पाठक विवशता के लिए क्षमा करेंगे।

विनीतः—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

किसीको अच्छा लगे वा न लगे, परन्तु यहाँ प्रियताके लिए कोई स्थान नहीं "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।" [रुचिकर भी हो और साथ ही हितकर भी हो ऐसा वाक्य तो संसारमें दुर्लभ ही है] हमें सत्य-सत्य ही कहना पड़ेगा। हमारी दृष्टि अपनी परली पारकी घटनाको नहीं जान सकती। उसके सम्बन्धमें केवल अनुमान अनुमानाभाससे ही काम लिया जा सकता है। इसी कारण उन बातोंमें यदि ठीक-ठीक मिलान न भी हुआ तो भी वह कोई आश्चर्यका विषय नहीं। होगा तो वही जिसे काल करना चाहता है और करता है। आप उस कालकी कितनी ही निन्दा करिये अथवा स्तुति वह आपकी बातों पर ध्यान नहीं देगा। इस सम्बन्धमें श्री १०८ आचार्य अमृत-वाग्भवजी महाराजकी एक सुन्दर सूक्ति पाठकोंके मनोविनोदनार्थ यहाँ दे रहे हैं—

जगति निजनिजैस्तैर्कर्मभिर्बद्ध सर्वा
वितरतु जनता ते दूषणं भूषणं वा।
तदपि निरलसः स्वं काल ! कार्यं विधत्से
गणयति किमु विद्वान् पामराणां वचांसि ॥

[संसारमें अपने अपने नाना प्रकारके उन उन कर्मोंके बन्धनोंसे सम्पूर्ण जनता बंधी हुई है। हे जगत्सञ्चालक काल! वह परतन्त्र जनता तुम्हारा सुयोग्य शब्दोंसे सत्कार करे अथवा दुष्ट शब्दोंसे तिरस्कार करे, तुम उनसे दूषित वा भूषित नहीं होते हो और नाही तुम उस ओर अपना मन लगाते हो, ठीक ही तो है; क्या पामर लोगोंके बचनोंको विद्वान् कभी भी गिनतीमें लाते हैं ?]

वर्तमान कालके सम्राज्यमें दैवज्ञ दृष्टि जहाँ जहाँ भी पहुंच सकी वहाँ वहाँ सभी जगह यही देखने में आया कि असुरशक्तिसे सम्पन्नलोग अधिक प्रबल हैं। हमारे महार्षियोंने भोगवादको प्रधान मानने वाले सबको असुर कहा है और मोक्षवाद प्रधान मानने वलोंको सुर। बाह्य दृष्टिमें जितने भी शासक पद पर आरूढ दिखाई दे रहे हैं उनमें मोक्षवादको आदर्श मानने वाला कोई भी नहीं दीखता। ऐसी स्थितिमें विजयिनी शक्ति कोई भी हो वह आसुरी ही रहेगी। आसुरी शक्तिसे सुख तथा शान्तिकी समृद्धि की आशा रखना बालूको पीड़कर तेल पानेके बराबर ही है। प्रायः कोई भी संस्था आज मोक्षवाद प्रधान देखनेमें नहीं आती। कदाचित् कोई हुई भी तो उसका राष्ट्र संचालनमें कोई भी अधिकार नहीं माना जाता। उन जैसी संस्थाओंकी सैंकड़ों प्रकारसे हंसी उड़ाई जाती है। इससे स्पष्ट कहना पड़ेगा कि संसार महान विनाशकी ओर जा रहा है। इस विनाशसे रक्षा करने वाला तो धर्म ही है। किन्तु आज धर्मका 'सभ्यजगत्' में कोई स्थान नहीं अस्तु। आभासमात्र शान्तिके लिये जो प्रयत्न हो रहे हैं वे विपरीत हैं, पूर्वकी ओर चलकर पश्चिमके घर जानेके बराबर ही हैं। खगोलके तेजोमय ग्रह भी जो क्रूर हैं उन्हींका विजय घोष अधिकतर दिखाई देता है और भूगोलके तेजस्वीपिण्ड भी अधिकतर क्रूर विचार वाले दिखाई देते हैं। अतः हमें मानना पड़ेगा कि संसार वास्तविक शान्तिसे अभी बहुत दूर है। आगे आने वाले क्रान्तिकाल का विशद रूपसे विवेचन हम गताङ्कमें कर चुके हैं और आगामी 'वसन्ताङ्कमें' नये सं० २००५का भविष्य भी हम विस्तृत रूपमें लिखेंगे ही। यहाँ केवल कुछएक ग्रहयोगोंका शुभाशुभ परिणाम ही ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे हम बतायेंगे।

काश्मीर की समस्या गम्भीर बनेगी

इस समय भारत ही नहीं समस्त संसारका ध्यान काश्मीरकी समस्या पर केन्द्रित है। राष्ट्रसंघ में भारतकी ओरसे काश्मीरकी समस्या रख दी जाने मात्रसे ही जो लोग सन्तोष मान रहे हैं वे भूलमें हैं। अभी ता० ६ जनवरीको मंगल सिंहराशिमें वक्री हुआ है, तथा १ मार्चको कर्कमें (वक्री होकर) शनिसे योग करेगा, अतः ता० १ मार्चसे आगेका समय काश्मीरके लिए विशेष भयप्रद और साधारणतः समस्त भारतके लिए चिन्ताका कारण बनेगा। शनि-मंगल दोनों ही उग्र क्रान्तिकारक ग्रह हैं। रक्तपात लूटमार गृहयुद्ध निरपराधोंकी हत्या अग्निकाण्ड वि-

संयुक्तराष्ट्रसंघ वा सुरक्षापरिषद् विश्व-शान्तिमें असफल सिद्ध होगी ।

संयुक्तराष्ट्रसंघ ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे अभी बालारिष्टयोग ग्रसित है, अतः सुरक्षा-परिषद निर्बलराष्ट्रों की रक्षा एवं विश्व शान्तिमें सफल सिद्ध न होकर 'मत्स्यन्याय' की ही पुष्टि करेगा। निकट भविष्यमें ही संयुक्तराष्ट्रसंघके बड़े-बड़े शक्तिशाली राष्ट्रोंमें मतभेद उग्र होकर यह केवल कागजी संगठन प्रमाणित होगा ।

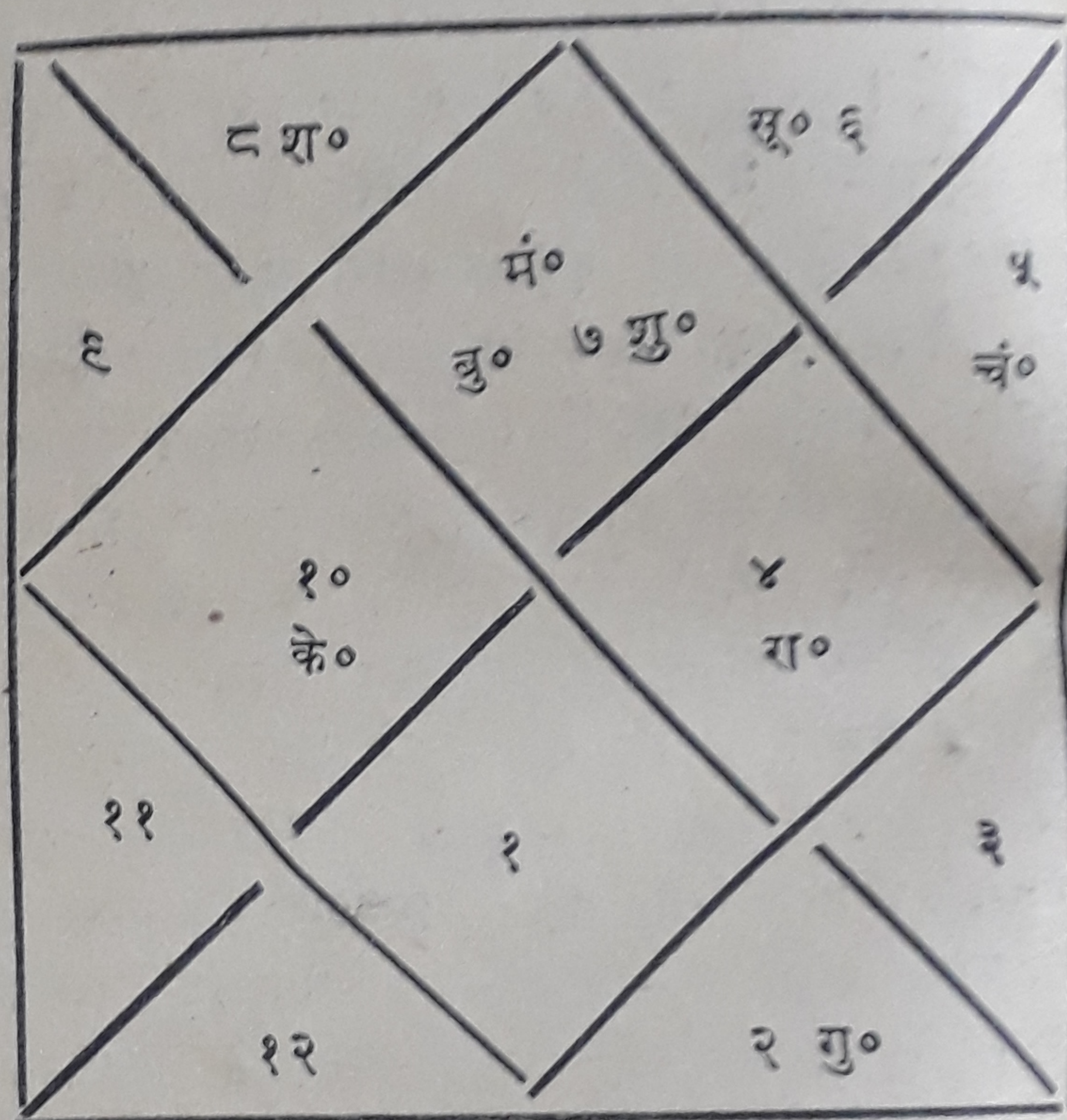
अन्न समस्या—

कण्ट्रोल और राशनप्रणालीके टूट जाने पर तथा आगे गेहूंकी नई फसल सामने होने पर भी हमें अन्नकी समस्या सन्तोषप्रद होने और यथापूर्व समर्घता आनेकी आशा नहीं है। इस समय अन्न रसादि प्रत्येक पदार्थोंमें जो थोड़ी मन्दी दिखाई दे रही है यह अस्थायी या क्षणिक ही समझना चाहिए। शनि मंगल गुरुकी गतिविधि अभी अन्न-समस्याको सन्तोषजनक बनानेमें बाधक है। यह हम १५ अगस्त के समाचार पत्रोंमें 'स्वतन्त्र भारतका भविष्य' शीर्षक लेखमें और 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कमें भी बता चुके हैं।

यवन देशोंमें भीषण विनाश

पाकिस्तानमें भयंकर दुर्भिक्ष पड़ेगा। आगामी ग्रीष्मकालमें वहाँ भूखसे लाखों प्राणी व्याकुल हो कर काल-कवलित होंगे। इससे वहाँ फूट पड़कर गृह-युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो जावेगी। "बुभुक्षितः किन्न करोति पापं क्षीणानराः निष्करुणा भवन्ति" के अनुसार भयंकर अत्याचार और आक्रमणके लिए भी पाकिस्तानी जनता उतारू होगी। परन्तु, इसमें उसीका विनाश होगा, क्योंकि गुरु अनार्य जनताका ही नाश अधिक करवाता है—"देशभङ्गश्च दुर्भिक्षं ग्रीष्मे म्लेच्छजन क्षयः।" कर्क और सिंहका शनि शत्रु राशिका मन एवं आत्मामें है। यह अनार्य जनता (यवनादि) के मन और आत्माको विकृत करके भयंकर कुकृत्योंकी ओर प्रेरित कर विनाशकी ओर ले जाता है; यह हम गत चैत्र मासमें इस वर्षके आरम्भमें ही लिख चुके थे। अब आने वाले सिंहके शनिमें भारत ही नहीं अपितु पाकिस्तान अरब ईरान टर्की आदि यवन साम्राज्योंमें भी जन-धनका भीषण विनाश होगा।

श्री महात्मा गांधीजीका जन्मलग्न



गत वर्ष हमने अपने सं० २००४के 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग'में स्पष्ट लिखा था कि—"श्री महात्मा गांधीजीके लिए शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यकी दृष्टिसे यह वर्ष साधारण ही है। आन्तरिक संघर्ष-जन्य उद्विग्नता व्याप्त रहेगी। भाद्रपदसे आगे स्वास्थ्यके लिए विशेष सावधान रहना चाहिए। वर्षके मध्य एक बार तो अत्यन्त कठोर पग उठानेकी परिस्थिति उत्पन्न हो जायेगी।" इत्यादि। तदनुसार जो परिस्थिति उत्पन्न हुई वह पाठकोंके सामने ही है। इस समय श्री गांधीजीको गुरु महादशामें स्थूल मानसे मंगलका अन्तर प्रारम्भ हो रहा है। गुरु तृतीयेश षष्ठेश हो कर अष्टम पड़ा है और मंगल द्वितीयेश

ज्योतिषशास्त्रकी दृष्टिमें—

१९४८ का व्यापार व्यवसाय

[लेखक—श्रीभोगीलाल जी० सेठ B. A. F. R. Econ. S. लन्दन]

१९४८ का वर्ष देखनेके लिए मुख्य-ग्रहोंका संक्रमण और उनकी पारस्परिक दृष्टिका अध्ययन आवश्यक है। क्योंकि इनका प्रभाव शेयरों और वस्तुओंके मूल्य-ढांचे पर पड़ता है। शनि अश्लेषा नक्षत्र और कर्कराशिमें बुधके प्रभावमें है। यह स्थिति जुलाईके अन्त तक है, अतः इस अवधि तक जनताके लिए शान्ति और सुखकी आशा नहीं की जा सकती, अपितु उसको गम्भीर कठिनाइयाँ और अभूतपूर्व विपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। पर बृहस्पतिका धनुः राशिमें संक्रमण ११ फरवरीको हो रहा है, अतः स्थिति कुछ सरल होकर शान्त-वातावरण हो तथा मुद्रा सुलभ होगी। जुलाईके अन्तिम सप्ताहमें शनि सिंह राशिमें जा रहा है। सिंह-शासकराशि और अग्नितत्वात्मक है, इस लिए वर्षा समय पर होगी। फसल प्रचुर होकर सस्ती आवेंगी। उपभोक्ताओंकी वस्तु कमी समाप्त होगी। शेयर और रुईके भाव गिरेंगे। ये तब तक गिरते जावेंगे जब तक शनि सिंहको नहीं छोड़ेगा। पीतवर्ण की धातुओंका वर्तमान ऊंचा रेट नहीं रहेगा। इन धातुओंका जो अत्यधिक मूल्य चढ़ चुका है यह आगामी कुछ वर्षोंमें ही स्वप्नवत् हो जावेगा और इसका सबसे अधिक प्रभाव सुवर्ण पर पड़ेगा।

राहु मेषमें साल भर रहेगा, अतः संसारके कुछ भागोंमें दुर्भिक्ष जैसी स्थिति रहेगी और अग्निकाण्ड भी होंगे। भारतवर्षमें इसका सर्वाधिक प्रभाव बम्बई और पूर्वीय कठियावाड़में पड़ेगा। बाजारमें इसका सबसे अधिक प्रभाव रुई और शेयर बाजार पर पड़ेगा।

जुलाईसे दिसम्बर तक क्रमशः शनि.राहु और गुरुका परस्पर त्रिकोण दृष्टि-सम्बन्ध व्यापारके लिए लाभ दायक है। इन दिनों केवल बेचानमें रहना उचित न होगा, क्योंकि इस अवधिमें बाजार में तेजीसे तेजी आवेगी। यूरेनस ता० १५ नवम्बर और २६ नवम्बरको क्रमशः गुरु और मंगलके प्रतियोगमें आनेसे नवम्बर मास खराब रहेगा। इससे ज्ञात होता है कि इस वर्षके उत्तरार्धमें मन्दी के बीचमें कुछ तेजी आवेगी। स्टाकएक्सचैंजके लिए उत्तरार्ध विशेष अच्छा है। ता० ६ फरवरीको बृहस्पति मंगलके क्षेत्रको छोड़ कर ता० १० फरवरी को द्विस्वभाव राशिमें जा रहा है, इससे ज्ञात होता है कि बाजारमें तेजी मन्दीके उछाले आवेंगे, पर अन्तमें रुख तेजीका ही रहेगा। परन्तु यूरेनसका प्रभाव और शनि राहुका केन्द्रयोग सालके मध्य तक रहने से तेजीको रोकता है।

शनिके अप्रेलमें वक्री रहनेसे राजनैतिक अव्यवस्था होगी और हड़तालें भी होंगी। इनका बाजार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा, विशेष कर टेक्सटायल सूती मिलें और औद्योगिक चीजों पर। २५ जूनके लगभग गुरु वृश्चिकमें वक्री होकर जा रहा है वहां अनुकूल परिस्थिति होनेसे शेयरोंका साधारण रुख तेजीकी ओर रहेगा।

जनवरी—

वर्षका आरम्भ बड़ी आशा से होता है, पर ६ जनवरीको मंगल वक्री होकर बाजारमें आई हुई तेजीको रोक देता है। रुई और अन्यान्य वस्तुओंके शेयर मासके मध्य तक नीचे जायेंगे। मासके

त्रैमासिक व्यापार-विमर्श

प्रत्येक वस्तुकी अर्धसाप्ताहिक तेजी-मंदी

[लेखक— श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञ]



सौर माघ मास (मकर संक्रान्ति)

(ता० २१ जनवरीसे १३ फरवरी तक)

ता० २१ जनवरी बुधवार प्रातः ७ बजे से ३⅓ दिन में—

यह समय क्रांतिकारक है, व्यापारमें बहुत उलट फेर होगा, अतः बहुत सावधानीसे काम करें।

ता० २४ जनवरी शनिवार दिन ३ बजेसे ३⅓ दिनमें—

वस्तु भावमें एक झमेला मन्दीका आवे, दूसरा ऊफान तेजीका मालूम देगा। ताता-स्टील डिफर्ड शेयर भावमें १५०) २००) रुई रेटमें २०) चांदी भावमें ५) ७) सोना ३) ४) कालीमिर्च २०) ३०) एरंडा मूंगफलीकी कीमतमें ५) १०) टकेकी अचानक मन्दी आवे ऐसा प्रतीत होता है। जब पौईण्ट सस्ताईकी सूचना दे रहा है तुरत वायदा वस्तु बेचनेमें जुट जायें और सम्प्राप्त रियेक्शनमें नफा सुधारते सोदा सुलटते रहें।

ता० २७ जनवरी मंगलवार रात ११ बजेसे ३⅓ दिनमें—

किसी वस्तुके भावमें बड़ी तेजी और किसीमें मोटी मन्दी मालूम देगी। अतः साधारण सौदागर समुदायको चाहिए कि जिस वस्तुका नजराना लगता हो, बादस्तूर तेजी-मन्दी लगा लें। प्राप्त चान्समें सौदा को सुलटानेमें ढील न करें।

ता० ३१ जनवरी शनिवार प्रातः ७ बजेसे ३⅓ दिनमें—

वस्तुके भावमें बड़ी रसा—कसी चले। सम्भव है इस अवसर वायदा एशोशियेशन (मार्केट) बन्द रहेंगे।

ता० ३ फरवरी मंगलवार दिन २ बजेसे ३⅓ दिनमें—

यहाँ चलती अशान्तिमें बीच २ में कभी २ स्थिरता सुनाई देगी, वस्तुके भावमें जबर जंग चलेगा और हाजर वस्तु सम्प्राप्त होनेमें भी परेशानी मालूम देगी। समयकी स्थिति ग्रहसंयोग अनुसार अशान्त रूपमें पाई जाती है, ऐसे समय वायदा बाजारमें सट्टा—फाटका करनेकी सलाह बताना रीति-नीति विरुद्ध है, जैसा उचित समझें वैसा करें।

ता० ६ फरवरी शुक्रवार रात १० बजेसे ३⅓ दिनमें—

वस्तुके भावमें एकाएक मन्दीकी बाढ आ लगे। डिफर्ड शेयर भावमें १५०) २००) चांदी ८) १०) सोना ५) ७) रुई २५) ३०) कालीमिर्च ३०) ४०) एरंडा मूंगफली १०) १५) अलसी २, ३) टकेका क्राईसिस लेवें। ऐसे धमालमें जिधर दाव सूझ पड़े उधर हाथ डाल सोदा सूत कीजिये, समय और चान्सका उपयोग करें।

ता० ९ फरवरी मंगलवार प्रातः ६ बजेसे ३⅓ दिनमें—

वायदा वस्तुके भावमें बड़ा फेर फार पड़ेगा, इस मौके रुई—एरंडा—मूंगफली इकतर्फा चलेगें। सोना चांदी, शेयर डिफर्डके भाव एक जुत्थेमें जानिये। जिस सौदागरको जैसा जंचे—समयके साथ २ सौदा कर लें।

सौर फाल्गुनमास (कुम्भ संक्रान्ति)

(ता० १३ फरवरीसे १३ मार्च तक)

इस मासमें ऐसे संयोग हैं कि हाजर तथा वायदा मार्केटमें जिन २ वस्तुके सोदे होते हैं व्यापारियोंकी मनोवृत्ति भावमें कई प्रकारके दाव पेंच लगाने जुटानेकी चेष्टायें चलेंगी और ताता-स्टील डिफर्ड शेअर भावमें २००) ३००) कालीमिर्च तथा रुई रेट में ४०) ५०) चान्दीके मूल्यमें ८) १०) सोना और अलसी भावमें ३) ४) एरण्डा मूंगफली रेटमें १०) १५) टकेका चढाव उतार होगा। कई बार मन्दी

मानव-मस्तिष्क जो कुछ जानना चाहता है, वह सब कुछ जान लेता है केवल साधना और संयम द्वारा। वह संयमसे उन सभी वस्तुओंका प्रत्यक्ष कर लेता है जो अतीतके गर्भमें हैं, वह उन सभी वस्तुओंका भी दर्शन कर लेता है जो भुगर्भमें अरबों मन मिट्टी और पत्थरोंके नीचे दबी पड़ी हैं। वह वर्तमानका प्रत्यक्ष भी आंखोंसे न करके मस्तिष्क द्वारा ही कर लेनेकी सामर्थ्य रखता है और वह भविष्यकी उन अज्ञात वस्तुओं और स्थितियोंसे भी सम्पर्क कर लेता है जो अभी उत्पन्न और घटित नहीं हुई। वह यहां बैठे बैठे ही तारोंसे बातें करता है और उनका सन्देश देता है अपने जिज्ञासु बन्धुओं को, सावधान करता है अपने भाइयोंको, और बचाता है अपने राष्ट्रको।

भूमिसे ऊपर उठकर तारोंके सम्पर्कसे मानव जो ज्ञान प्राप्त करता है, उसे ही—ज्योतिष कहते हैं। इसमें कल्पना नहीं अनुभूति होती है और वह अनुभूति जो एक नहीं, अनेक संयम एवं मननशील मुनियोंकी प्रतिभाके प्रकाशसे आलोकित होती है, इसी अनुभूतिके संग्रहको ज्योतिष–शास्त्र कहते हैं। आजसे सहस्त्रोंवर्ष पूर्व भारतके मनीषियोंने इसका उपयोग करना प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने विराट् पुरुषके दर्शन किये और पाया कि हम उसके कटि-भागमें स्थित इस भुगोल पर खड़े हैं। हमसे ऊपर हैं भुवर्लोक स्वर्लोकादि और नीचे हैं अतल-आदि सात-सात लोक। इन चौदहों लोकोंमें भूपिण्डके समान अनेकों वे ग्रह-उपग्रह भ्रमण कर रहे हैं, जो इस पृथ्वीसे शत-शतगुण बड़े छोटे हैं और आपसी आकर्षण-विकर्षणसे उन्नत-अवनत, अस्त-व्यस्त, विनष्ट और समृद्ध होते रहते हैं। आपसमें लड़ते तथा दूसरोंको लड़ाते हैं और उसका प्रभाव पिण्डोंमें स्थित प्राणियों पर पड़ता है। वे सब अपने-अपने निश्चित स्थानसे चलकर अपने ही स्थान पर पहुँचनेके प्रयत्नमें हैं। जब वे चले थे, तब सृष्टिका आदि था और जब पहुँचेंगे तब अन्त। हमारी पृथ्वी पर जिन ग्रहोंका विशेष प्रभाव पड़ता है, वे सूर्य आदि नौ ग्रह हैं और मेष आदि १२ राशियां, उनके निश्चित स्थान हैं। ये स्थान ही विराटविश्वपुरुषके अङ्गप्रत्यङ्ग हैं। जिस अंगमें जैसा ग्रह आ जाता है, वह अंग वैसा ही रुग्ण,स्वस्थ, विकृत और सुन्दर हो जाता है। सब कुछ जाननेकी इस विज्ञान-प्रक्रियाको फलित ज्योतिष या प्रत्यक्ष दर्शन कहते हैं।

अब हम यहां नये वर्ष सं० २००५ वि०के फलित-ज्योतिष-विज्ञान सम्बन्धी कुछ अनुभव पाठकोंके सामने रख रहे हैं—

इस नये वर्षमें अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक जगन्नियन्ता जगदीश्वरने हमारे इस भूमण्डलकी व्यवस्था के लिए ग्रहपरिषद्में सर्वाधिकारी या सम्राट्के स्थान पर क्रूरकर्मा शनिदेवको और प्रधान मंत्रीके स्थान पर संहारप्रिय अङ्गारक (मंगल) देवताकी नवनियुक्ति की है। वर्षके सम्राट् वर्षारम्भमें वक्री (विपरीतगामी) हैं और नीचस्थ मंगलके साथ शत्रु राशिमें भी। प्रधानमंत्री मंगल जगत्लग्न कुण्डलीमें व्ययभावका स्वामी होकर नीच राशिका तृतीय भावमें शनिके साथ है, चतुर्थेश व्ययमें राहुसे पीड़ित है। राजा और प्रधान मंत्रीमें पारस्परिक शत्रुता है। वैशाखसे आषाढ़ तक तीन मासोंमें क्रमशः पांच शनि रवि और मंगलवार पड़ रहे हैं, साथ ही भारतमें ग्रस्तोदय सूर्य ग्रहण भी। और गुरुकी फिर वही विनाशोन्मुखी राशित्रयस्पर्शिनी बेढंगी चाल प्रारम्भ है। इन अनिष्ट योगोंका फल अतीन्द्रिय ज्ञानी महर्षियोंने संक्षेपमें यों लिखा है—

(१) राजा शनिका फल—

फलधान्यजलादिकाल्पता जनता तस्कररोगपीडिता।
क्षितिपालगणो रणे रतः क्षितिपालो यदि भानुमत्सुतः॥

(२) मंत्री मंगलका फल—

भुवमवर्षणतः कणनाशनं ज्वलनतस्कररोगगणं पीडितम्।
रणपराः क्षितिपा बुधवन्दने न निरताः सचिवे क्षितिनन्दने॥

(३) एक मासमें पांच शनि रवि और मंगलवार का फल—

शनेश्च पञ्चकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेशभङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता॥

भारतवर्ष

भारतवर्षकी शुभाशुभ स्थिति और भविष्य जाननेके लिए कांग्रेस, भारतीय स्वतंत्र-उपनिवेश, पाकिस्तान और श्री नेहरूजीकी जन्म-कुण्डलियों पर विचार करना आवश्यक है। गत १५ अगस्तको जब भारतीय स्वतंत्र उपनिवेशकी स्थापना हुई थी उसी दिन १५ अगस्तके दैनिक पत्रोंमें हमने भारतके भविष्य पर विस्तृत रूपमें प्रकाश डाला था। स्वतंत्र-उपनिवेशकी जन्म-कुण्डली और वह सम्पूर्ण भविष्य 'श्रीस्वाध्याय' के 'नववर्षाङ्क' (वर्ष ७ अङ्क ४) में भी प्रकाशित हो चुका है। वहां हमने स्पष्ट लिखा था कि "शनिकी महादशामें ही स्वतंत्र उपनिवेशका जन्म हुआ है और अभी २॥ वर्ष तक शनिकी ही अन्तर्दशा रहेगी अतः ये आरम्भिक ३ वर्ष भारतके लिए शुभ आशाप्रद नहीं कहे जा सकते। सरकार एवं जनताके सामने अनेक विषम समस्याएं उत्पन्न हो कर कठिन अग्निपरीक्षाका समय उपस्थित होगा, कांग्रेससे कुछ प्रभावशाली नेताओंका तीव्र मत-भेद रहेगा। गुरु आरम्भमें उत्पात सूचक भी है। विदेशी गुप्तचर भारतको हानि पहुँचानेकी ताकमें रहेंगे। उग्र संघर्षके बाद अन्तमें हैदराबादको भी भारतीय संघके सामने झुकना पड़ेगा।" इत्यादि।

वर्षलग्न जगल्लग्न-कुण्डली, कांग्रेस, भारतीय उपनिवेश और पाकिस्तानकी जन्म-कुण्डलियों पर सम्यक् विचार करनेसे ज्ञात होता है कि यह वर्ष भारतके लिए भी शुभावह नहीं है। सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित सी बनी रहेगी। साम्प्रदायिकता पूर्ण रूपेण दूर नहीं होगी। इस वर्षमें साम्प्रदायिक संघर्षकी अपेक्षा आर्थिक संघर्ष भयानक रूप धारण करेगा। जगल्लग्नसे चतुर्थेश सूर्य १२ वें राहुसे पीड़ित है अतः भारतीय जनताका हृदय और अन्तरात्मा सुख शांतिका अनुभव न करके आतङ्कित सा रहेगा। बेकारी दूर करने और जनता के जीवनस्तरको व्यवस्थित बनानेके लिए सरकारके सामने नईनई कठिनाइयां आएंगी। हड़तालोंका भय अधिक रहेगा। भूमि और सीमा सम्बन्धी विवाद बढ़ेंगे। उत्तर पश्चिम और पूर्वमें पाकिस्तान सीमा पर तथा दक्षिणमें भयंकर रक्तपात होंगे। जनता विवेक खो बैठेगी। वर्षके पूर्वार्धमें भारत सरकारके भरसक प्रयत्न करने पर भी शरणार्थियोंकी स्थिति सन्तोषजनक न हो सकेगी।

भारतीय उपनिवेशका जन्म-लग्न वृषभ है और पाकिस्तानका मेष। भारतीय लग्नका अधिपति शुक्र न्याय एवं शांति प्रिय उदार-चरित कलाकुशल विवेकशील सौम्य ग्रह है और वृषभ राशि भी शुभ है, अतः भारतकी ओर से न तो पहले किसी पर आक्रमण होगा और न वह किसीका अनिष्ट ही सोचेगा। हां, शुक्र नीतिकुशल अवश्य है, अतः भारत आत्मरक्षाके लिए सभी सम्भव प्रयत्न करेगा। पाकिस्तान लग्नका अधिपति मंगल संहारप्रिय षड्यंत्रकारी रक्तपात आतंक और आग लगानेवाला [अंगारक] क्रूरग्रह है, मेषराशि भी क्रूर ही है। भारतसे द्विर्द्वादशयोग भी बन रहा है, अतः भारतसे पाकिस्तानकी स्थायीमैत्री कभी भी सम्भव नहीं। भारतके राजनीतिज्ञ या जनताके जो नेता अपने सहज सौम्य-स्वभावानुसार पाकिस्तानसे मैत्रीकी आशा रखते और हिन्दुओंको पुनः वहां यथापूर्व स्थितिमें देखनेकी कल्पना करते हैं वे भूलमें हैं। हम उन्हें सावधान किये देते हैं कि पाकिस्तान भारतसे मैत्रीके लिए यदि हाथ बढ़ायेगा तो वह भी स्वार्थसिद्धि एवं शक्तिसंचयके लिए दम्भपूर्णनीति ही होगी। मंगलके कारण वह आंतरिक गुप्त संगठन करके किसी समय भी भारतकी शान्तिमें बाधक बन सकता है। वैशाखमें मंगलके सिंहमें जाने पर और आगे श्रावणमें सिंह राशिमें जानेवाला शनि पाकिस्तानको अनेक प्रकारकी आपत्तियों और राजनैतिक उलझनोंमें फंसाने वाला तथा भारतकी राजनीतिको चमकाने वाला सिद्ध होगा। काश्मीर और हैदराबाद की समस्या गम्भीर बनती जायेगी। वैशाखमें काश्मीरकी समस्या कुछ सुलझती प्रतीत होगी, परन्तु शनिके कारण अखण्ड काश्मीरका कुछ अंश

बैशाखसे भाद्रपद तक भयङ्कर गरमी पड़ेगी, अग्निकाण्ड, चोरी लूट खसोट, डाका, हत्याकाण्ड, यातायात दुर्घटनाएं और अचानक मृत्युकी वारदातें अधिक होंगी। बैशाखमें सूर्यग्रहणके बाद भारतके किसी ख्यातिप्राप्त नेताके लिए भी अपघात योग बन रहा है, अतः मेष कन्या मकर राशि और लग्न वाले नेता एवं शासकोंको इस अवधिमें विशेष सावधान एवं सतर्क रहनेकी आवश्यकता है।

इसी अवधिमें विरोधी तत्वोंके द्वारा विषाक्त वातावरण निर्माण किया जायेगा, परिणामस्वरूप कुछ कारखानोंमें हड़ताल और राष्ट्रिय कार्यमें गतिरोध उत्पन्न होता दिखाई देगा। गुरु अष्टममें है और पञ्चमेश बुध नीच राशिमें अतः भारतीय विधान सभाका कार्य पूर्ण हो जाने पर भी जनता उससे पूर्णरूपेण सन्तुष्ट न होगी। कुछ नवीन संशोधन परिवर्द्धन करने पड़ेंगे। वर्षके पूर्वार्धमें नया विधान कार्य रूपमें परिणत नहीं हो सकेगा। प्रान्तोंमें भी कई प्रकारकी वैधानिक समस्याएं गतिरोधका कारण बनेंगी।

धनेश बुध नीचका है अतः आरम्भमें भारतकी आर्थिक स्थिति उत्तम न रहेगी। गुरु दृष्टिके कारण वर्षान्तमें स्थिति सुधरेगी। तीसरे मंगल शनि भारतीय जनताके बल पराक्रम संगठन शक्तिमें वृद्धि करेगा, सैनिक संगठन विशेष रूपसे होगा। चतुर्थ स्थान खेती बाड़ी पैदावार यातायात रेल तार पोस्टल सर्विस और गृह विभागका द्योतक है, चतुर्थेश सूर्य १२वें राहुसे पीड़ित है अतः इस वर्षमें पहली फसल उत्तम न होगी। पूर्व दक्षिण और पश्चिमोत्तरीय सीमा प्रान्तमें दुर्भिक्ष जैसी स्थिति रहेगी। खानोंमें विस्फोट, यातायातमें दुर्घटनाएं और श्रमिक वर्गमें असन्तोष बढ़ेगा। परन्तु चतुर्थ भाव और चतुर्थेश गुरुसे दृष्ट है अतः स्थिति शीघ्र ही सुलझ जायेगी, वर्षके उत्तरार्धमें खेती बाड़ी भूमि उत्पादन एवं निर्माण कार्योंमें महत्वपूर्ण प्रगति होगी। नये नये कारखाने खुलेंगे, ऊसर बञ्जर भूमिको उत्पादन योग्य बनाया जायेगा, नई नहरें, रेल-मार्ग और राजपथ (सड़कें) निर्माणकी योजनाएं बनेंगी, गृह विभाग सक्रिय होगा। पञ्चमेश बुध पंचम भावको उच्च दृष्टिसे देख रहा है अतः शिक्षा और विज्ञानमें पर्याप्त प्रगति होगी, नवीन विश्वविद्यालय महाविद्यालय और अनेक ग्राम्य पाठशालाओंकी स्थापना होगी। सैनिक शिक्षाके साथ ही भारतसे निरक्षरता निवारणका भी सफल प्रयास होगा। षष्ठेश शुक्र लग्नमें है अतः संसार रोगादि बाधाओंसे पीड़ित रहेगा। बड़े बड़े राष्ट्रोंमें स्नेह सद्भावना पूर्णरूपमें न रहकर विद्वेषकी भावना बढ़ती दिखाई देगी। भारतको अपने आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओंसे सतर्क रहना चाहिए।

सप्तमेश मंगल नवमेश दशमेश शनिके साथ तीसरे है अतः संसारकी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। मंगल शनिके कारण पश्चिम उत्तरके शक्तिशाली दो राष्ट्रोंमें सैनिक संगठन और शस्त्र-संवर्द्धनकी प्रतिस्पर्धा संसारके लिए भयका कारण बनेगी। भारतके अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक और व्यापारिक सम्बंध दृढ मैत्रीपूर्ण होंगे। अष्टमेश गुरुका शुक्रसे षडष्टक योग है अतः संसारके किसी महान् राजनीतिज्ञकी आकस्मिक मृत्यु होगी। भारतमें भी किसी लोकप्रिय विशिष्ट महापुरुषके लिए अपघात योग है। गुरु किसी आर्यप्रकृतिके वयोवृद्ध लोकनेता, वैज्ञानिक, विधान शास्त्री या धार्मिक महापुरुषकी मृत्युका सूचक है। भाग्येश शनि पराक्रममें मंगलके साथ है और वर्ष लग्नमें भाग्येश शुक्र भाग्य भावमें ही है अतः इस वर्षमें भारत अपने बल पौरुषसे उज्ज्वल भविष्यका निर्माण करेगा। अनार्योंकी ओरसे डाली जानेवाली सभी प्रकारकी गुप्त एवं प्रकट बाधाएं अन्तमें विफल होंगी। धार्मिक प्रवृत्ति बहुत न्यून होगी। राजनैतिक सैनिक प्रवृत्तियोंकी हलचल अधिक दिखाई देगी। राज्येश शनि नीचस्थ मंगलके साथ है, वर्ष लग्नमें भी राज्येश बुध नीचका है अतः यह वर्ष राजतन्त्रवादी सामन्तशाही लोगों और व्यक्तितन्त्रके लिए अनिष्टप्रद है, भारतके सभी

की अपेक्षा शीतकालमें वर्षा अधिक होगी। संसारके उत्तरीय भागोंमें ठण्डी हवा चलेगी और शीत बहुत पड़ेगी, झील और समुद्रका पानी जम जायेगा। सिन्ध और गंगामें बाढ़ आवेगी। पौष माघमें भयंकर शीत पड़ेगी, प्रजामें शीतरोग निमोनिया आदिसे बहुत कष्ट होगा। पर्वतीय प्रदेशोंमें बर्फ बहुत पड़ेगी। ओले और हिमपातसे भी फसलमें हानि पहुंचेगी।

राष्ट्रके कर्णधार

प्रधानमन्त्री श्रीनेहरूजी—

श्री नेहरूजीको मंगलकी महादशा विगत सं० २००३ सन् १९४६ ई०से प्रारम्भ हुई है, यह ७ वर्षकी महादशा सं० २०१० सन १९५३ तक रहेगी। मंगल केन्द्रत्रिकोणेश (राज्येश पञ्चमेश) होकर पराक्रम भावमें और नवांशलग्नमें भी स्वक्षेत्री है, अतः श्री नेहरूजीके लिए जीवनमें सर्वाधिक महत्त्वशाली राजयोगकारक मंगलकी वर्तमान महादशा ही है। आज से १० वर्ष पूर्व सन् १९३८ में ज्योतिर्विज्ञानाचार्य श्रद्धेय भाई श्री सूर्यनारायणजी व्यासने ठीक ही लिखा था कि "सन् १९४६ से श्री नेहरूजी 'लेनिन' की भांति ऊपर उठेंगे" यह चमत्कारी फल श्री नेहरूजीके लिए दशारम्भके साथ ही प्रारम्भ हो गया है। इस समय गुरुकी अन्तर्दशा चल रही है, गुरु भाग्येश है अतः यह वर्ष भी यश प्रतिष्ठा-वृद्धि एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्तिके लिए महत्त्वशाली रहेगा और देशकी लम्बी यात्रा भी करवायेगा, गुरु शत्रु भावमें कुछ गुप्त शत्रु और विरोधी वातावरण बनाता है, यही गुरु ब्राह्मण या तार्किक बुद्धिवादी लोगोंके द्वारा आपके सिद्धान्त और नीतिमें मतभेद भी उत्पन्न कराता है, किन्तु मंगल केतु इस प्रकारके सभी विरोधी वातावरणको दबाकर आपके प्रभावको बढ़ाने वाले सिद्ध होंगे। वैशाखसे आश्विन तक अनेक प्रकारकी उलझनोंमेंसे राष्ट्रको बचाते हुए आपको महत्वपूर्ण राजनैतिक सफलता प्राप्त होगी। कर्कके शनिमंगलसे (वैशाख तक) काश्मीर और हैदराबादकी समस्या आपके लिए विशेष चिन्ता प्रद रहेंगी। वैशाखमें सिंहका मंगल और आगे श्रावणमें सिंहका शनि आने पर अवश्य ही आपके द्वारा भारतीय राजनीतिका रंग पलटेगा और परिस्थितिमें भी सुधारकी सम्भावना दिखाई देगी। भारतीय संघको एकबार पुनः शक्ति पकड़ने और सुविधा पानेकी आशा हो जायेगी, वह बल अनुभव करेगा, कठोर हाथोंसे स्थितिको दबाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग भी मिलेगा, उसी समय पाकिस्तानको भी परिवर्तित स्थितिके समक्ष नये विचार पर आना पड़ेगा। सिंहका शनि श्री नेहरूजीके जन्मलग्न और चन्द्रमासे धन भावमें आ रहा है, यह सप्तमेश अष्टमेश भी है अतः इस वर्ष पण्डितजीको स्वास्थ्य एवं सुरक्षाकी ओरसे विशेष सतर्क रहना चाहिए। अधिक परिश्रम और राष्ट्रिय चिन्ताके कारण वर्षके उत्तरार्धमें निर्बलता एवं वायुविकारका उद्गम होगा। इसी वर्षमें शनिका अन्तर भी प्रारम्भ हो रहा है, अतः सिंहके शनिमें यान दुर्घटना, किसी अत्यन्त प्रिय सहयोगीका वियोग अथवा किसी गुप्तशत्रु के द्वारा आपको हानि पहुंचनेकी कुचेष्टा भी की जायेगी, परन्तु वर्षलग्न और जगत्लग्न आपके लग्न और राशिसे तृतीय एकादश पड़ रहे हैं अतः आशा है कि इस वर्षमें आप आपत्तरूपी अग्निमेंसे सुवर्णकी भांति चमकते हुए संसारके सामने निकलकर अपने राष्ट्रका अभ्युत्थान करेंगे।

श्री सरदार पटेल—

वर्चस्वमें वृद्धिके योग हैं, आपकी कार्यक्षमता एवं नीतिपटुतासे भारतको विशेष लाभ होगा। सबल हाथोंसे विरोधी शक्तियोंको दबानेमें सफल होंगे। शनि आपका पराक्रम और प्रभाव वृद्धिमें बहुत सहायक है यह प्रजातन्त्र एवं श्रमिकवर्गके महत्त्वको बढ़ाने वाला तथा सामन्तशाहीका विनाशक भी है, अतः सिंहके शनिमें ही आपके द्वारा देशी राज्योंका नाम शेष हो जायेगा। आपके स्वास्थ्यके लिए यह वर्ष उतना उत्तम नहीं है। आकस्मिक रोग सिंहके

प्रकार विश्व शान्ति और युद्धको रोकनेमें असफल सिद्ध हुई, ठीक उसी प्रकार या उससे भी अधिक नपुंसक वर्तमान संयुक्तराष्ट्रसंघ बन जायेगा। काश्मीर फिलस्तीनकी समस्याको सुलझाने और अन्यान्य छोटे बड़े राष्ट्रोंको वास्तविक न्याय दिलानेमें राष्ट्रसंघ सर्वथा असमर्थ रहेगा। शीघ्र ही किसी एकबड़े राष्ट्र (सम्भवतः रूस) का राष्ट्रसंघसे तीव्र मतभेद होकर संघसे अलग हो जानेका अवसर उपस्थित हो जायेगा।

यूरोप

इंगलैण्ड—

जगत्‌लग्न कुण्डलीमें इंग्लैण्डकी राशि १२वें भावमें राहुसे युक्त और शनिसे दृष्ट है, तथा मेषका स्वामी मंगल नीचस्थ होकर शनिसे युति कर रहा है, ये सब योग बृटेनकी राजनैतिक सामाजिक एवं आर्थिक स्थितिके लिए भयावह है। वर्तमान मजदूर गवर्नमेण्टको विरोधी वातावरणमें उलझ कर आन्तरिक संकटका सामना करना पड़ेगा। उपनिवेशोंमें अशान्ति रहेगी। एटली गवर्नमेण्टकी स्थिति वर्षके मध्यमें डांवाडोल हो जायेगी, संकटका सामना करना कठिन होगा। श्रावण भाद्रपदमें भयंकर आंधी या वर्षासे जन-धनकी हानि होगी। किसी महा पुरुषकी मृत्यु भी होगी।

फ्रांस—

फ्रांसकी ग्रहस्थिति इस वर्ष सारे यूरोपके लिए चिन्ताका कारण बनेगी। वहां विद्रोह बढ़ेंगे और गृहयुद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो कर फ्रांसके टुकड़े हो जाना सम्भव है, वह अपनी शक्ति अक्षुण्ण न रख सकेगा। आगामी २॥ वर्ष तक सिंहके शनिमें फ्रांसकी राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति बहुत खराब रहेगी और वहां स्थायी गवर्नमेण्ट भी न बन सकेगी। स्पेनकेलिए वर्षका पूर्वार्ध साधारणतः अच्छा है; उत्तरार्ध फ्रांकोके लिए संकटमय रहेगा। अधिकार या शासनमें निर्बलताके योग बन रहे हैं।

रूस—रशियाकी प्राकृतिक राशि कुम्भ है, अतः शनिके सिंहमें जाने पर रूस अधिक शक्तिशाली बनेगा। अमेरिकासे सम्बन्ध अधिक बिगड़ेंगे। रूसकी परराष्ट्रनीति मध्यपूर्वमें साधारणतः आक्रामक जैसी रहेगी। श्री स्टालिनको स्वास्थ्यकी ओरसे सतर्क रहना चाहिए। गुप्त शत्रुओं द्वारा सर्वोच्च सत्ताके विरुद्ध विद्रोहके षड्यंत्र और श्री स्टालिनके जीवन पर प्रहार की भी सम्भावना है। यूरोपमें एशियाका प्रभाव तेजीसे बढ़ता जायेगा। इटलीके लिए यह वर्ष संकटका है, वहां उपद्रव अधिक होंगे, साम्यवादीदलका प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जायेगा। वर्षारम्भमें ही राजनैतिक अशान्ति विकटरूप धारण करेगी। ग्रीस (यूनान) और फिलस्तीनमें आन्तरिक अशान्ति उग्र होगी। नये नये षड्यन्त्र होंगे और गृहयुद्ध बढ़नेकी सम्भावना है। वैशाखसे आगे आतङ्कवाद प्रबल होगा और इन देशोंमें भयानक सक्रामक रोग भी फैलेगा। यहूदियों और अरबोंमें भयानक युद्धसे जन-धनका भीषण संहार होगा।

एशिया

ईरान ईराक और टर्कीकी राजनैतिक स्थिति अनिश्चित सी रहेगी। आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात अधिक होनेसे भयंकर दुर्भिक्ष और रोगवृद्धि होगी। वैशाखसे भाद्रपद तक महत्वपूर्ण निर्णय और राजनैतिक हलचलें होंगी। एशियाके इस भाग में रशियाका आतङ्क बढ़ता दिखाई देगा। चीन में वैशाखसे ही गृह युद्ध तीव्र होगा। सन्धिके प्रयत्न विफल होंगे। मार्शल च्यांगकाई शेककी गवर्नमेण्टके लिए यह सारावर्ष ही आपत्ति कारक है। बाढ़, अवर्षण गरमी और दुर्भिक्षके कारण भी चीनी जनता को अपार कष्ट होगा। जापानमें आधिभौतिक उत्पातसे भूकम्प बाढ़ आंधी जैसी कई प्राकृतिक आपत्तियां आवेंगी। वर्षारम्भमें ही मजदूरोंमें असन्तोष फैलकर हड़तालकी भयानक स्थिति बनेगी। शांतिकी शर्तें कठोर होंगी। पूर्वार्धमें सम्राट् मिकाडोका महत्त्व बढ़ेगा पर आगे श्रावणसे उन्हें साढ़साती भी प्रारम्भ

प्रकार विश्व शान्ति और युद्धको रोकनेमें असफल सिद्ध हुई, ठीक उसी प्रकार या उससे भी अधिक नपुंसक वर्तमान संयुक्तराष्ट्रसंघ बन जायेगा। काश्मीर फिलस्तीनकी समस्याको सुलझाने और अन्यान्य छोटे बड़े राष्ट्रोंको वास्तविक न्याय दिलानेमें राष्ट्रसंघ सर्वथा असमर्थ रहेगा। शीघ्र ही किसी एकबड़े राष्ट्र (सम्भवतः रूस) का राष्ट्रसंघसे तीव्र मतभेद होकर संघसे अलग हो जानेका अवसर उपस्थित हो जायेगा।

यूरोप

इंगलैण्ड—

जगत्लग्न कुण्डलीमें इंगलैण्डकी राशि १२वें भावमें राहुसे युक्त और शनिसे दृष्ट है, तथा मेषका स्वामी मंगल नीचस्थ होकर शनिसे युति कर रहा है, ये सब योग बृटेनकी राजनैतिक सामाजिक एवं आर्थिक स्थितिके लिए भयावह है। वर्तमान मजदूर गवर्नमेण्टको विरोधी वातावरणमें उलझ कर आन्तरिक संकटका सामना करना पड़ेगा। उपनिवेशोंमें अशान्ति रहेगी। एटली गवर्नमेण्टकी स्थिति वर्षके मध्यमें डांवाडोल हो जायेगी, संकटका सामना करना कठिन होगा। श्रावण भाद्रपदमें भयंकर आंधी या वर्षासे जन-धनकी हानि होगी। किसी महा पुरुषकी मृत्यु भी होगी।

फ्रांस—

फ्रांसकी ग्रहस्थिति इस वर्ष सारे यूरोपके लिए चिन्ताका कारण बनेगी। वहां विद्रोह बढ़ेंगे और गृहयुद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो कर फ्रांसके टुकड़े हो जाना सम्भव है, वह अपनी शक्ति अक्षुण्ण न रख सकेगा। आगामी २॥ वर्ष तक सिंहके शनिमें फ्रांसकी राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति बहुत खराब रहेगी और वहां स्थायी गवर्नमेण्ट भी न बन सकेगी। स्पेनकेलिए वर्षका पूर्वार्ध साधारणतः अच्छा है; उत्तरार्ध फ्रांकोके लिए संकटमय रहेगा। अधिकार या शासनमें निर्बलताके योग बन रहे हैं।

रूस—रशियाकी प्राकृतिक राशि कुम्भ है, अतः शनिके सिंहमें जाने पर रूस अधिक शक्तिशाली बनेगा। अमेरिकासे सम्बन्ध अधिक बिगड़ेंगे। रूसकी पर‍राष्ट्रनीति मध्यपूर्वमें साधारणतः आक्रामक जैसी रहेगी। श्री स्टालिनको स्वास्थ्यकी ओरसे सतर्क रहना चाहिए। गुप्त शत्रुओं द्वारा सर्वोच्च सत्ताके विरुद्ध विद्रोहके षड्यंत्र और श्री स्टालिनके जीवन पर प्रहार की भी सम्भावना है। यूरोपमें एशियाका प्रभाव तेजीसे बढ़ता जायेगा। इटलीके लिए यह वर्ष संकटका है, वहां उपद्रव अधिक होंगे, साम्यवादीदलका प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जायेगा। वर्षारम्भमें ही राजनैतिक अशान्ति विकटरूप धारण करेगी। ग्रीस (यूनान) और फिलस्तीनमें आन्तरिक अशान्ति उग्र होगी। नये नये षड्यन्त्र होंगे और गृहयुद्ध बढ़नेकी सम्भावना है। वैशाखसे आगे आतङ्कवाद प्रबल होगा और इन देशोंमें भयानक सक्रामक रोग भी फैलेगा। यहूदियों और अरबोंमें भयानक युद्धसे जन-धनका भीषण संहार होगा।

एशिया

ईरान ईराक और टर्कीकी राजनैतिक स्थिति अनिश्चित सी रहेगी। आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात अधिक होनेसे भयंकर दुर्भिक्ष और रोगवृद्धि होगी। वैशाखसे भाद्रपद तक महत्वपूर्ण निर्णय और राजनैतिक हलचलें होंगी। एशियाके इस भाग में रशियाका आतङ्क बढ़ता दिखाई देगा। चीन में वैशाखसे ही गृह युद्ध तीव्र होगा। सन्धिके प्रयत्न विफल होंगे। माशल च्यांगकाई शेककी गवर्नमेण्टके लिए यह सारावर्ष ही आपत्ति कारक है। बाढ़, अवर्षण गरमी और दुर्भिक्षके कारण भी चीनी जनता को अपार कष्ट होगा। जापानमें आधिभौतिक उत्पातसे भूकम्प बाढ़ आंधी जैसी कई प्राकृतिक आपत्तियां आवेंगी। वर्षारम्भमें ही मजदूरोंमें असन्तोष फैलकर हड़तालकी भयानक स्थिति बनेगी। शांतिकी शर्तें कठोर होंगी। पूर्वार्धमें सम्राट् मिकाडोका महत्त्व बढ़ेगा पर आगे श्रावणसे उन्हें साढ़साती भी प्रारम्भ

ग्रहण-विवेचन

सूर्य चन्द्रमा ग्रहण और राहु क्या वस्तु है? इससे हमारा क्या सम्बन्ध है?

ग्रहणमें दान जपादिका विशेष महात्म्य और भोजनादिका निषेध क्यों है ?

कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणका विशेष महत्व क्यों माना गया ?

[लेखक— श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

आकाशीय चमत्कारोंमें सूर्यचन्द्रग्रहणका सर्वाधिक महत्व है। इस चमत्कारको देखनेके लिए सभी लोग विशेष रूपसे उत्कण्ठित रहते हैं। यूरोप अमेरिका आदिके कई खगोलज्ञ विद्वान् तो प्रतिवर्ष जहां-जहां खग्रास वा कङ्कण-सूर्यग्रहण होता है वहां-वहां उसी प्रदेश वा महासागरमें बड़े-बड़े दूरवीक्षण यन्त्र (टेलिस्कोप) एवं वेधोपयोगी अन्यान्य यन्त्र-सामग्री लेकर पहुंचते और अन्वेषणके लिए ग्रहणकी सारी स्थितिका चित्र भी लेते हैं। धर्मशास्त्र मन्त्रशास्त्र एवं ज्योतिश्शास्त्रमें भी ग्रहण समयके पर्वकालकी अनेक विशेषताएं लिखी हैं। हमारे प्राचीन भारतवर्षीय महर्षियोंसे लेकर जनसाधारण तक सूर्यचन्द्रग्रहणके सम्बन्धमें क्या धारणा रखते थे, यह हम अपने प्राचीन ग्रन्थों द्वारा भलीभांति बता सकते हैं। आजके सभ्य सुसंस्कृत एवं समुन्नत कहलाने वाले अमेरिका महाद्वीपके अन्वेषक स्पेनके कोलम्बस साहबको प्राचीन समयमें शिर पर पक्षियोंके पङ्ख लगाये हुए, शरीरको जंगली पशुओंके चमड़ेसे छिपाए हुए और गलेमें हड्डियों एवं मुण्डोंको लटकाये हुए, जिस प्रकारके अत्यन्त असभ्य अशिक्षित लोग अमेरिकामें मिले थे, उस प्रकारके लोग हमारे भारतवर्षमें नहीं थे।

जब अमेरिकन लोग ग्रहणको भगवान्‌का कोप मानकर भयसे घबरा जाते थे, उस समय भारतीय लोग ईश्वरीय संकेतसे ग्रहणको महापर्वकाल अनुभव कर जप तपादि अनुष्ठानोंमें लग जाया करते थे। एवं च आकाशीय ग्रहों से भूमण्डलके प्राणिमात्रका घनिष्ठ-सम्बन्ध तथा ग्रह नक्षत्र-पिण्डकी वस्तुस्थिति और गतिको हमारे त्रिकालज्ञ भारतीय महर्षियोंने भलीभांति समझ रक्खा था, अस्तु।

अब हम 'श्रीस्वाध्याय' के विज्ञ पाठकोंको सूर्यचन्द्र-ग्रहणके सम्बन्धमें कुछ ज्ञातव्य महत्त्वपूर्ण बातें बतलायेंगे।

सूर्य

हमारे इस सौरजगत्‌में ग्रहोंमें सबसे प्रधान ग्रह सूर्य ही है। इसीके द्वारा पृथ्वी आदि अनेक ग्रहों और चन्द्रमा आदि उपग्रहों तथा नक्षत्रादिकोंको—जो स्वयं प्रकाशमान् नहीं हैं—प्रकाश और उष्णता मिलती है। सूर्यसिद्धान्त में लिखा है—

तेजसां गोलकः सूर्यो ग्रहर्क्षाण्यम्बुगोलकाः।
प्रभावन्तो हि दृश्यन्ते सूर्यरश्मि प्रदीपिताः॥

सूर्य ही से सम्पूर्ण सृष्टिके अखिल व्यापार निष्पन्न होते हैं। हमारा इससे घनिष्ठ सम्बन्ध है। सूर्य प्रचण्ड उत्तापका एक जाज्ज्वल्यमान् महान् गोल है। उष्णताके अतिरिक्त वह प्रकाश और आकर्षणशक्तिका भी एक बृहत्तेजःपुञ्ज है। सूर्यका आयतन भी इतना बड़ा है कि सबके सब ग्रहों और उपग्रहोंको एकत्रित करनेसे जो कल्पित पिण्ड बनाया जाय तो सूर्य उससे भी पांचसौगुणा अधिक बड़ा ठहरेगा। हमारे इस पृथ्वीमण्डल वा भूगोलके सदृश प्रायः १३ लाख भूगोल सूर्यके उदरमें समा सकते हैं। यह पृथ्वीसे नौ करोड़ तीस लाख मीलकी दूरी पर स्थित है, इसी कारण हमें इतना छोटासा दिखाई देता है। बुध, शुक्र, पृथ्वी, भौम आदि सब ग्रहगण अपनी-अपनी कक्षाओंमें विभिन्न गतिसे गमन करते हुए सूर्यकी परिक्रमा करते हैं। अर्वाचीन ज्योतिश्शास्त्रमें सूर्यको स्थिर माना है, परन्तु यहां हमको

कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणका विशेष महात्म्य

जयसिंहकल्पद्रुम पुरुषार्थचिन्तामणि निर्णयसिन्धु आदि धर्मशास्त्रके निबन्धग्रन्थोंके अनुसार पंजाबके तीर्थोंमें सन्निहित सरस्वती और कुरुक्षेत्रमें स्नानका विशेष महात्म्य है। सन्निहित थानेसर (कुरुक्षेत्र) के पास एक सर है। वामनपुराण अध्याय ४३ के ३५।३६वें श्लोकका यह भावार्थ है कि—'कुरुक्षेत्रका सन्निहित सर ठीक उसी स्थान पर है जहां भगवान्‌ने पहलेपहल ब्रह्माण्डके अण्डसे सूर्यको उत्पन्न किया था।' नारदपुराण उत्तरखण्ड अध्याय ६४के १३ वें श्लोकमें लिखा है कि-ब्रह्माने सन्निहित सर बनाकर सृष्टि उत्पन्न करनेकी इच्छासे वहां तपस्या की। सृष्टिकी रक्षाकी कामनासे विष्णुने वहां तप किया और उसी पवित्र सरोवरमें महादेवजी स्नानकर स्थाणु नामसे प्रसिद्ध हुए। इन प्रमाणोंसे मानवसृष्टि और सूर्यकी उत्पत्तिका सन्निहित सरसे सम्बन्ध बतलाया गया है।

'सरस्वती' थानेसरके पास बहनेवाली एक महा नदी का नाम है। ऋग्वेद ८।३।६, यजु० ३४।११ में इसके महात्म्यका वर्णन है ऋग्वेद ७।९।५।२ के अनुसार यह समुद्र तक जाती थी। परन्तु शतपथब्राह्मण १।३।३।१ से ज्ञात होता है कि ब्राह्मणकालमें हिमालयमें होने वाले एक आग्नेय-उपद्रवसे सूखकर अन्तःसलिला हो गई। "आर्योंका मूलस्थान" नामक पुस्तकमें श्रीयुत पावगीने वेदमन्त्रों, पश्चिमीय विद्वानोंकी दी हुई युक्तियों और विज्ञान द्वारा बड़ी योग्यतासे सिद्ध किया है कि कुरुक्षेत्रमें बहनेवाली सरस्वती नदीके तट पर ही पहले-पहल मनुष्यकी उत्पत्ति हुई है, इस सम्बन्धसे कुरुक्षेत्र संसार भरके लोगोंकी आदि मातृभूमि होनेसे न केवल भारतवासी हिन्दुओं की ही अपितु मनुष्य मात्रके लिए श्रद्धा पूर्वक यात्राका स्थान है।

'कुरुक्षेत्र' यह एक अतिप्राचीन सरोवर है। ऋग्वेद ९।११३।१ मन्त्रमें 'शर्यणवति' यह एक पद आया हैं और ऋग्वेदके सङ्ख्यान ब्राह्मणमें लिखा है कि 'शार्यणवत्' यह कुरुक्षेत्रका तालाब हैं। श्रीयुत वसुका अनुमान है कि ऋग्वेद का "शर्यवत्" ही थानेसरके पासका कुरुक्षेत्र नामका सरोवर है। वामनपुराण ४१।१३ के अनुसार इसी सरोवर पर कुरुने तपस्या करके विष्णु भगवान्‌से यह वर प्राप्त किया था कि "मैंने जहां तक भूमि जोती है, वह सारा प्रान्त पुण्यक्षेत्र बन जाय।" भगवान् उसका तप और साहस देख कर यह बात मान गये। यजुर्वेदके शतपथ ब्राह्मण १४।१।१।२ के अनुसार यह वही पवित्र भूमि है जहां देवताओंने भी यज्ञ किये थे और सामवेदके ताण्ड्य ब्राह्मण २५।१३।३ में तो इसे प्रजापतिकी वेदी भी लिखा है।

सूर्यके साथ सन्निहित, सरस्वती और कुरुक्षेत्रका विशेष वैज्ञानिक सम्बन्ध है, अतः ग्रहणके समय वहां जाने वालों की सूर्यरूप आत्मा एवं चन्द्ररूप मन पर उस देश तथा कालका कोई विशेष प्रभाव पड़ता है। इसी लिये हमारे अतीन्द्रिय ज्ञानी त्रिकालदर्शी महर्षियोंने सूर्यग्रहणमें कुरुक्षेत्र स्नानका विशेष महात्म्य बतलाया है। श्रीमद्भागवतसे ज्ञात होता है कि एकबार सूर्यग्रहणके पर्व पर भगवान् श्री कृष्णचन्द्र भी द्वारिकासे अपने साथियोंके साथ कुरुक्षेत्रमें स्नानार्थ आये थे। उन्होंने कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण स्नानके महत्वका प्रस्ताव यदुवंशियोंकी सभामें यों किया—

बड़ो पर्व रवि-गहन, कहा कहौं तासु बड़ाई।
चलौ सबै कुरुक्षेत्र, तहां मिलि न्हैये जाई॥

चिरविरहिनी जगजननी श्री राधाका अपने प्रियतम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रसे प्रथमबार कुरुक्षेत्रमें ही पुनर्मिलन हुआ था। वे अपनी प्रियसखी ललितासे निम्न हृदयोद्गार प्रकट करती हैं—

प्रियः सोऽयं कृष्णः सहचरि ! कुरुक्षेत्र मिलित—
स्तथाहं सा राधा तदिदमुभयोः सङ्गमसुखम्।
तथाप्यन्तःखेलन्मधुर मुरली पञ्चमजुषे—
मनो मे कालिन्दी पुलिन विपनाय स्पृहयति॥

उक्त सभी प्रमाणोंसे कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण स्नानका वैज्ञानिक महत्व भली भांति सिद्ध हो रहा है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा स्वयं प्रकाशमान् नहीं है। वह हमारी पृथ्वीकी भांति ही ज्योतिर्विहीन है और वास्तवमें उससे प्रकाशका उद्गम नहीं होता। दीपक या सूर्यके प्रतिबिम्बसे जैसे जल राशि या दर्पणमें प्रकाशका भान होता है और ऐसा दिखाई देता है मानों वह प्रकाश सचमुच जल या दर्पणसे ही उत्पन्न

परछाईं प्रकाशपिण्डकी विपरीत दिशामें पड़ना स्वाभाविक ही है। इस नियमसे जब पूर्णिमान्तकालमें सूर्य पृथ्वी और चन्द्रमा तीनों एक ही सीध में रहते हैं तब सूर्य का प्रकाश पृथ्वीके एक पृष्ठ पर पड़नेसे विपरीत दिशा में (चन्द्रमाकी ओर) बहुत बड़ी परछाईं आकाशमें पड़ती है। इस परछाईंको हम सर्वदा नहीं देख सकते; क्योंकि परछाईं चाहे जितनी बड़ी क्यों न हो, जब तक वह किसी पदार्थ पर न पड़ेगी तब तक हम उसे देख न सकेंगे। इस कारण सूर्यकी किरण पड़नेसे पृथ्वीके या चांद के इतर भागकी छाया सर्वदा आकाशमें रहने पर भी हमें नहीं देख पड़ती। जब वह आकाशके किसी बड़े पदार्थके ऊपर पड़ती है तभी हम उसे देख सकते हैं। अतः पूर्णिमान्तकालमें चन्द्रमा जितना इस छाया (भूभावृत्त) में प्रविष्ट होता है; उतना ही भाग कालिमायुक्त दिखाई देता है, जिसे हम ग्रहण कहते हैं। इसी लिए हमारे आचार्योंने लिखा है कि—"छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा" अर्थात् सूर्यग्रहणमें चन्द्रमा सूर्यको आच्छादन करता (ढकता) है और चंद्रमाको पृथ्वीकी छाया ढक देती है। छाया जिस वस्तु पर भी पड़ेगी वह सभी ओरसे समान ही दिखाई देगी; चाहे कहींसे भी देखें। इसी कारण चन्द्रग्रहण सर्वत्र एक जैसा ही दिखाई देता है। किन्तु सूर्यग्रहणमें छाद्यछादक कक्षा भेद होनेसे देशभेदानुसार भिन्न-भिन्न स्थितिमें दिखाई देता है।

हां, तो अब यहां यह प्रश्न हो सकता है कि—जब पृथ्वीकी छाया एवं चन्द्रमा ही ग्रहणके कारण हैं और पूर्णमासी अमावास्याको सूर्य चन्द्र पृथ्वी तीनों एक सीधमें रहते हैं, तब प्रत्येक पूर्णमासी व अमावस्याको ग्रहण क्यों नहीं होते? इसका उत्तर यह है, सुनिये—

चन्द्रकक्षावृत्त और क्रान्तिवृत्तके धरातलोंमें ५ अंशका विक्षेपकोण है। इसीको चन्द्रमाका परम शर कहते हैं (यह आजकल ५ अंश ६ कला है, सिद्धान्तशेखरादि प्राचीन ग्रन्थोंमें ४ अंश ३० कला ही लिखा है) प्रति पूर्णिमाको भूच्छाया और चन्द्रमाका पूर्वापर अन्तर तो शून्य होता है, किन्तु उनका दक्षिणोत्तर अन्तर शून्य नहीं हो पाता; जिससे चन्द्रमा युति या पर्वान्तकालमें बहुधा भूच्छायासे बचकर शरकी दिशामें कभी उत्तरकी ओर तथा कभी दक्षिणकी ओर निकल जाता है अतः ग्रहण नहीं होने पाता। श्रीवराहमिहिराचार्यने बृहत्संहितामें यों लिखा है—

सूर्यात्सप्तमराशौ यदि चोदग्दक्षिणेन नातिगतः।
चन्द्रः पूर्वाभिमुखश्छायामौर्वी तदा विशति ॥

अमावास्याको भी चन्द्रमाकी प्रायः ऐसी ही स्थिति रहती है, इसी कारण प्रत्येक पूर्णिमा और अमावास्याको ग्रहण नहीं होता। किन्तु चन्द्रपातों (या यों कहिये कि राहु केतु स्थानों) की परिस्थिति भेदसे चन्द्र-शर युतिकालमें सदा सामान नहीं रहता। युति (पर्वान्त) कालमें चन्द्रमा और चन्द्रपातोंकी पूर्वापर स्थितिमें जितना सामीप्य होगा उतना ही उस समय चन्द्र-शर न्यून होगा। यदि भूच्छायाबिम्ब और चन्द्रबिम्बकी त्रिज्याओंका योगफल (ज्योतिश्शास्त्रकी परिभाषामें जिसको मानैक्यखण्ड कहते हैं) चन्द्र शरके बराबर हो तो वर्तुल-धर्मानुसार भूछाया और चन्द्रबिम्बका परस्पर स्पर्शमात्र होता है, मानैक्यखण्डसे यदि चन्द्र शर न्यून हो तो जितना ही शर छोटा होता है उतना ही चन्द्रबिम्ब भूछायामें प्रवेश करता है। चन्द्रबिम्बका वह भाग जो भूच्छायामें प्रविष्ट रहता है कालिमायुक्त दीख पड़ता है, इस दृश्यको चन्द्रग्रहण कहते हैं।

युतिकालमें मानैक्यखडकी अपेक्षा चन्द्र शरके न्यून होनेसे ग्रहणका संयोग होता है। भूच्छायाके अर्धव्यासका मध्यममान कलादि ४१.७५ और चन्द्रबिम्बके अर्धव्यासका मध्यममान कलादि १५.६ होता है। अतएव जिस युतिकालमें चन्द्रशर ४१.७५+१५.६=५७.३५ से न्यून हो उस समय ग्रहणका योग उपस्थित होता है, अन्यथा नहीं। इस नियमकी पूर्तिके लिए युतिकाल (अमान्त पूर्णिमान्त) में चन्द्रपात (राहु) से चन्द्रबिम्बका पूर्वापर अन्तर १२ अंशसे अधिक कभी नहीं होना चाहिए।

राहु क्या है?

पुराणोंमें तथा बृहत्संहितामें श्रीवराहमिहिराचार्यने राहुके सम्बन्धमें यों लिखा है—

ग्रहणसे हमारा क्या सम्बन्ध है ?

अब यह बात तो पाश्चात्य विज्ञानसे भी सिद्ध हो चुकी है कि इस सौर जगत्में जितने ग्रह, उपग्रह, तारे आदि हैं उनका परस्पर आकर्षण विकर्षणका सम्बन्ध है। वे सब एक दूसरेसे कुछ लेते देते रहते हैं। पृथ्वीमें जितनी वस्तुएं हैं वे सब चन्द्रज्योति प्रधान एंव सूर्यज्योति प्रधान हैं। जिनमें चन्द्रज्योतिकी प्रधानता है वे सब वृत्त, वनस्पति, लता, औषधि, पशु, पक्षी, मनुष्य स्त्री जातिके हैं और जिनमें सूर्यज्योतिकी प्रधनता हैं, वे सब पुरुष जातिके होते हैं। इन सबके साथ सूर्य और चन्द्रमाका सम्बन्ध हैं। मन चन्द्रमा और बुद्धि सूर्य है। श्रुतिने भी इसका समर्थन किया है — "चन्द्रमा मनसो जातः" तथा "धियो योनः प्रचोदयात्" इसलिए सूर्य और चन्द्रमामें कोई विकार हो अथवा उनके द्वारा होने वाले आकर्षण विकर्षणमें यदि कोई व्यवधान पड़ जाय तो भूमण्डलमें समग्र पदार्थों और प्राणियों पर उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। इसी कारण अन्य पूर्णिमा अमावस्याकी अपेक्षा यह (ग्रहणकी पूर्णिमा अमावस्या) बहुत अनिष्ट हुआ करती हैं। सूर्यग्रहणमें बुद्धि और सूर्यके बीचमें व्यवधान आ जानेके कारण तथा चन्द्रग्रहणमें चन्द्रमा और मनके बीचमें सम्बन्ध-विच्छेद हो जानेके कारण मन एवं बुद्धि विक्षिप्त हो उठते हैं। उस समय यदि उन्हें किसी विशेष शक्तिका आश्रय न मिले तो वे बहुतसे प्रमादके कर्म कर सकते हैं। उन्हें भगवन्नामकी, मन्त्रकी शक्तिका आश्रय देकर अनेकों प्रकारके उत्पात करनेसे बचा लिया जाता है। तीर्थ सेवन और स्नानसे पवित्रताका भाव जागृत रक्खा जाता है। दानसे संकीर्णताका भाव न आने देकर उदारता बनायी रक्खी जाती है और जप ध्यानसे प्रेम भावका अनुभव किया जाना है। उस समयके जप ध्यान दानादिसे भयानक प्रवृत्ति स्वयं ही निवृत्त हो जाती है। इसी कारण ग्रहणमें जप ध्यान दानादिका विशेष महात्म्य लिखा है पाठकोंने देखा होगा कि प्रत्येक पूर्णमासीको समुद्रमें बहुत बाढ़ आती है। इन्हीं तिथियोंमें रोग बढ़ जाते हैं। श्वास-रोगियोंकी स्थिति भयानक हो जाती है। उन्मादग्रस्त पुरुषोंकी प्रकृतिमें सहसा परिवर्तन हो जाता है; इत्यादि कई विचित्र बातें हुआ करती हैं। इस विवेचनसे पाठकगण भलीभांति समझ गये होंगे कि आकाशीय ग्रहों तथा ग्रहणोंके साथ मनुष्य जीवनका कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है।

ग्रहण और ग्रहणके वेधमें भोजनादि करना निषेध क्यों है ?

ग्रहणके समय मन और बुद्धि कुछ चञ्चल, विशृङ्खलसे रहते हैं; क्योंकि उन्हें शक्ति देने वाले चन्द्रमा और सूर्य उस समय ठीक ठीक पूरी शक्ति नहीं देते। मनकी अस्तव्यस्त अवस्थामें अथवा विपण्ण अवस्थामें पाचनशक्ति ठीक-ठीक काम नहीं करती। साथ ही खानपानके जितने पदार्थ हैं उन सब पदार्थों पर भी ग्रहणका पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। समस्त पदार्थोंमें दो प्रकारकी शक्तियां रहती हैं-एक सूर्यकी और दूसर चन्द्रमाकी। किसीमें एककी प्रधानता अधिक होती है तो किसीमें दूसरेकी चन्द्रमा औषधियोंको रस प्रदान करता है (इसी लिए चन्द्रमाका नाम औषधीश भी है— "औषधीशो निशाकरः,) और सूर्य उनमें ज्ञान-शक्ति एवं प्राण-शक्ति भरता है। रसदार फलोंमें चन्द्रमाकी प्रधानता अधिक और सूर्यकी प्रधानता न्यून रहती है— जैसे अंगूरमें जब तक चन्द्रमाका प्राधान्य रहेगा, तब तक वह रसदार अंगूरके रूपमें रहेगा और ज्यों ही उसमें सूर्यका प्राधान्य अधिक हुआ त्यों ही धीरे-धीरे वही अंगूर अपना रूप बदलकर किसमिस या मुनक्काके रूपमें आ जावेगा। उस समय उसमें रसकी प्रधानता नहीं रहती, ज्ञान और बलकी प्रधानता रह जाती है। यदि ग्रहणके समय कोई भी पदार्थ खाया पीया जाय तो प्रत्येक पदार्थका चन्द्रमा और सूर्यके साथ सम्बन्ध होनेके कारण जो उनमें शक्ति आती थी वह नहीं आयेगी और वे नाना प्रकारके विकार उत्पन्न कर देंगे। इसी लिए ग्रहण और ग्रहणके वेधमें भोजनादि करना निषेध किया गया है। इसके अतिरिक्त जब जप, ध्यान, पूजा-पाठ अथवा साधनका समय होता है, तब पेटको हलका रखना पड़ता है। पेट भारी हो जाने पर बहुत-सी नस नाड़ियां खिंच जाती हैं; रक्तकी गति बढ़ जाती है और मन एकाग्रताके साथ भजनमें नहीं लगने पाता। इस कारण भजन आदिकी सुविधाकी दृष्टिसे भी ग्रहणके वेधमें (ग्रहणारम्भसे तीन चार

खण्डग्रास-सूर्यग्रहण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

सं० २००५ बैशाख कृष्ण-अमावस रविवार ता० ९ मई १९४८ ई० को भारतमें खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा। यह ग्रहण अरब और फिलस्तीनके अतिरिक्त सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप, उत्तरी प्रशान्त महासागर और उत्तरीय अमेरिकाके कुछ भागोंमें दिखाई देगा। जापानमें उत्तर अक्षांश ४०।५१ और पूर्व रेखांश १३२।४७ पर जाने वाली रेखास्थित प्रदेशोंमें कुछ क्षणके लिए यह ग्रहण खग्रास दिखाई देगा, तथा मलाया स्याम और कोरियाके कुछ भागोंमें कङ्कणाकृति दिखाई देगा। भारतके मानचित्र में रेखांश ६५ और अक्षांश ३६ से नीचे दक्षिण पूर्वकी ओर अक्षांश ५ रेखांश ९० पर जाने वाली रेखासे पश्चिमकी ओर उज्जैन, इन्दौर, उदयपुर मेवाड़, रतलाम, अहमदाबाद, बड़ौदा, जोधपुर, समस्त सिन्ध, बम्बई और मद्रासप्रान्त, महाराष्ट्र, निजाम स्टेट और पश्चिमी मध्यप्रान्त विदर्भमें यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा, अर्थात् ग्रहण लगा हुआ सूर्य उदय होगा। उक्त ग्रस्तोदय रेखासे पूर्वकी ओर काश्मीर, पूर्वी पश्चिमी पंजाब, दिल्ली, अजमेर, जयपुर युक्तप्रान्त, बङ्गाल, बिहार, आसाम, उड़ीसा, पूर्वी राजपूताना और पूर्वी मध्यप्रान्तमें सूर्योदयके अनन्तर ग्रहण स्पर्श होगा। कुरुक्षेत्र और दिल्लीमें ग्रहण मध्यकाल के समय ६-५१ पर सूर्यबिम्बका दक्षिणकी ओर आधेसे कुछ ही न्यूनभाग काला (कटा) हुआ दिखाई देगा। बम्बईमें आधेसे अधिक और मद्रासमें सूर्य-बिम्बका पौना भाग ग्रसित हुआ स्पष्ट दिखाई देगा।

भारतके कुछ प्रधान नगरोंमें इस ग्रहणका स्पर्श मोक्ष काल स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार निम्न है—

स्टेण्डर्ड टाइम

	स्पर्श	मोक्ष
नगर	घं०-मि०	घं०-मि०
कुरुक्षेत्र	६-०	७-४३
दिल्ली	५-५७	७-४१
सोलन शिमला	६-०	७-४५
पटियाला	६-३	७-४८
अमृतसर	६-२	७-४१
जयपुर	५-५६	७-३८
बड़ौदा	×	७-३२
लखनऊ	५-५४	७-५४
कलकत्ता	५-४३	७-४४
बम्बई	×	७-२६
पूना	×	७-२६
काशी	५-४८	७-४५
नागपुर	५-४३	७-४७
मद्रास	×	७-३७
हैदराबाद दक्षिण	×	७-३०
उज्जैन	×	७-३४
ग्वालियर	५-५५	७-४०
आगरा	५-५४	७-३६

प्रहर पहले) भोजनका निषेध है।

ग्रहणके समय घृत दुग्ध अन्न फलादि पदार्थोंमें कुशा रक्खी जातीं हैं। इसका कारण यह है कि कुशामें एक ऐसी अद्भुत विद्युच्छक्ति है कि उस पर अन्तरिक्ष सम्बन्धी कोई अनिष्ट प्रभाव नहीं पड़ सकता। इसी लिए सब पदार्थों में पहलेसे ही कुशा रख दी जाती है, ताकि ग्रहणके कारण उन पदार्थोंमें कोई विकृति न आने पावे। कुशामें कई अद्भुत गुण हैं, इसके आसन पर बैठे हुए साधक पर बिजलीका कोई प्रभाव नहीं होता, ज्ञानशक्ति बढ़ती है इसी कारण हमारे तत्त्वदर्शी महर्षियोंने कुशाके आसनको विशेष महत्व दिया और सन्ध्या तर्पण हवनादि प्रत्येक कार्यमें कुशाका उपयोग किया है।

—

	स्पर्श	मोक्ष
मथुरा	५-५४	७-४०
कानपुर	५-५५	७-४५
पटना	५-४८	७-४५
बीकानेर	६-१	७-३५
जोधपुर	×	७-३६
अहमदाबाद	×	७-३१

जिन नगरोंके सामने स्पर्श कालके घंटा मिनटोंके नीचे कुछ भी न लिखकर × ऐसा चिन्ह दिया है उन नगरोंमें अस्तोदय होगा, अर्थात् सूर्योदयसे पहले रात्रिमें ग्रहण स्पर्श हो जायेगा, इस लिए केवल मोक्ष काल ही दिया है।

उपरिलिखित स्पर्श मोक्षका सूक्ष्म शुद्ध गणितागत समय मिलानेके लिए पहले अपनी घड़ीको स्थानीय पोस्ट आफिस, रेलवे या रेडियोसे पहले दिन रात्रिको मिला रखें। स्पर्शकालसे पूर्व दूरवीक्षणयन्त्र (टेलिस्कोप) पर काला वस्त्र या काला कांच लगा कर सूर्यबिम्बको देखिए, क्योंकि अच्छे नेत्रोंसे भी स्पर्शके कुछ मिनिट अनन्तर ही प्रायः ग्रास दिखाई देता है और मोक्षके कुछ मिनिट पहले ही सूर्य बिम्बका ग्रस्त भाग दीखना बन्द हो जाता हैं। इसी लिये श्री भास्कराचार्यने लिखा है—

"तेजस्तैक्ष्ण्यात्तीक्ष्णगोर्द्वादशांशो नादेश्योऽतोऽल्प-ग्रहो बुद्धिमद्भिः।"

वेध और स्नानदानादि कृत्य

इस सूर्यग्रहणका वेध पहले दिन वैशाख कृ० १४ शनिवार ता० ८ मई को सायंकाल स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार ६ बजेसे आरम्भ होगा। सूर्यग्रहणका वेध स्पर्शकालसे ४ प्रहर या १२ घण्टे पहले लगता है। बाल वृद्ध और रोगियोंके बिना ग्रहण के वेध (सूतक) में भोजनादि करना निषेध है। ग्रहणके आरम्भमें स्नान, मध्यमें हवन, मध्यके अनन्तर दान और मोक्षके पश्चात् पुनः शुद्ध स्नान करना उचित है। जबतक ग्रहण रहे तब तक जपानुष्ठानादि भगवदाराधन करना चाहिए।

गायत्री मन्त्र तथा अन्य किसी भी मन्त्र स्तोत्र आदि की सिद्ध, प्रयोगारम्भ और दीक्षाके लिये सूर्य ग्रहणका पर्वकाल अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है। शिवार्चनचन्द्रिका रत्नसागर, श्रीगणपतिअथर्वशीर्षादि ग्रन्थोंमें लिखा है—

मन्त्राद्यारम्भणं कुर्यात—ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
सत्तीर्थेऽर्कविधुग्रासे तन्तुदामनपर्वणि ॥
मन्त्रदीक्षां प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन्न शोधयेत्।
सूर्यग्रहणकाले तु नान्यदन्वेषितं भवेत्।
सूर्यग्रहणकालेन समो नान्यः कदाचन ॥
न मासतिथिवारादि शोधनं सूर्यपर्वणि।
"सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा सन्निधौ वा जप्त्वा
सिद्धमन्त्रो भवति ॥"

सूर्यग्रहणका सर्वाधिक महत्व कुरुक्षेत्रमें तो है ही, पर जो सज्जन वहां न पहुंच सके वे समीप के किसी भी पुण्य नदी, सरोवर या स्थानीय कूपोदकसे स्नानादि क्रिया करके पुण्योपार्जन कर सकते हैं। भगवान् व्यासने लिखा है—

सर्वं गंगा समं तोयं सर्वे ब्रह्म समा द्विजाः।
सर्वा भूमिः कुरुक्षेत्रं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥

राशियोंको शुभाशुभ

यह सूर्यगहण भरणी कृत्तिका नक्षत्र और मेष वृषभ कन्या मकर राशि वाले प्राणी तथा देशोंके लिए कष्टप्रद हैं। सिंह तुला धनुः मीन राशिवोंको मध्यम और मिथुन कर्क वृश्चिक कुम्भ राशि वालोंको शुभ फल दायक है। अशुभ फलकारक राशिवाले व्यक्ति ग्रहणका दर्शन न करें। कल्याणार्थ जप यज्ञ दानादि करें।

सूर्यग्रहणका संसार पर प्रभाव

यह सूर्य ग्रहण मेषके राहुमें हो रहा है, अतः संसार दुर्भिक्ष रोग और अनेक प्रकारके उपद्रवोंसे पीड़ित रहेगा यथा—

मेषराशौ यदा राहुः संस्थितः सूर्यचन्द्रयोः।
दैवाद् ग्रहण संयोगा दुर्भिक्षं भवति ध्रुवम् ॥

ब्राह्मण, पुरोहित, सज्जन, साधुपुरुष और साध्वी स्त्रियां, कलिंग, काश्मीर, पांचाल, शूरसेन, काम्बोज, मध्यदेश, म्लेच्छ यवनदेश, और ईशानकोण पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। कपास रुई सूत वस्त्र तिल तैल गुड़ उड़द गेहूं चावल सोना चान्दी प्रवाल मोती सुगंधितपदार्थ और सभी काले रंगकी वस्तुओंका भाव आगामी ६ मासके अन्दर पर्याप्त तेज होगा। जीवनो-

त्रैमासिक व्यापार-विमर्श

[लेखक—श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा 'दैवज्ञ,]

मेष संक्रांति

सौर वैशाख सं० २००५ वि०

(ता० १३ अप्रैल से १२ मई तक)

इस मासमें कई अशुभ योग बन रहे हैं, जब ऐसे संयोग जुटते हैं, हाजर और वायदा बाजारोंमें वस्तुके भाव सम्बन्धी बड़ा चढ़ाव उतार होता आया है। यहां मौजूदा वायदा मार्केटमें प्रधानतः ताता-स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें ३००) ४००) रुई रेटमें ३०) ४०) कालीमिर्चके भावमें ५०) ६०) एरण्डा-मूंगफलीके मूल्यमें ८) १०) चांदीकी कीमतमें ५) ७) सोनेके भावमें ३) और अलसी-हेसियनकी रेटमें २) का रदोबदल होना पाया जाता है। सोदागरों को चाहिये कि पुख्ता होशियारीसे व्यापार करें।

किन तारीखोंमें क्या होगा ?

ता० २३ अप्रैल शुक्रवार सोना चांदी वायदा सोदा बदली का दिन है। साथ ही रुई, चांदी, व सोनाके खड़े सोदाकी क्लेरिंग भरी जायेगी। और शेयर मार्केटमें बदला का समय है।

ता० ३० शुक्रवार अलसी, एरण्डा और मूंगफलीके क्लेरींग का दिन है।

ता० ७ मई शुक्रवार—तिथि क्रमसे बुलियन एक्श्चेंज और चेम्बरमें सोना, चांदी की तेजी मन्दी सही पड़ेगी। वायदा वैशाखी पूनमका चल रहा है। रुईकी क्लेरींग भरी जायेगी। शेयर बाजार में बदलेका दिन है।

वृषभ-संक्रांति

सौर ज्येष्ठ मास सं० २००५ वि०

(ता० १३ मईसे १३ जून तक)

इस मासमें राज-विग्रह बढ़े। भारतमें महाभारत का वक्रतुण्ड (गणेश) बैठे ! किसी बड़ी रियासत का पतन हो। वायदा बाजारोंमें तहलका—सा मच जाये। कई एक एशोशियेशनोंके फाटक बन्द हो जायेंगे। वस्तुओंमें चांदी भावमें मंदीकी बाढ़ आएगी। बादमें रुई भावों पर भी पानी फिर जाये। साथ ही तिलहन बाजार जैसे ऐरंडा, मूंगफली, अलसीके भावमें जबर उलटा-पलटी मालूम देगी। सोना की रेटमें सन-सनाटी छा जायेगी।

किन तारीखोंमें क्या होगा ?

ता० १४ मई शुक्रवार—रुईकी क्लेरींग आज भरी जाती है। डिफर्ड शेअरमें बदलाका दिन।

ता० १५ शनिवार ऐरंडा, अलसी, मूंगफलीका क्लेरिंग दिन है।

ता० २१ शुक्रवार—वायदा वैशाखी पूर्णिमाके सोना चांदीकी तेजी मंदी सही बढ़ेगी।

ता० २२ शनि, सोना, चांदी, का वायदा वैशाखी पूनोंके बदलेका क्लेरिंग दिन है।

ता० २८ शुक्रवार, डिफर्ड शेअरके बदलेका व रुईकी क्लेरींगका दिन है।

ता० ३१ सोमवारको ऐरंडा, मूंगफली, अलसी, की तेजी मंदी सही पड़ेगी।

ता० ५ जून शनिवार, जेठीपूनोंके वायदा सोना, चांदीकी सही आज पड़ेगी।

मिथुन-संक्रान्ति

सौर आषाढ़ मास सं० २००५ वि०

(ता० १४ जूनसे १५ जुलाई तक)

वायदा व्यापारकी आयोजना ग्रहसंयोग और व्यापार व्यवस्था देखते वस्तुओंके भावमें जबर उलटा पलटी होते रफ्तार सस्ताईकी तर्फ रहेगी। ऐसी स्थितिमें ताता स्टील डिफर्ड शेअरके भावमें ४००)

चांदी सोना रुईकी जनरल रुख

[ले०—श्री पं० मंगलेश्वर जी ज्योतिषी]

वैशाख मास

चांदी—वैशाख वदी १।१०।१३।१४ और सुदी में १०-१२ से १४ तक बाजार पर्याप्त मंदा होगा, अतः मन्दीका माथेका व्यापार करें। वदी ४।७।८ और सुदीमें ४ से ७ तक बाजार तेज रहेगा, अतः तेजीका व्यापार करना चाहिए।

सोना—वैशाखवदी ७।८ सुदीमें १।४।५।७।१० १४ तिथियोंमें मारकेटमें मंदीका योग है। वैशाख वदी ५।६।१० सुदीमें ८।११।१२।१३ तिथियोंमें तेजीके योग हैं।

रुई—वैशाख वदी ३-४-७-८-१३-१४ सुदीमें ३ से ७ तक काफी मन्दी है २०) २५) तक घटनेकी सम्भावना है। वदी ११।१२ और सुदी १०।१२।१३ तिथियोंमें काफी तेजी है, अतः तेजीका व्यापार करें।

ज्येष्ठ मास

चांदी—वदी ५।८।६ सुदीमें ४।५।१०।१५ तिथियोंमें मारकेट मन्दा जायेगा। वदी ५।६।१२।१३, सुदी २।६।११।१२ तिथियोंमें एकन्दर बाजार तेजीको ओर जायगा।

सोना—वदी ३।४।६।३० सुदी ४।१०।१५ तिथियोंमें बाजार उथल पुथल होकर रुख मंदा रहेगा। वदी ५।८।१२।१३ सुदी १।५।११ से १४ तक बाजारका रुख एक तर्फा तेजीमें जावेगा।

रुई—वदी ५।८।३० सुदी ३।४।११से१५ तक मंदीका योग है। वदी १०से१३ तक और सुदीमें २।५। ६।१० तिथियोंमें तेजीका योग हैं।

आषाढ़ मास

चांदी—वदी २।३।६ से ११ तक सुदीमें ३।६ से १० तक तेजी। सुदी २ को मन्दी।

सोना—वदी १० या १३ से एक सप्ताह तक मन्दीके योग हैं ५) तक मन्दी होगी। सुदीमें सोनेका बाजार सम रहेगा।

रुई—आषाढ़में रुई १५) २०) मन्दी होगी। वदी ६ या १३ से १५-२० दिन तक रुईमें एक तर्फा मन्दी चलेगी, अतः मन्दीका व्यापार करें।

——

अलसी में तेजी

पाठकगण! ता० २४ अप्रैल ४८ से २५ मई ४८ तक अलसी मार्केट (बम्बई) में घटाबढ़ी होते हुए भावोंमें कमसे कम २ या २॥ टके, ज्यादामें ३।४ टका तेजी आ जानेकी सम्भावना है, अतः खरीदके बेचने की लाइन रखें।

—हरि शंकर शास्त्री ज्यो०

——

परीक्षार्थ-अचूक-चांस

सोना, चांदी, खांड—ता० २३ अप्रैलसे ३० अप्रैलकी दोपहर तक मन्दी।

रुई कालीमिर्च—ता० २३ अप्रैलसे ३० अप्रैल की शाम तक तेज।

गुड़, सरसों, ग्वार—ता० १६ अप्रैलसे २१ अप्रैलकी शाम तक तेज।

—श्री रघुवीरशरण गुप्त

राजाओं पर भी आपत्तियां लाता है। तीस वर्ष पहले सन १९१७ से १९१९ तक शनि सिंहमें रहा था उस समय यूरोपके अनेक राजाओंको इसने आपत्तिग्रस्त बनाया और इस बार कर्कके अन्तमें (सायनमानसे सिंहमें) ही भारतीय राज्यतन्त्रको प्रजातन्त्रमें परिवर्तित कर दिया।

विश्व युद्ध अवश्यम्भावी—

सिंहका शनि भारतको शक्तिशाली बनायेगा। और निजामके व्यक्तितन्त्रको समाप्त करने वाला सिद्ध होगा। हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि सिंहके शनिमें न केवल हैदराबाद और काश्मीरकी समस्या ही विषम बनेगी, अपितु इन आगामी २॥ वर्षोंमें सारे विश्वका वातावरण ही अशान्त संघर्षमय बन कर तीसरा विश्व युद्ध आरम्भ हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। क्योंकि पहले भी जब-जब शनि सिंह राशिमें रहा तब-युद्ध उत्पापादि अशुभ घटनाएं अवश्य घटी हैं। इतिहास इसका साक्षी है। पहले सं० १७४० वि० सन् १६८३ ई० में सिंहके शनिमें औरङ्गजेबकी दक्षिण पर चढ़ाई हुई। फिर सं० १७६७।९८ वि० सन् १७४०।४१ ई० में सिंहके शनि में ही राघोजी भोंसलेका बंगाल पर आक्रमण हुआ। तदनन्तर सं० १८२७।२९ वि० सन् १७७०।७२ ई० में सिंहके शनिमें माधवराव सिन्धियाका हैदरअलीसे युद्ध हुआ। तात्पर्य यह है कि सिंहके शनिमें युद्ध दुर्भिक्ष रोगादिसे प्रजाका नाश, चतुष्पद नाश, आतङ्क,विग्रह और समुद्र तटवर्ती देशों एवं जलमार्गोंमें उत्पात अधिक होते हैं। यथा—

भूम्यां नाशश्चतुष्पाद्‌गजहय वृषभैर्युद्ध दुर्भिक्ष रोगैः
पीड्यन्ते सर्वदेशा उदधिपुरपथे दुर्ग देशेषुभङ्गः।
म्लेच्छाक्रान्तो धान्यभावो धनसुखमवनीशेन्द्र चन्द्रप्रतापः।
सर्वे ते यान्ति काले भ्रमति युगमिदं सिंहगे सूर्यपुत्रे॥

सिंहके शनिमें आरम्भ और अन्तके ६ मास विशेष अनिष्ट फल कारक होते हैं। सिंहका शनि श्रेणि संघर्ष कारक है। मिलके कर्मचारी श्रमिकवर्ग और पूंजीपतियों, स्वामिसेवकोंमें असन्तोषकी वृद्धि हो कर संघर्षकी स्थिति उत्पन्न करेगा। जल वायु एवं अग्निसम्बन्धी उत्पात भी अधिक होंगे।

व्यापार पर प्रभाव—

सिंहके शनिमें प्रत्येक वस्तुओंके भावमें एक बार भारी मंदीका झटका आता है। विशेषकर रुईमें पर्याप्त मंदी आती है। तेजीका धन्धा करने वाले व्यापारी सावधान हो जावें। अन्यथा वे भीषण स्थितिमें फँस जायेंगे। तीसवर्ष पहले सन् १९१८ ई० के सितम्बर मासमें शनि सिंह राशिमें प्रविष्ट हुआ था उस समय ढाई वर्षोंमें बम्बईके रुई वायदा बाजारमें जो भयंकर मन्दी आई—उसका विवरण व्यापारी वर्गके लाभार्थ हम यहां दे रहे हैं—

ता०	मास	सन्	रुईका भाव
८	अगस्त	१९१८	९६०)रु०
१०	अक्टूबर	१९१८	८१५)
३१	,,	१९१८	७१८)
३०	नवम्बर	१९१८	५६०
२८	फरवरी	१९१९	४९८)
१	दिसम्बर	१९२०	३४०)
२२	दिसम्बर	१९२०	३०७)
२१	मार्च	१९२१	२५५)

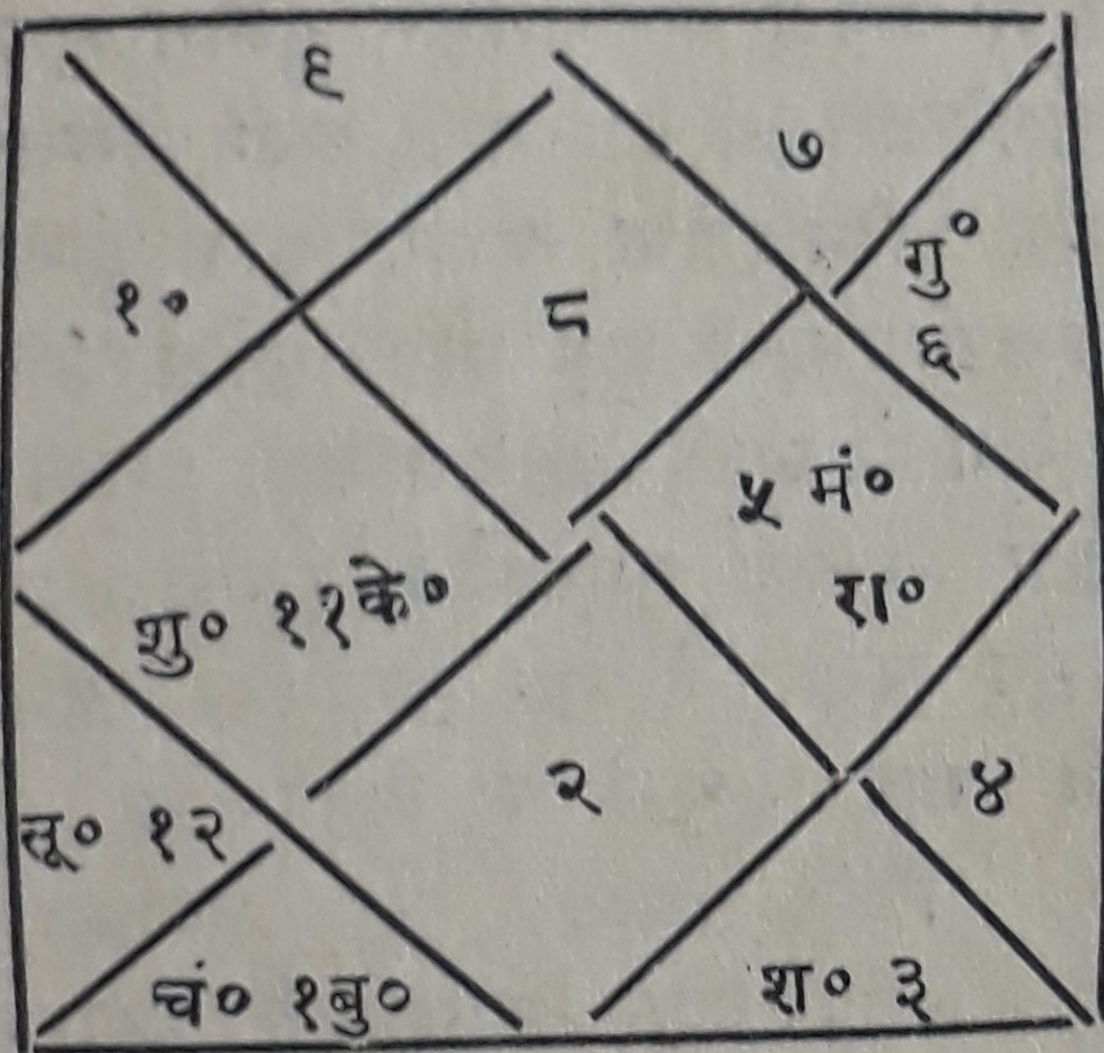
अब इस सिंहके शनिमें प्रत्येक वस्तुके व्यापारमें भयानक क्रांति होगी। विशेष विवरण आगामी अंकमें देंगे।

पाकिस्तानसे संघर्ष

भारत और पाकिस्तानकी कटुता तीव्ररूप धारण करनेकी स्पष्ट सूचना हम गत पौष मासमें 'श्रीस्वाध्याय' के हेमन्ताङ्कमें दे चुके थे और गत 'वसन्ताङ्क' में भी हमने स्पष्ट लिखा था कि—"भारतसे पाकिस्तानकी स्थायीमैत्री कभी भी सम्भव नहीं।.........मंगलके कारण वह आन्तरिक गुप्त संगठन करके किसी समय भी भारतकी शान्तिमें बाधक बन सकता है।" इत्यादि। तदनुसार हमें इस सिंहके शनिमें ही पाकिस्तानसे प्रत्यक्ष संघर्ष दिखाई दे रहा है। आगामी अगस्त मासमें मंगल नेपच्यूनकी युति कन्या राशि में शनि राहुकी कर्तरीमें हो रही है, अतः श्रावणसे आगेका समय और मार्गशीर्ष पौषमें क्रमशः शनिके वक्री होने तथा मङ्गलके मकरमें जाने पर वह समय भारत और पाकिस्तानके लिए भयानक सङ्कटका द्योतक है। वैसे तो

प्रकाशित हो चुकी हैं, एकमें कर्क लग्न और दूसरीमें तुला लग्न है। पहली कर्कलग्न वालीमें जन्म तिथि और सम्वत् का भी बहुत अन्तर है। हमें अभी दिल्लीमें अपने सहृदय सहयोगी ज्योतिविज्ञानके अनन्योपासक श्री० प्रो० बी० सी० गङ्गोली महोदय द्वारा निजामकी जो कुण्डली प्राप्त हुई वह हम यहां दे रहे हैं। श्रीगङ्गोली महोदयको यह कुण्डली निजामके एक पारिवारिक राजज्योतिषी द्वारा प्राप्त हुई, अतः निजामका वृश्चिक-लग्न ही हमें ठीक प्रामाणिक प्रतीत होता है।

जन्म ता० ६ अप्रैल १८८६ ई०



निजामके दशम (राज्य) स्थानमें सिंहका बलवान् मङ्गल, राहु युक्त है। अब २५ जुलाईको मङ्गलके साथ निजामके राज्य भवनमें शनि प्रवेश कर रहा है। यह शनि वर्तमान ६३ वें वर्षका अधिपति होकर अष्टम जा रहा है, अतः यह सिंहका शनि इसी वर्षमें निजामके राज्य-तन्त्रको समाप्त कर देगा। परन्तु मङ्गलराहु भी वहीं हैं अतः निजाम अपने नग्नरूपमें प्रकट होकर भयङ्कर रक्तपात जन-धन-विनाश, सामूहिक विद्रोह, दमन, एवं उग्र-सङ्घर्षके द्वारा आर्य जनताको सन्त्रस्त करके अपना पतन करायेगा। निजामकी गुरु महादशामें शुक्रान्तर २४ मई १९४९ तक रहेगा। शुक्र सप्तमेश अष्टमेश होकर गुरुसे षष्ठ है, यह शुक्र निजामके बुद्धि विवेकको नष्ट कर, भयङ्कर षड्यन्त्रोंमें फंसा पतनकी ओर अग्रसर करता हुआ स्थान-मान भ्रष्ट करवाता है।

मङ्गल-नेपच्यून युति

श्रावण कृष्ण १४ बुधवार ता० ४ अगस्त १९४८ को मङ्गल, इन्द्र या नेपच्यून ग्रहके साथ युति कर रहा है। यह अशुभ युति संसारमें उत्पात युद्ध रोग दुर्भिक्षादिसे जन धनका विनाश करती है। कन्याराशिमें यह युति होनेसे महाराष्ट्र, बरार, निजाम, काठियावाड़, कोल्हापुर और काश्मीर पर इस युतिका अनिष्ट प्रभाव अधिक होगा। राजकीय वातावरण अत्यन्त अशान्त रहेगा। सामन्त, मांडलीक, जागीरदार एवं अधिकारियोंमें असन्तोष बढ़ कर प्रजाका उत्पीड़न होगा। पूंजीपति और श्रमजीवियोंमें श्रेणि-सङ्घर्ष छिड़ जाना सम्भव है। कारखानों या सरकारी विभागों में गतिरोध उत्पन्न होगा। रेल्वे या खानमें कोई भयानक दुर्घटना होगी। मङ्गल-नेपच्यूनका मादक पदार्थोंसे विशेष सम्बन्ध है, अतः युतिके अनन्तर मादक पदार्थोंपर प्रतिबन्ध लगेगा और इनकी उत्पत्ति भी न्यून होगी। यह युति शनि केतुकी कर्तरीमें होने से विशेष अनिष्ट सूचक प्रतीत होती है। तेल या कोयलेकी खानमें भयङ्कर विस्फोट अग्निप्रलय या अतिवृष्टिसे जन-धनका विनाश और रुई कपासके किसी बड़े कारखाने या गोदाममें भयङ्कर अग्निकाण्डका योग है। कन्याराशिमें यह युति होनेसे भारतको दक्षिण प्रदेश और विशेष कर निजामकी ओर से बहुत सतर्क रहना आवश्यक है। भारतके दक्षिण पार्श्वमें अवस्थित फ्रान्सके पाण्डीचेरी एवं चन्द्रनगर गोआदि पुर्तगीज प्रान्तोंसे भी अशान्तिकी सम्भावना है।

काश्मीर–कमीशन

मित्रराष्ट्रीय सुरक्षा-परिषदकी ओरसे प्रेषित काश्मीर-कमीशन आषाढ शु० ४ (रिक्तातिथि) शनिवार ता० १० जुलाई १९४८को कराचीसे वायुयान द्वारा प्रथमबार मध्याह्न १२–३० पर कन्या लग्नमें भारतकी राजधानी नई-दिल्लीमें पहुँचा।

जटिल समस्याओंको सुलझाने और वास्तविक न्याय दिलानेवाला स्थान कुण्डलीमें पञ्चम माना गया है और आर्य नीतिसे निष्पक्ष न्याय करने वाला ग्रह गुरु (बृहस्पति) माना जाता है। इस कुण्डलीमें पञ्चमेश शनि शत्रु राशि में निर्बल है और २५ जुलाईको ही यह १२वें स्थान सिंहमें

चांदी सोनाकी तेजी-मन्दी पर अनुभूत विचार

[लेखक — श्री पं० श्रीधरजी शर्मा शास्त्री ज्यौतिषाचार्य]

श्रावण मास

चांदी—श्रावण बदी १से ३ तक अन्त में मन्दी का बाजार बन्द हुआ करेगा । बेचकर खरीदो । ५मीसे ८ मीं तक तेजीमें खरीद कर बेच देना । हर रुके भावमें तथा मन्दीके रियक्शनमें माल खरीद कर बढ़े भावोंमें बेच कर लाभके साथ सौदा पलट लेना चाहिये । एकादशी तक भावोंमें समानतासी चलती रहेगी । द्वादशीसे अमावस्या तक जनरल रूपमें मन्दी चलती रहेगी । परन्तु इस अवधिके बीचमें १३ मंगलवारको मोटी घटा बढ़ीसे तेजी आनेका योग बनाता है ।

श्रावण शुदीमें १ शुक्रवारको १० बजे पहले माल लेकर तीजको ३-३॥ बजे तक आनेवाली तेजीमें बेच डालो । बेचनेमें लाभ होगा । ४—५को दो दिन समान भाव पड़ा रहेगा । ६को १ बजेसे पुनः तेजीका योग होगा । खरीदकर तेजीके आनेकी प्रतीक्षा करो । ७-८ बुध बृहस्पतिको दिन भर तेजी चलते हुए अन्तमें बन्द घण्टी पर कुछ न कुछ मुलायमी और मन्दीका रुख अवश्य होगा । नवमीसे एकादशी तक खरीदका मौका अवश्य हाथ आयेगा । द्वादशीको २॥ बजे पीछे तेजी चलेगी । १३को दिन भर तेजी रहकर १४-से पूर्णमासी तक मन्दीकी जीतका अवसर हाथ आयेगा ।

सोनामें श्रावण बदीका पक्ष कुछ मन्दी कारक होगा, तो सुदीका पक्ष मन्दीसे द्विगुणित तेजी कारक होगा । यदि यह मन्दी ३)टके की आयेगी तो तेजी ६) टकोंकी होंगी । फिर भी यह 'तिथियां संक्षिप्त रूपमें इस प्रकार तेजी मन्दी कारक होगी । तेजी कारक बदी पक्ष की तिथियां-६, ८, १३, १४ सुदीमें ३, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, हैं ।

भाद्रपद मास

चांदी—वदी १ और २ को तेजी आकर परिणाम मंदीका रहेगा । ४ सोमसे ५ बुध तक खुले भावोंसे नतीजा प्रति दिन तेजींका हुआ करेगा । ६-७ को समान-भावसे ८ से ११ तक ४) ५) टकोंका हेरफेर होकर अचानक मंदी आनेकी सम्भावना है। १२।१३ को खरीदकर बढ़ी हुई तेजीमें बेचनेसे हाथकी हाथ लाभ मिलेगा । १४ अमावस्याको दुतरफा घटाबढ़ीका बाजार होकर मंदीका अन्त में परिणाम होगा ।

सुदीमें १ से ४ तक प्रतिदिन पहले खरीदकर बढ़ी तेजीमें बेच डालो । ति० १ से ४ तक तेजी रहेगी ।

पंचमीको दिनभर तेजी रहकर ३ बजे बादमें मंदी होगी । ७ से ६ तक पुनः लगातार तेजी रहेगी । १०-११ को समान भावसे मंदी रहकर एकादशी मंगलबारसे १३ तक पुनः तेजी रहेगी । १४-१५ को तेजीसे परिणाम मंदी का होगा ।

सोना—जनरलरूपमें सोनेका भाव तेजीका ही होगा । तेज तिथि-बदीमें ५,७,८,१२,१३,३०। सुदीमें १,४,६,८, ६,११,१३ है । मन्दी तिथि बदीमें २,४, ५ कुछ, ११,१४, सुदी ३,५,७,११,१४ हैं ।

(पृष्ठ ६४ का शेष)

(२) गर्भाधान काल और जन्मकालके अन्तर्गत अधिकमास होनेसे गर्भाधान तिथिका साधन किस प्रकार होगा ?

(३) गर्भाधानेष्टकाल किस प्रकार निकालना चाहिये ?

(४) नित्यानन्दके वाक्यानुसार गर्भेष्ट अहर्गणको मुख्य मान कर तिथि मानी जावें ? अथवा गर्भाधान तिथिको मुख्य मानकर गर्भेष्ट अहर्गणको माना जावें ?

आशा है ज्योतिर्विद् महानुभाव एक विद्यार्थीकी उक्त शंकाओंका निवारण करनेकी कृपा करेंगे ।

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषय का अनुपम पत्र है।... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है.......।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी महोदय—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।...... मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ........।

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला।.......इस पत्र और इसके संचालक मण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी........।

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी शिक्षामन्त्री युक्तप्रांत—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' के पंचम वर्ष का प्रथमांक बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टि से देखें वह मुग्धकर हैं। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय हैं।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"........'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।........"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।.........यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र हैं। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"....वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।........"

श्री डा० रामकुमार वर्माजी—"........'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय'-के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।........"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी)—"........'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।......प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्म प्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।......आपने 'स्वाध्याय' निकालकर हिंदीके एक विशेष अभावकी पूर्त्ति की है, इसमें संदेह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर—"....'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म'में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारत के अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्‌गार

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषय का अनुपम पत्र है।... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है........।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी महोदय—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।...... मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ........।

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला।........इस पत्र और इसके संचालक मण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी........।

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी शिक्षामन्त्री युक्तप्रांत—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' के पंचम वर्ष का प्रथमांक बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टि से देखें वह मुग्धकर हैं। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय हैं।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"........'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।........"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।........यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र हैं। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"... वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।........"

श्री डा० रामकुमार वर्माजी—"........'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय'-के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।........"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी)—"........'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।......प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्म प्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।......आपने 'स्वाध्याय' निकालकर हिंदीके एक विशेष अभावकी पूर्त्ति की है, इसमें संदेह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर—"....'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म'में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारत के अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्‌धृत नहीं हो सकीं।

مکہ مسولیہ

بملاحظہ جناب میاں صاحب ای گدری

ॐ श्री गणेशाय नमः

हरड ४८ टंक। चित्ता ४८। एला ८ तज। ८ पत्र
ज ८ नागकेमा घा ८ टंक। सुंठ ४ पिप्पली टंक ४
मिरच ४ पिप्पलामूल ४ टंक। मिठा तेलीया टं ४
नागकेसर टंक ४ संभालू बीज टंक ८ गंध
कच्चा बलासर टंक ८ पारा टंक ८ सर्व वस्तु नास
समगुड॥ सर्ववस्तु टं २१६ सर्व वस्तु ८८४
तोले १२ सेर दो। रहुई गुड सेर १२